बेहतर कौन ?

(मअ़ 51 दिलचस्प ह़िकायात)

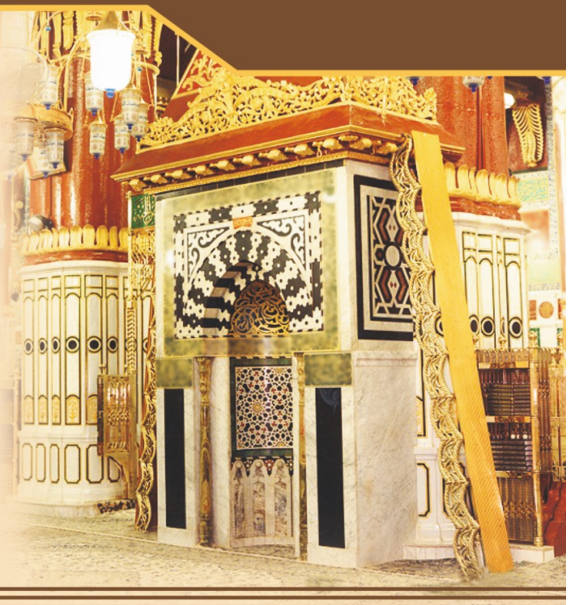

BEHTAR KAUN ? (HINDI)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ص ٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया) ।

(تاریخ دمشق لابن عَساکِر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**बेहतर कौन**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ژ	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ز
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात
MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

बेहतर कौन ?[1]

येह किताब (139 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ कर अपने किरदार को मज़ीद बेहतर करने की तदाबीर कीजिये ।

हि़कायत : 1 फ़िरिश्तों की इमामत

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़फ़्स बिन अ़ब्दुल्लाह رَحِمَهُ الله का बयान है कि मैं ने इमामुल मुह़द्दिसीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़ुरआ़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه को उन की वफ़ात के बा'द ख़्वाब में देखा कि वोह पहले आस्मान पर फ़िरिश्तों को नमाज़ पढ़ा रहे हैं । मैं ने दरयाफ़्त किया : ऐ अबू ज़ुरआ़ ! आप को येह ए'ज़ाज़ो इकराम क्यूंकर मिला है ? उन्हों ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने अपने हाथ से दस लाख ह़दीसें लिखी हैं और हर ह़दीस में "عَنِ النَّبِی" के बा'द "صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم" लिखा है और तुम जानते हो कि नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि जो मुसलमान एक मरतबा मुझ पर दुरूद शरीफ़ भेजता है तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है ।

(شرح الصدور، باب فی نبذ من اخبار من رأی الموتی فی منامه......الخ، ص ۲۹٤ ملخصاً)

मदीना

[1].....इस किताब का येह नाम शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने रखा है और दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत के इस्लामी भाई ने शरई तफ़्तीश फ़रमाई है ।

(1) सब से बेहतर वोह जो खाना खिलाए

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है : خِيَارُكُمْ مَنْ اَطْعَمَ الطَّعَامَ وَرَدَّ السَّلَامَ या'नी तुम सब में बेहतर वोह है जो खाना खिलाए और सलाम का जवाब दे।

(مسند احمد،۹/۲٤۰حديث:۲۳۹۸۱)

ह़ज़रते **अ़ल्लामा** अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : खाना खिलाना भाइयों, पड़ोसियों और गुरबा व मसाकीन सब को शामिल है। (فيض القدير،۳/ ٦٦۲تحت الحديث:٤۱۰۳)

जन्नतियों का काम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सूरतुद्दह्र की आयत नम्बर 8 में जन्नतियों का एक वस्फ़ येह भी बयान किया गया है :

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝۸ (پ۲۹،الدهر:۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर को।*

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस आयत के तह़्त लिखते हैं : या'नी ऐसी ह़ालत में जब कि खुद उन्हें खाने की ह़ाजत व ख़्वाहिश हो और बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना लिये हैं कि **अल्लाह** तआ़ला की मह़ब्बत में खिलाते हैं। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 1073)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 2 कभी गोश्त न चखा

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़त्बतुल ग़ुलाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को सात साल तक गोश्त की ख़्वाहिश रही। एक रोज़ इरशाद फ़रमाया : मुझे अपने नफ़्स से ह़या आई कि मैं 7 साल से मुसलसल इसे गोश्त खाने से रोक रहा हूं, चुनान्चे, मैं ने रोटी और गोश्त का टुकड़ा ख़रीदा और उसे भून कर रोटी पर रखा ही था कि एक बच्चे को देखा, मैं ने पूछा : क्या तुम फ़ुलां के बेटे हो और तुम्हारे वालिद फ़ौत हो चुके हैं ? उस ने कहा : हां। मैं ने रोटी और गोश्त का टुकड़ा उसे दे दिया। लोग कहते हैं : फिर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه रोने लगे और येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۝ (پ ۲۹ ، الدھر : ۸)

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और खाना खिलाते हैं उस की मह़ब्बत पर मिस्कीन और यतीम और असीर (क़ैदी) को)।

इस के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने कभी गोश्त नहीं चखा।

(احیاء علوم الدین، کتاب کسر الشھوتین، بیان طریق الریاضۃ فی کسر شھوات البطن، ۱۱۶/۳)

हर रात 80 अफ़्राद को खाना खिलाते

ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन ह़ाज़िम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن से रिवायत करते हैं कि शाम के वक़्त शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा को दीगर सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में तक़्सीम फ़रमा देते तो कोई एक आदमी को ले जाता, कोई दो को और कोई तीन को,

यहां तक कि इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن ने दस तक का ज़िक्र किया। ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه हर रात 80 अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा को अपने घर लाते और खाना खिलाते।

(المصنف لابن ابی شیبة،کتاب الادب،باب ما ذکرفی الشح،۶/۲۵۵حدیث:۱۶)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर खाना खिलाइये

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : خِيَارُ أُمَّتِيْ مَنْ يُطْعِمُ الطَّعَامَ وَلَيْسَ فِيْهِ رِيَاءٌ وَلَاسُمْعَةٌ या'नी मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग वोह हैं जो लोगों को खाना खिलाते हैं और इस खाना खिलाने में रियाकारी और सम्आ़[1] नहीं होता।

(مسند الفردوس،۱/۳۶۳حدیث:۲۶۹۲)

जन्नती बालाख़ाना

हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जन्नत में एक ऐसा बालाख़ाना है कि जिस का बाहर अन्दर से और अन्दर बाहर से दिखाई देता है, येह बालाख़ाना उस के लिये है जो मोह़ताजों को खाना खिलाए। **(مسنداحمد،۸/۴۴۹حدیث:۲۲۹۶۸)**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

مدینہ

1.....सम्आ़ या'नी इस लिये काम करना कि लोग सुनेंगे और अच्छा जानेंगे।

(बहारे शरीअ़त, 3/629)

हिकायत : 3 रोज़ाना हमारे हां नाश्ता करें

ह़ज़रते सय्यिदुना अबान बिन उ़स्मान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) को नुक़्सान पहुंचाने का इरादा किया और क़ुरैश के सरदारों के पास जा कर कहा : ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने कल सुब्ह़ के नाश्ते पर आप सब की दा'वत की है चुनान्चे, वोह सब आ गए ह़त्ता कि उन से घर भर गया, ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने येह देखा तो पूछा : क्या मुआ़मला है ? आप को पूरा वाक़िआ़ बताया गया । येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फल ख़रीदने का हुक्म दिया और कुछ लोगों से फ़रमाया : खाना और रोटी तय्यार करो । चुनान्चे, पहले मेहमानों को फल पेश किये गए, अभी वोह फल खा ही रहे थे कि दस्तर ख़्वान पर खाना लगा दिया गया ह़त्ता कि उन्हों ने खाना खाया और वापस चले गए । ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) ने खाना खिलाने वालों से पूछा : क्या हम लोगों की रोज़ाना इस त़रह़ की दा'वत कर सकते हैं ? उन्हों ने कहा : जी हां । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : उन लोगों से कह देना कि रोज़ाना हमारे हां आ कर नाश्ता किया करें ।

(احیاء علوم الدین ،کتاب ذم البخل وذم حب المال،حکایات الأسخیاء،۳/ ۳۰۵)

मग़्फ़िरत का सबब

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मग़्फ़िरत के अस्बाब में से एक सबब भूके मुसलमान को खाना खिलाना है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَوْ اِطْعٰمٌ فِیْ یَوْمٍ ذِیْ مَسْغَبَةٍ ﴿۱۴﴾ (پ ۳۰، البلد: ۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : या भूक के दिन खाना देना ।

(المستدرك للحاكم، كتاب التفسير، باب اطعام المسلم السغبان......الخ، ۳/۳۷۲۔ حديث: ۳۹۹۰)

हिकायत : 4 खाना भी खिलाया, कपड़े भी पहनाए

हज़रते सय्यिदुना अम्र رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि इमामे आली मक़ाम हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा ने उन के पास पैग़ाम भेजा कि "हम ने आप के लिये लज़ीज़ खाना और खुश्बू तय्यार की है, अपने हम पल्ला लोग देखें और उन्हें साथ ले कर हमारे पास तशरीफ़ ले आएं।" हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ मस्जिद में गए और वहां जो मसाकीन व साइलीन थे उन्हें ले कर घर तशरीफ़ ले गए। हमसाया ख़वातीन भी आप की ज़ौजा के पास आ गईं और कहने लगीं : "तुम्हारे घर तो मसाकीन जम्अ़ हो गए !" फिर हज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ अपनी ज़ौजा के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : "मैं तुम्हें अपने उस हक़ की क़सम देता हूं जो मेरा तुम पर है कि तुम खाना और खुश्बू बचा कर नहीं रखोगी।" फिर उन्हों ने ऐसे ही किया। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पहले मसाकीन को खाना खिलाया फिर उन्हें कपड़े पहनाए और खुश्बू लगाई।

(مكارم الاخلاق للطبرانی ، باب فضل إطعام الطعام ، ص۳۷۵ ، رقم : ۱۷۲)

जहन्नम से दूर कर देगा

हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने अपने मुसलमान भाई को खाना खिलाया यहां तक कि वोह सैर हो गया और पानी पिलाया यहां तक कि वोह सैराब हो गया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ खिलाने वाले को जहन्नम से सात ख़न्दक़ों की मसाफ़त दूर कर देगा, हर दो ख़न्दक़ों के दरमियान 500 साल की मसाफ़त है ।

(شعب الایمان للبیہقی، باب فی الزکوٰۃ، فصل فی إطعام الطعام وسقی الماء، ۲۱۷/۳، حدیث: ۳۳٦۸)

हिकायत : 5 फ़तवा भी देते हैं खाना भी खिलाते हैं

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम जुमह़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی बयान करते हैं कि एक आ'राबी (देहात का रहने वाला) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के घर में दाख़िल हुवा । आप के घर की एक जानिब हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़तवा दिया करते थे, उन से जो भी सुवाल किया जाता उस का जवाब देते और दूसरी जानिब हज़रते सय्यिदुना उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्बास (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) हर आने वाले को खाना खिलाते । येह देख कर उस आ'राबी ने कहा : जो दुन्या और आख़िरत की भलाई चाहता है वोह हज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) के घर ज़रूर आए क्यूंकि येह फ़तवा देते, लोगों को फ़िक़्ह सिखाते और येह खाना भी खिलाते हैं । (تاریخ مدینہ دمشق، عبیداللّٰہ بن عباس، ۴۸۰/۳۷)

जन्नत की ख़ुश ख़बरी

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : पहली बात जो मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुनी, वोह येह थी : ''ऐ लोगो ! सलाम को आ़म करो, **मोह़ताजों को खाना खिलाया** करो और रात को जब लोग सो रहे हों तो नमाज़ पढ़ा करो, सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे ।''

(ترمذی،کتاب صفة القیامة،باب۱۰۷/۴،۲۱۹حدیث:۲۴۹۳)

तीन अफ़राद की बख़्शिश का सामान

हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रोटी के एक लुक़्मे और खजूरों के एक ख़ोशे और इस जैसी दूसरी चीज़ें जो मसाकीन के लिये नफ़्अ़ बख़्श हों, की वज्ह से तीन आदमियों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा : (1) घर के मालिक को जिस ने सदक़े का हुक्म दिया (2) उस की ज़ौजा को जिस ने वोह चीज़ दुरुस्त कर के दी (3) उस ख़ादिम को जिस ने मिस्कीन तक वोह सदक़ा पहुंचाया । **(مجمع الزوائد،کتاب الزکاة،باب اجر الصدقة،۲۸۸/۳حدیث:۴۶۲۲)**

हिकायत : 6 रोटी खिलाने का सवाब गुनाहों पर ग़ालिब आ गया

एक राहिब अपनी इ़बादत गाह में साठ साल तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत करता रहा । फिर एक औ़रत उस के पास आई तो वोह उस के पास नीचे उतर आया और छे रातें उस के साथ रहा, जब उसे अपने इस अ़मल पर नदामत हुई तो वोह दौड़ता हुवा मस्जिद की त़रफ़ आया ।

वहां उस ने देखा कि तीन भूके शख़्स मस्जिद में पनाह गुज़ीं हैं, चुनान्चे, उस ने एक रोटी तोड़ कर आधी दाईं त़रफ़ वाले और आधी बाईं त़रफ़ वाले को दे दी। इस के बा'द अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा जिन्हों ने उस राहिब की रूह़ क़ब्ज़ कर ली। जब उस की मीज़ान के एक पलड़े में 60 साल की इ़बादत रखी गई और दूसरे पलड़े में छे दिन के गुनाह तो वोह गुनाह इ़बादत पर ग़ालिब आ गए लेकिन जब रोटी रखी गई तो वोह उन गुनाहों पर ग़ालिब आ गई।

(شعب الایمان،باب فی الزکاۃ،فصل فی ما جاء فی الایثار،۳/۲۶۲حدیث:۳۴۸۸ملتقطاً)

हिकायत : 7 कफ़न की वापसी

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي का बयान है कि एक साइल ने लोगों से सुवाल किया कि उसे कुछ खाना खिला दें लेकिन उन्हों ने न खिलाया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मौत के फ़िरिश्ते को उस की रूह़ क़ब्ज़ करने का हुक्म दिया, चुनान्चे, फ़िरिश्ते ने उस फ़क़ीर की रूह़ क़ब्ज़ कर ली। जब मुअज़्ज़िन मस्जिद में आया तो उस फ़क़ीर को मुर्दा ह़ालत में पाया, उस ने लोगों को ख़बर दी और लोगों ने चन्दा कर के उस की तदफ़ीन का इन्तिज़ाम किया। मुअज़्ज़िन तदफ़ीन के बा'द मस्जिद में आया तो उस ने देखा कि फ़क़ीर को दिया गया कफ़न मेह़राब में मौजूद है और उस पर लिखा हुवा है : येह कफ़न तुम लोगों को वापस किया जाता है, तुम लोग बहुत बुरी क़ौम हो, एक फ़क़ीर ने तुम से खाना मांगा तो तुम लोगों ने न खिलाया यहां तक कि वोह भूका मर गया, जो शख़्स हमारे अह़बाब में शामिल हो हम उसे ग़ैरों के ह़वाले नहीं किया करते। **(المستطرف،۱/۲۰۹)**

हिकायत : 8 फ़क़ीर को खाना खिला दिया

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى से मन्क़ूल है : एक औ़रत ज़ैतून का तेल ले कर एक बहुत बड़े सूफ़ी बुज़ुर्ग की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुई और अ़र्ज़ की : इस तेल को मस्जिद की रौशनी के लिये इस्ति'माल फ़रमा लें। बुज़ुर्ग ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम्हें इन दोनों में से कौन सी बात ज़ियादा पसन्द है : इस तेल से ह़ासिल होने वाली रौशनी (मस्जिद की) छत तक जाए या फिर येह कि इस की रौशनी अ़र्श तक जाए ? औ़रत ने कहा : इस की रौशनी का अ़र्श तक पहुंचना मुझे ज़ियादा पसन्द है। इरशाद फ़रमाया : अगर इस तेल को (मस्जिद की) क़िन्दील में डाला जाए तो इस की रौशनी छत तक जाएगी और अगर किसी भूके फ़क़ीर के खाने में डाला जाए तो इस की रौशनी अ़र्श तक पहुंचेगी, फिर बुज़ुर्ग ने वोह तेल फ़ुक़रा को (ग़ालिबन खाने में डाल कर) खिला दिया। **(فیض القدیر،۱/۲۱۶ تحت الحدیث:۱۹۹)**

हिकायत : 9 सलाम भी एक तोह़फ़ा है

ह़ज़रते सय्यिदुना अश्अ़स बिन क़ैस और ह़ज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمَا) ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मुलाक़ात के लिये निकले तो उन्हें मदाइन के गिर्दो नवाह़ में एक झोंपड़ी में पाया, ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ किया, कुछ देर गुफ़्तगू के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : "तुम किस काम से आए हो ?" उन्हों ने अ़र्ज़ की : हम मुल्के शाम से आप के भाई के पास आए हैं।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फिर पूछा : वोह कौन ? अ़र्ज़ की : ह़ज़रते अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ । फ़रमाया : उन्हों ने मेरे लिये जो तोह़फ़ा भेजा है वोह कहां है ? अ़र्ज़ की : उन्हों ने आप के लिये कोई तोह़फ़ा नहीं भेजा । फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो और अमानत अदा करो ! जो शख़्स भी उन के पास से आता है वोह मेरे लिये उन का तोह़फ़ा लाता है। बोले : आप हम पर तोहमत न लगाएं ! अगर आप को कोई ज़रूरत है तो हम उसे अपने माल से पूरा किये देते हैं । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मुझे तुम्हारे माल की कोई ज़रूरत नहीं, मुझे तो वोह तोह़फ़ा चाहिये जो उन्हों ने तुम्हारे हाथ भेजा है । उन्हों ने अ़र्ज़ की : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! उन्हों ने हमें कोई चीज़ दे कर नहीं भेजा सिवाए इस के कि उन्हों ने फ़रमाया : तुम में एक ऐसा शख़्स मौजूद है कि जब वोह रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के हमराह होता था तो आप को किसी दूसरे की ह़ाजत नहीं होती थी, लिहाज़ा जब तुम उन के पास जाओ तो **मेरा सलाम कहना** । ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : येही तो वोह तोह़फ़ा है जिस का मैं तुम से मुत़ालबा कर रहा था, और एक मुसलमान के लिये सलाम से अफ़्ज़ल कौन सा तोह़फ़ा हो सकता है ! जो अच्छी दुआ़ है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से बरकत वाली और पाकीज़ा है । **(المعجم الکبیر، ٦/ ٢١٩، حدیث: ٦٠٥٨)**

जवाबे सलाम के मदनी फूल

(1) सलाम (में पहल) करने वाले पर 90 रह़मतें और जवाब देने वाले पर 10 रह़मतें नाज़िल होती हैं (कीमियाए सआ़दत

(2) السَّلامُ علیکم कहने से 10 नेकियां मिलती हैं। साथ में وَرَحمَۃُ اللّٰہ भी कहेंगे तो 20 नेकियां हो जाएंगी। और وَبَرَکاتُہٗ शामिल करेंगे तो 30 नेकियां हो जाएंगी। (3) इसी त़रह़ जवाब में وَعَلَیکُمُ السَّلامُ وَرَحمَۃُ اللّٰہِ وَبَرَکاتُہٗ कह कर 30 नेकियां ह़ासिल की जा सकती हैं (4) **सलाम** का जवाब फ़ौरन और इतनी आवाज़ से देना **वाजिब** है कि सलाम करने वाला सुन ले। (सलाम की मज़ीद सुन्नतें और आदाब जानने के लिये मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ़ रिसाला "101 मदनी फूल" सफ़ह़ा 2 ता 5 मुलाह़ज़ा कीजिये)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(2) तौह़ीदो रिसालत की गवाही देने वाले बेहतरीन लोग हैं

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : मेरी उम्मत में सब से बेहतरीन वोह लोग हैं जो इस बात की गवाही दें :

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ

"या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस के बन्दे और रसूल हैं" और येह ऐसे लोग हैं कि जब येह नेकी का काम करते हैं तो ख़ुश होते हैं और जब इन से गुनाह हो जाता है तो अपने रब से मुआ़फ़ी चाहते हैं।

(المصنف لعبد الرزاق، کتاب الصلوۃ، باب الصیام فی السفر، ۲/ ۳۷۳، حدیث: ۴۴۹۳)

कामिल मोमिन की एक निशानी

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, महबूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिसे गुनाह पर रन्ज हो और नेकी पर ख़ुशी वोह कामिल मोमिन है । (ترمذی، کتاب الفتن، باب ما جاء فی لزوم ...الخ، ٤/٦٧، حدیث: ٢١٧٢)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश का सुवाल करो

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : जब तुम कोई नेकी करने में कामयाब हो जाओ तो इस पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम्द बजा लाओ और बुराई हो जाने पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश का सुवाल करो ।

(المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الزهد، کلام ابی الدرداء، ٨/١٦٧، حدیث: ٦)

हिकायत : 10 तुम्हारी आंख क्यूं सूजी हुई है ?

हज़रते सय्यिदुना उ़त्बा बिन ग़ज़वान रक़ाशी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने मुझ से दरयाफ़्त फ़रमाया : "तुम्हारी आंख क्यूं सूजी हुई है ?" मैं ने अ़र्ज़ की : "एक मरतबा किसी आदमी की कनीज़ पर मेरी निगाह पड़ी तो मैं ने एक नज़र उसे देख लिया । जब मुझे ख़याल आया तो मैं ने उस आंख पर एक त़मांचा दे मारा जिस की वज्ह से मेरी येह आंख सूज गई, और इस की येह ह़ालत हो गई जिसे आप मुलाह़ज़ा फ़रमा रहे हैं ।" हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : अपने परवर दगार عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करो ! तुम ने अपनी आंख पर

जुल्म किया है क्यूंकि पहली बार नज़र पड़ जाना मुआ़फ़ है जब कि दोबारा देखना जाइज़ नहीं ।

(كتاب الثقات لابن حبان ، كتاب التابعين،عتبة بن غزوان ، ٢/٤٠٧،رقم: ٣١١٣)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(3) तुम में से बेहतर वोह है जो दूसरों पर बोझ न बने

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा (كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم) ने इरशाद फ़रमाया :

خَيْرُكُمْ مَنْ لَمْ يَتْرُكْ اٰخِرَتَهُ لِدُنْيَاهُ وَلَا دُنْيَاهُ لِاٰخِرَتِهٖ وَلَمْ يَكُنْ كَلًّا عَلَى النَّاسِ

या'नी : तुम सब में बेहतरीन वोह है जो दुन्या को आख़िरत और आख़िरत को दुन्या के लिये न छोड़े और लोगों पर बोझ न बने ।

(الجامع الصغير،ص ٢٥٠ ، حديث : ٤١١٢)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : क्यूंकि दुन्या आख़िरत की गुज़रगाह और आख़िरत तक पहुंचने का आसान ज़रीआ़ है, इसी लिये ह़ज़रते लुक़्मान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने बेटे से कहा था : दुन्या से किफ़ायत के मुत़ाबिक़ लो, ज़ाइद माल को आख़िरत के लिये मह़फ़ूज़ करो और दुन्या को बिल्कुल ही न ठुकराओ कि मोह़ताज हो कर लोगों पर बोझ बन जाओ। अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى मज़ीद फ़रमाते हैं : (ज़रूरत के मुत़ाबिक़ दुन्या जम्अ़ करना) तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं क्यूंकि तवक्कुल अस्बाब को छोड़ने का नाम नहीं बल्कि अस्बाब पर ए'तिमाद न करने का नाम है, आने वाली तक्लीफ़ को ख़त्म करना

तवक्कुल के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि ज़रूरी है, जैसे गिरती दीवार के नीचे से भागना और लुक़्मा उतारने के लिये पानी पीना।

(فیض القدیر، ۳/۶۶۵ تحت الحدیث : ۴۱۱۲)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(4) दुन्या और आख़िरत दोनों कमाइये

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

لَيْسَ خِيَارُكُمْ مَنْ تَرَكَ الدُّنْيَا لِلْاٰخِرَةِ وَلَا خِيَارُكُمْ مَنْ تَرَكَ الْاٰخِرَةَ لِلدُّنْيَا وَلٰكِنَّ خِيَارَكُمْ مَنْ اَخَذَ مِنْ كُلٍّ

वोह लोग बेहतर नहीं जो दुन्या के लिये आख़िरत और आख़िरत के लिये दुन्या को छोड़ दें, हां तुम में बेहतरीन वोह है जो दोनों से ले।

(تاریخ دمشق ، حذیفه بن یمان ، ۱۲/ ۲۹۳)

ह़लाल और ह़राम कमाई का अन्जाम

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि "दुन्या मीठी और सरसब्ज़ है" जिस ने इस में से ह़लाल त़रीक़े से कमाया और इसे कारे सवाब में ख़र्च किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे सवाब अ़ता फ़रमाएगा और अपनी जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जिस ने इस में ह़राम त़रीक़े से कमाया और इसे नाह़क़ ख़र्च किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये ज़िल्लत व ह़क़ारत के घर को ह़लाल कर देगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के माल में ख़ियानत करने वाले बहुत से लोगों के लिये क़ियामत के दिन जहन्नम होगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब कभी बुझने पर आएगी हम उसे और भड़का देंगे।

كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا ﴿٩٧﴾

(پ۱۵،بنی اسرائیل:۹۷)

(شعب الا یمان ، باب فی القبض الید ---الخ، ٤/٣٩٦ ، حدیث : ٥٥٢٧)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(5) तौबा कर लेने वाले बेहतर हैं

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : كُلُّ بَنِيْ اٰدَمَ خَطَّاءٌ وَخَيْرُ الْخَطَّائِيْنَ التَّوَّابُوْنَ या'नी सारे इन्सान ख़त़ाकार हैं और ख़त़ाकारों में से बेहतर वोह हैं जो तौबा कर लेते हैं।

(ابن ماجه،کتاب الزهد،باب ذکر التو به،٤/٤٩١ حدیث:٤٢٥١)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : तमाम इन्सान गुनहगार हैं न कि हर इन्सान क्यूंकि ह़ज़राते अम्बिया (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام) गुनाहों से मा'सूम हैं कि गुनाह कर सकते ही नहीं और बा'ज़ औलिया (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن) मह़फ़ूज़ कि गुनाह करते नहीं। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/364)

गुनाह से तौबा करने वाले की फ़ज़ीलत

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नजात निशान है : गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसे उस का गुनाह था ही नहीं। (ابن ماجه،کتاب الزهد،باب ذکر التو به،٤/٤٩١ حدیث:٤٢٥٠)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : तौबा से मुराद सच्ची और मक़्बूल तौबा है जिस में तमाम शराइते़ जवाज़ व शराइते़ क़बूल जम्अ़ हों कि हुक़ूक़ुल इ़बाद और हुक़ूक़े शरीअ़त अदा कर दिये जाएं, फिर गुज़श्ता कोताही पर नदामत हो और आइन्दा न करने का अ़ह्द । इस तौबा से गुनाह पर मुत़लक़न पकड़ न होगी बल्कि बा'ज़ सूरतों में तो गुनाह नेकियों से बदल जाएंगे । ह़ज़रते राबिआ़ बसरिय्या (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهَا) (सय्यिदुना) सुफ़्यान सौरी और (सय्यिदुना) फ़ुज़ैल इब्ने इ़याज़ (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا) से फ़रमाया करती थीं कि मेरे गुनाह तुम्हारी नेकियों से कहीं ज़ियादा हैं, अगर मेरी तौबा से येह गुनाह नेकियां बन गए तो फिर मेरी नेकियां तुम्हारी नेकियों से बहुत बढ़ जाएंगी । (मिरक़ात) (मिरआतुल मनाजीह़, 3/378)

मुआ़फ़ी मांगने का त़रीक़ा

मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाते हैं : मक़्बूल इस्तिग़फ़ार वोह है जो दिल के दर्द, आंखों के आंसू और इख़्लास से की जाए । (मिरआतुल मनाजीह़, 3/375)

दिल गुनाह करना भूल जाए

ह़ज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی) फ़रमाते हैं कि तौबा का कमाल येह है कि दिल लज़्ज़ते गुनाह बल्कि गुनाह भूल जाए । (मिरआतुल मनाजीह़, 3/353)

कल नहीं आज बल्कि अभी तौबा कर लीजिये

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रहमान इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى गुनाहों में पड़े हुवे और तौबा को आइन्दा पर टालने वाले शख़्स को इलाज तजवीज़ करते हुवे फ़रमाते हैं : तस्वीफ़ करने वाला (या'नी तौबा को आइन्दा पर टालने वाला) येह सोचे कि अक्सर जहन्नमी इसी तस्वीफ़ की वज्ह से जहन्नम में पहुंचेंगे। तस्वीफ़ करने वाला अपने काम की बुन्याद ऐसी चीज़ पर रखता है जो उस के हाथ में नहीं होती या'नी ज़िन्दा रहने की उम्मीद, तो मुमकिन है वोह ज़िन्दा न रहे और अगर बिलफ़र्ज़ ज़िन्दा रह भी जाए तो ज़रूरी नहीं कि वोह आज जिस अन्दाज़ में बुराइयों की रोक थाम कर सकता है कल भी उसी अन्दाज़ में करने पर क़ादिर हो और आज येह नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ग़ालिब होने की वज्ह से ऐसा करने से आ़जिज़ है तो क्या कल ऐसा करने में कामयाब हो जाएगा ? बल्कि आ़दत बन कर मज़ीद पुख़्ता हो जाएगी। येह लोग इसी वज्ह से हलाक होते हैं क्यूंकि येह दो एक जैसी बातों में फ़र्क़ कर बैठते हैं। तस्वीफ़ (या'नी तौबा को आइन्दा पर टालने) वाले की मिसाल उस शख़्स जैसी है जो कोई दरख़्त उखाड़ना चाहे, फिर जब देखे कि येह तो बहुत मज़बूत है और इसे उखेड़ने के लिये बहुत मशक़्क़त करना पड़ेगी तो बोले : मैं एक साल बा'द इसे उखाड़ूंगा, ह़ालांकि वोह जानता है कि दरख़्त जब तक बाक़ी रहेगा इस की जड़ें मज़ीद मज़बूत होती चली जाएंगी और जूं जूं इस की अपनी उ़म्र त़वील होती जाएगी येह कमज़ोर होता जाएगा। तअ़ज्जुब है कि त़ाक़तवर होते हुवे येह उखाड़ने से आ़जिज़ है और कमज़ोर हो जाने पर उखाड़ लेगा !

ह़ालांकि जब येह कमज़ोर होगा दरख़्त मज़बूत़ तरीन हो जाएगा तो उस वक़्त येह कैसे उस दरख़्त पर ग़लबा ह़ासिल करने की सोच रखे हुवे है ?

(منہاج القاصدین، ربع المنجیات، کتاب التوبۃ، ۱۰۳۳/۳)

लम्बी उम्मीदों की वज्ह

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने जौज़ी عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللہِ الۡقَوِی मज़ीद फ़रमाते हैं : येह बात इ़ल्म में रहे कि लम्बी उम्मीद का सबब दो चीज़ें हैं : (1) दुन्या की मह़ब्बत (2) जहालत । जहां तक दुन्या की मह़ब्बत का तअ़ल्लुक़ है तो इन्सान जब दुन्या और इस की फ़ानी लज़्ज़ात का रस्या हो जाता है तो फिर उस से दिल हटाना मुश्किल हो जाता है, इसी लिये दिल में मौत की फ़िक्र पैदा नहीं होती जो दिल हटाने का अस्ल सबब बनती है । हर शख़्स ना पसन्दीदा चीज़ को ख़ुद से दूर करता है । इन्सान झूटी उम्मीदों में पड़ा हुवा है, ख़ुद को हमेशा अपनी मुराद के मुत़ाबिक़ दुन्या, मालो दौलत, अहलो इ़याल, घर बार, यार दोस्त और दीगर चीज़ों की उम्मीदें दिलाता रहता है, तो उस का दिल इसी सोच में अटका रहता है और मौत के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाता है । अगर कभी मौत का ख़याल आ भी जाए तो तौबा को आइन्दा पर डालते हुवे अपने नफ़्स को येह दिलासा देता है : अभी बहुत दिन पड़े हैं, थोड़ा बड़ा तो हो जा फिर तौबा कर लेना, और जब बड़ा हो जाए तो कहता है : अभी थोड़ा बूढ़ा तो हो जा फिर तौबा कर लेना । जब बूढ़ा हो जाए तो कहता है : पहले येह घर बना लूं या इस जाइदाद की ता'मीर वग़ैरा कर लूं या इस सफ़र से वापस आ जाऊं फिर तौबा कर लूंगा । यूं वोह हमेशा ताख़ीर पर ताख़ीर करता चला जाता है, और एक

काम की ह़िर्स मुकम्मल हो नहीं पाती कि दूसरे की ह़िर्स आन पड़ती है, इसी त़रह़ दिन गुज़रते चले जाते हैं, एक के बा'द एक काम पड़ता ही रहता है यहां तक कि एक वक़्त जिस में उस का गुमान भी नहीं होता उसे मौत भी आ जाती है, और उस की ह़सरतों के साए हमेशा के लिये दराज़ हो जाते हैं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى मज़ीद लिखते हैं : लम्बी उम्मीद का दूसरा सबब जहालत है। वोह यूं कि इन्सान अपनी जवानी पर भरोसा कर के मौत को बईद (या'नी दूर) ख़याल करता है। क्या वोह येह ग़ौर नहीं करता कि अगर उस की बस्ती के बूढ़े अफ़राद शुमार किये जाएं तो वोह कितने थोड़े होंगे ? उन के थोड़े होने की वज्ह येही है कि जवानों को मौत ज़ियादा आती है और जब तक कोई बूढ़ा मरता है तब तक तो कई बच्चे और जवान मर चुके होते हैं। कभी येह शख़्स अपनी सिह़्ह़त से धोका खा बैठता है और येह नहीं समझ पाता कि मौत अचानक आती है अगर्चे वोह इसे बईद समझे क्यूंकि मरज़ तो अचानक ही आता है, तो जब कोई बीमार हो जाए तो मौत दूर नहीं रहती। अगर वोह येह बात समझ ले और इस की फ़िक्र पैदा कर ले कि मौत का कोई वक़्त गर्मी, सर्दी, ख़ज़ां, बहार, दिन या रात मख़्सूस नहीं और न ही कोई साल जवानी, बुढ़ापा या अधेड़पन वग़ैरा मुक़र्रर है तब उसे मुआमले की नज़ाकत का एह़सास हो और वोह मौत की तय्यारी करना शुरूअ़ कर दे।

(منهاج القاصدين،ربع المنجيات،كتاب ذكر الموت ...الخ،۳/۱٤۳۷)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(6) तौबा करने वाले सब से बेहतरीन लोग हैं

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : خِيَارُكُمْ كُلُّ مُفَتَّنٍ تَوَّابٍ या'नी तुम सब में बेहतरीन वोह हैं जो फ़ितनों में मुब्तला हो, तौबा करता हो ।

(مسند بزار،۲/۲۸۰ حدیث:۷۰۰)

तौबा ख़ुद तौबा की मोह़ताज है

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : इस ह़दीसे पाक का मत़लब येह कि बार बार गुनाह हो जाने के बा'द बार बार तौबा करते हैं, जब कभी आदमी से गुनाह हो तो फ़ौरन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करे, तौबा ऐसी न हो कि सिर्फ़ ज़बान पर اَسْتَغْفِرُاللّٰه (तर्जमा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांगता हूं) हो और दिल गुनाहों पर अड़ा रहे, ऐसी तौबा ख़ुद तौबा की मोह़ताज है ।

(فتح الباری،کتاب التوحید،باب فی قول اللّٰہ تعالیٰ "یریدون ان یبدلوا کلام اللّٰہ" ۱۴/۳۹۹)

सच्ची तौबा अल्लाह तआ़ला की ने'मत है

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **''फ़तावा रज़विय्या शरीफ़''** में एक सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : सच्ची तौबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वोह नफ़ीस शै बनाई है कि हर गुनाह के इज़ाले को काफ़ी व वाफ़ी है । कोई गुनाह ऐसा नहीं कि सच्ची तौबा के बा'द बाक़ी रहे यहां तक कि शिर्क व कुफ़्र, सच्ची तौबा के येह मा'ना हैं कि गुनाह पर इस लिये कि वोह उस के रब عَزَّوَجَلَّ की ना

फ़रमानी थी नादिम व परेशान हो कर फ़ौरन छोड़ दे और आइन्दा कभी उस गुनाह के पास न जाने का सच्चे दिल से पूरा अ़ज़्म (इरादा) करे जो चाराकार उस की तलाफ़ी का अपने हाथ में हो बजा लाए मसलन नमाज़ रोज़े के तर्क या ग़सब, सरिक़ा, रिश्वत, रिबा (सूद) से तौबा की तो सिर्फ़ आइन्दा के लिये जराइम का छोड़ देना ही काफ़ी नहीं बल्कि इस के साथ येह भी ज़रूरी है कि जो नमाज़ रोज़े नाग़ा किये उन की क़ज़ा करे। जो माल जिस जिस से छीना, चुराया, रिश्वत, सूद में लिया उन्हें और वोह न रहे हों तो उन के वारिसों को वापस कर दे या मुआ़फ़ कराए, पता न चले तो इतना माल तसद्दुक़ कर दे और दिल में निय्यत रखे कि वोह लोग जब मिले अगर तसद्दुक़ पर राज़ी न हुवे अपने पास से उन्हें फेर दूंगा। (फ़तावा रज़विय्या, 21/121)

हिकायत : 11 तेरी तौबा क़बूल कर लेंगे

बनी इस्राईल में एक जवान था जिस ने बीस साल तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़बादत की, फिर बीस साल तक ना फ़रमानी की। फिर आईना देखा तो दाढ़ी में बाल सफ़ेद थे। वोह ग़मज़दा हो गया और कहने लगा : "ऐ मेरे ख़ुदा ! मैं ने बीस साल तक तेरी इ़बादत की और बीस साल तक तेरी ना फ़रमानी की अगर मैं तेरी त़रफ़ आऊं तो क्या मेरी तौबा क़बूल होगी ?" उस ने किसी कहने वाले की आवाज़ सुनी : तुम ने हम से मह़ब्बत की हम ने तुम से मह़ब्बत की, फिर तू ने हमें छोड़ दिया और हम ने भी तुझे छोड़ दिया तू ने हमारी ना फ़रमानी की और हम ने तुझे मोहलत दी और अगर तू तौबा कर के हमारी त़रफ़ आएगा तो हम तेरी तौबा क़बूल करेंगे।

(مکاشفة القلوب ، الباب السابع عشر فی بیان الامانة والتو بة ، ص ٦٢)

(7) बेहतरीन शख़्स वोह है जो क़ुरआन सीखे और दूसरों को सिखाए

सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे रह़मत निशान है : خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْاٰنَ وَعَلَّمَهٗ या'नी तुम में से बेहतरीन शख़्स वोह है जो ख़ुद क़ुरआन सीखे और दूसरों को सिखाए।

(بخاری،کتاب فضائل القرآن،باب خیرکم من تعلم القرآن وعلمه،۳/۴۱۰ حدیث:۵۰۲۷)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : क़ुरआन सीखने सिखाने में बहुत वुस्अ़त है बच्चों को क़ुरआन के हिज्जे रोज़ाना सिखाना, क़ारियों का तजवीद सीखना सिखाना, उ़लमा का क़ुरआनी अह़काम ब ज़रीअ़ए ह़दीस व फ़िक़्ह सिखाना, सूफ़ियाए किराम का असरार व रुमूज़े क़ुरआन ब सिलसिलए त़रीक़त सीखना सिखाना, सब क़ुरआन ही की ता'लीम है सिर्फ़ अल्फ़ाज़े क़ुरआन की ता'लीम मुराद नहीं, लिहाज़ा येह ह़दीस फ़ुक़हा के इस फ़रमान के ख़िलाफ़ नहीं कि फ़िक़्ह सीखना तिलावते क़ुरआन से अफ़्ज़ल है क्यूंकि फ़िक़्ह अह़कामे क़ुरआन है और तिलावत में अल्फ़ाज़े क़ुरआन चूंकि कलामुल्लाह तमाम कलामों से अफ़्ज़ल है लिहाज़ा इस की ता'लीम तमाम कामों से बेहतर और असरारे क़ुरआन अल्फ़ाज़े क़ुरआन से अफ़्ज़ल हैं कि अल्फ़ाज़े क़ुरआन का नुज़ूल हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के कान मुबारक पर हुवा और असरार व अह़काम का नुज़ूल हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दिल पर हुवा, तिलावत से इ़ल्मे फ़िक़्ह अफ़्ज़ल, रब तआ़ला फ़रमाता है :

نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ[1] अ़मल बिल कुरआन इल्मे कुरआन के बा'द है लिहाज़ा आ़लिम आ़मिल से अफ़्ज़ल है (ह़ज़रते) आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام आ़लिम थे फ़िरिश्ते आ़मिल मगर ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अफ़्ज़ल (व) मस्जूद रहे। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/217)

ह़िकायत : 12 तिलावत सुन कर फ़ुज़ूल बातों के दिलदादह उठ गए

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन अबू जा'द رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक अश्जई़ शख़्स से रिवायत करते हैं कि लोगों को पता चला कि ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारिसी رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه मदाइन की एक मस्जिद में हैं तो वोह उन के पास जम्अ़ होने लगे, यहां तक कि हज़ार के लगभग अफ़राद वहां जम्अ़ हो गए। आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने खड़े हो कर फ़रमाया : बैठो ! बैठो ! जब सब लोग बैठ गए तो आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने सूरए यूसुफ़ की तिलावत शुरूअ़ कर दी, आहिस्ता आहिस्ता लोग वहां से निकलने लगे, यहां तक कि 100 के क़रीब अफ़राद बाक़ी रह गए, आप رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने जलाल में आ कर फ़रमाया : तुम ने मन घड़त बातें सुनना चाहीं, लेकिन मैं ने तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का कलाम सुनाया तो तुम उठ कर चल दिये।

(حلية الاولياء، ١/ ٢٦١، رقم : ٦٤٣)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1.....मुकम्मल आयत येह है :

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۹۷﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो जो कोई जिब्रील का दुश्मन हो तो उस ने तो तुम्हारे दिल पर **अल्लाह** के हुक्म से येह कुरआन उतारा अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाता और हिदायत और बिशारत मुसलमानों को। (پ۱،البقرۃ:۹۷)

आइये ! रब तआ़ला का प्यारा कलाम (क़ुरआने करीम) सीखें और सिखाएं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तह़त क़ुरआने पाक की ता'लीमात को आ़म करने के लिये मुख़्तलिफ़ मसाजिद में उ़मूमन बा'द नमाज़े इ़शा हज़ारहा मदारिसुल मदीना बालिग़ान की तरकीब होती है। जिन में बड़ी उ़म्र के इस्लामी भाई सह़ीह़ मख़ारिज से हु़रूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ क़ुरआने करीम सीखते और दुआ़एं याद करते, नमाज़ें वग़ैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त ह़ासिल करते हैं। आप भी इन मदारिसुल मदीना (बालिग़ान) में पढ़ने या पढ़ाने की निय्यत कर के दुन्या व आख़िरत की ढेरों भलाइयां ह़ासिल कीजिये।

हिकायत : 13 क़ुरआन सीखने का शौक़ रखने वाले को निगरान बना दिया

क़बीलए सक़ीफ़ के एक वफ़्द ने बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर इस्लाम क़बूल किया तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्मान बिन अबुल आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को उन पर अमीर मुक़र्रर फ़रमा दिया ह़ालांकि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उन में सब से छोटे थे, इस की वज्ह येह थी कि आप इस्लाम की समझ बूझ ह़ासिल करने और क़ुरआन सीखने की बहुत ज़ियादा ह़िर्स रखते थे।

(السيرة النبوية لابن هشام، ص ٥٢٥)(اسد الغابة، ٣/٦٠٠)

जो सीख सक्ता हो वोह ज़रूर सीखे

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : बिला शुबा येह कुरआन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से ज़ियाफ़्त है लिहाज़ा जो इस से कुछ सीखने की त़ाक़त रखता है उसे चाहिये कि इसे सीखे क्यूंकि ख़ैर से सब से ज़ियादा ख़ाली वोह घर है जिस में किताबुल्लाह से कुछ न हो और जिस घर में किताबुल्लाह से कुछ न हो वोह उस वीरान घर की त़रह़ है जिसे कोई आबाद करने वाला न हो, बेशक शैत़ान उस घर से भाग जाता है जिस में सूरए बक़रह की तिलावत सुनता है। **(مصنف عبد الرزاق ،باب تعلیم القران وفضلہ،۳/۲۲۵، حدیث:۶۰۱۸)**

फ़िरिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं

ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा'दान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : कुरआन के पढ़ने और इस के सीखने वाले के लिये सूरत ख़त्म होने तक फ़िरिश्ते इस्तिग़फ़ार करते रहते हैं इस लिये जब तुम में से कोई सूरत पढ़े तो उस की दो आयतें छोड़ दे और दिन के आख़िरी ह़िस्से में उसे ख़त्म करे ताकि दिन के शुरूअ़ से आख़िर तक पढ़ने पढ़ाने वाले के लिये फ़िरिश्ते इस्तिग़फ़ार करते रहें।

(سنن دارمی،۲/۵۲۴حدیث :۳۳۱۸)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(8) मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَشْرَافُ اُمَّتِیْ حَمَلَۃُ الْقُرْاٰنِ وَاَصْحَابُ اللَّیْلِ या'नी मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग कुरआन उठाने वाले और शब बेदारी करने वाले हैं।

(شعب الایمان،باب فی تعظیم القران،۲/۵۵۶حدیث:۲۷۰۳)

कुरआन उठाने वालों से कौन मुराद हैं ?

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : कुरआन उठाने वालों से मुराद कुरआन के हाफ़िज़ हैं या इस के मुहाफ़िज़ या'नी हुफ़्फ़ाज़ या उलमाए किराम कि इन दोनों के बड़े दरजे हैं।

﴾मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं :﴿ हाफ़िज़ अल्फ़ाज़े कुरआन की बक़ा का ज़रीआ हैं, उलमा मआनी व मसाइले कुरआन की बक़ा का ज़रीआ और सूफ़िया असरारे रुमूज़े कुरआनी के बक़ा का। रात वालों से मुराद तहज्जुद गुज़ार हैं। سُبْحٰنَ اللّٰه जिस शख़्स में इल्मो अमल दोनों जम्अ हो जाएं उस पर ख़ुदा की ख़ास मेहरबानी है।

(मिरआतुल मनाजीह, 2/262)

हिकायत : 14 लोगों में सब से अच्छा कौन है ?

साहिबे कुरआने मुबीन, महबूबे रब्बुल आलमीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक मरतबा मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा फ़रमा थे कि एक सहाबी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم लोगों में सब से अच्छा कौन है ? फ़रमाया : लोगों में से वोह शख़्स सब से अच्छा है जो कसरत से कुरआने करीम की तिलावत करे।

(مسند احمد، ۱۰/۴۰۲ حدیث:۲۷۵۰۴)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 15 येह ख़ुश्बूएं कैसी हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिद्दुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने ह़ज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन ह़बीब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत की, कि एक क़ब्र से ख़ुश्बूएं आती थीं। किसी ने साह़िबे क़ब्र को ख़्वाब में देख कर उन से पूछा : येह ख़ुश्बूएं कैसी हैं ? जवाब दिया : तिलावते क़ुरआन और रोज़े की। (موسوعة لابن ابی الدنيا،١/٣٠٥حديث:٢٨٧)

शब बेदारी का फ़ाइदा

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि रात में एक घड़ी है अगर कोई मुसलमान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से उस घड़ी में दुन्या व आख़िरत की भलाई मांगे रब तआ़ला उसे देता है और येह घड़ी हर रात में है।

(مسلم،كتاب صلاة المسافرين وقصرها،باب فی الليل ساعة،ص ٣٨٠،حديث:٧٥٧)

अगर क़बूलिय्यते दुआ़ चाहते हो तो ईमान कामिल करो

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि रोज़ाना शब की येह साअ़ते क़बूलिय्यत पोशीदा है जैसे जुमुआ़ की साअ़त मगर ह़क़ येह है कि पोशीदा नहीं गुज़श्ता ह़दीसों में बता दी गई है या'नी रात का आख़िरी तिहाई ख़ुसूसन इस तिहाई का आख़िरी ह़िस्सा जो सारी रात का आख़िरी छटा ह़िस्सा है जो सुब्ह़े सादिक़ से मुत्तसिल है। इस ह़दीस से मा'लूम हुवा कि उस वक़्त

मोमिन की दुआ क़बूल होती है न कि काफ़िर की, अगर क़बूलिय्यत चाहते हो तो ईमान कामिल करो । (मिरआतुल मनाजीह़, 2/256)

जन्नती महल्लात

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मालिक अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जन्नत में बाला ख़ाने हैं जिन के बैरूनी ह़िस्से अन्दर से और अन्दर के ह़िस्से बाहर से नज़र आते होंगे एक आ'राबी ने खड़े हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! येह किस के लिये होंगे ? नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अच्छी गुफ़्तगू करे, खाना खिलाए, हमेशा रोज़ा रखे और रात को नमाज़ अदा करे जब कि लोग सोए हुवे हों ।

(ترمذی،کتاب البر والصلة،باب ماجاء فی قول المعروف،۳/۳۹۶حدیث:۱۹۹۱)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से **''हमेशा रोज़ा रखे और रात को नमाज़ अदा करे''** के तह़्त फ़रमाते हैं : हमेशा रोज़े रखें सिवा उन पांच दिनों के जिन में रोज़ा ह़राम है या'नी शव्वाल की यकुम और ज़ुल ह़िज्जा की दसवीं ता तेरहवीं, येह ह़दीस उन लोगों की दलील है जो हमेशा रोज़े रखते हैं, बा'ज़ ने फ़रमाया कि इस के मा'ना हैं हर महीने में मुसलसल तीन रोज़े रखे, चूंकि नमाज़े तहज्जुद रिया से दूर है और तमाम नमाज़ों की ज़ीनत इस लिये इस के पढ़ने वाले को मुज़य्यन दरीचे दिये गए । ख़ुलासा येह है कि जूदो सुजूद का इजतिमाअ़ बेहतरीन वस्फ़ है । (मिरआतुल मनाजीह़, 2/260)

सब से अफ़्ज़ल नमाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, नबियों के ताजवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : रमज़ान के बा'द अफ़्ज़ल रोज़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महीने मुह़र्रम के हैं और फ़र्ज़ के बा'द अफ़्ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है।

(مسلم،کتاب الصیام، باب فضل صوم المحرم،ص۵۹۱،حدیث:۱۱۶۳)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : फ़र्ज़ से मुराद नमाज़े पंजगाना है मअ़ सुनने मुअक्कदा और वित्र के, और रात की नमाज़ से मुराद तहज्जुद है या'नी फ़राइज़, वित्र और सुनने मुअक्कदा के बा'द दरजा नमाज़े तहज्जुद का है। क्यूं न हो कि इस नमाज़ में मशक़्क़त भी ज़ियादा है और ख़ुसूसी हुज़ूर भी ग़ालिब, येह नमाज़ हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर फ़र्ज़ थी, रब तआ़ला फ़रमाता है

وَمِنَ الَّیۡلِ فَتَهَجَّدۡ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ

(پ۱۵،بنی اسرائیل:۷۹)

﴿***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और रात के कुछ ह़िस्से में तहज्जुद करो येह ख़ास तुम्हारे लिये ज़ियादा है*﴾

रब तआ़ला ने तहज्जुद पढ़ने वालों के बड़े फ़ज़ाइल बयान फ़रमाए :

تَتَجَافٰی جُنُوۡبُهُمۡ عَنِ الۡمَضَاجِعِ

(پ۲۱،السجدۃ:۱۶)

﴿***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाबगाहों से*﴾

और फ़रमाता है :

وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا ﴿٦٤﴾ (پ١٩،الفرقان:٦٤)

﴾*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :* और वोह जो रात काटते हैं अपने रब के लिये सजदे और क़ियाम में﴿

वग़ैरा । फ़क़ीर की वसिय्यत है कि हर मुसलमान हमेशा तहज्जुद पढ़े और इस नमाज़ का सवाब हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हदिय्या कर दिया करे बल्कि उन्ही की त़रफ़ से अदा किया करे, اِنْ شَآءَالله (عَزَّوَجَلَّ) वहां से बहुत कुछ मिलेगा । (मिरआतुल मनाजीह़, 3/180)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(9) तुम सब में बेहतर वोह है जो लोगों से कुछ क़बूल न करे

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : خَيْرُكُمْ مَنْ لَمْ يَقْبَلْ مِنَ النَّاسِ شَيْئًا तुम सब में बेहतर वोह है जो लोगों से कुछ क़बूल न करे ।

(فردوس الا خبار،١/ ٣٦١ ، حديث : ٢٦٧٢)

अल्लाह तआला का पसन्दीदा बन्दा

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, महबूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ परहेज़गार बे नियाज़ और पोशीदा बन्दे को पसन्द फ़रमाता है ।

(مسلم ، كتاب الزهد والرقائق ، ص١٥٨٥ ، حديث : ٢٩٦٥)

जिस मुसलमान में तीन सिफ़्तें हों वोह ख़ुदा तआ़ला को बड़ा प्यारा है

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : जिस मुसलमान में तीन सिफ़तें हों वोह ख़ुदा तआ़ला को बड़ा प्यारा है : मुत्तक़ी हो या'नी गुनाहों से बचता हो, और अल्लाह (व) रसूल के अह़काम पर अ़मल करता हो, ग़नी या'नी लोगों से बे परवाह हो। ख़याल रहे कि अल्लाह तआ़ला मुत्तक़ी बन्दे को लोगों से बे परवाही नसीब फ़रमाता है, जो उस के दरवाज़े पर झुका रहे उसे दूसरे दरवाज़ों पर जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। मज़ीद फ़रमाते हैं : ख़फ़ी ब मा'ना लोगों में छुपा हुवा या'नी वोह लोगों में अपनी शोहरत नहीं चाहता हर नेकी छुप कर करता है, ख़ुद भी गुमनाम रहने की कोशिश करता कि इसी में आ़फ़िय्यत व आराम है। ख़याल रहे कि बा'ज़ बन्दों के लिये ख़ल्वत अच्छी है बा'ज़ के लिये जल्वत बेहतर, आ़बिदों के लिये ख़ल्वत बेहतर है आ़लिमों के लिये जल्वत अच्छी ताकि लोग उन से फ़ैज़ लें लिहाज़ा इस ह़दीस की बिना पर येह नहीं कह सकते कि ह़ज़राते ख़ुलफ़ाए राशिदीन और दूसरे मश्हूर उ़लमा व औलिया ह़त्ता कि हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अल्लाह के मह़बूब बन्दे हैं मगर वोह छुपे हुवे नहीं क्यूंकि उन ह़ज़रात ने ख़ुद अपने को अपनी कोशिश से मश्हूर नहीं किया, उन की येह शोहरत अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से है, नीज़ उन ह़ज़रात के लिये शोहरत ही ज़रूरी थी, सूरज छुपने के लिये नहीं पैदा हुवा। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/96)

अल्लाह तआला की महब्बत कैसे हासिल की जाए ?

एक शख़्स ने रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे कोई ऐसा अ़मल बताइये, जिसे मैं करूं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से महब्बत फ़रमाए और लोग भी मुझ से महब्बत करें। इरशाद फ़रमाया : दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार कर लो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम से महब्बत फ़रमाएगा और लोगों के माल से बे नियाज़ हो जाओ लोग तुम से महब्बत करने लगेंगे।

(ابن ماجه ، كتاب الزهد ، باب الزهد فی الدنيا ، ٤/٤٢٢ ، حديث : ٤١٠٢)

हिकायत : 16 तोहफ़ा क़बूल न किया

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से किसी शख़्स ने अ़र्ज़ की : ऐ अबू इस्हाक़ ! मैं चाहता हूं कि आप मुझ से तोहफ़े में येह जुब्बा क़बूल फ़रमा लें। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इरशाद फ़रमाया : अगर तुम ग़नी हो तो मैं रख लेता हूं और अगर तुम फ़क़ीर हो तो मैं मा'ज़िरत ख़्वाह हूं। उस शख़्स ने कहा : मैं ग़नी हूं। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : तुम्हारे पास कितना माल है ? अ़र्ज़ की : दो हज़ार दीनार। पूछा : अगर तुम्हारे पास चार हज़ार दीनार हो जाएं तो ख़ुशी होगी ? उस ने कहा : जी हां ! क्यूं नहीं। येह सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : फिर तो तुम फ़क़ीर हुवे, और तोहफ़ा क़बूल करने से इन्कार कर दिया।

(عيون الاخبار ، جزء٢ ، ١/٣٩٠)

हिकायत : 17 ख़ुरासानी तह़ाइफ़ वापस कर दिये

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के मुतअ़ल्लिक़ मरवी है कि एक दिन आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपनी मजलिस बरख़ास्त करने के बा'द उठे तो ख़ुरासान के एक शख़्स ने ख़िदमत में ह़ाज़िर होने की इजाज़त त़लब की और आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में एक थैली पेश की जिस में पांच हज़ार दिरहम थे, नीज़ अपने थैले से ख़ुरासान के ही बने हुवे रेशम के इन्तिहाई बारीक दस अ़दद कपड़े निकाल कर पेश किये तो ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने पूछा : येह क्या है ? अ़र्ज़ करने लगा : ऐ अबू सईद ! येह दिरहम ख़र्च के लिये हैं और येह कपड़े पहनने के लिये हैं। तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे मुआ़फ़ फ़रमाए, येह कपड़े और दिरहम अपने पास ही रखो, हमें इन की कोई ह़ाजत नहीं। इस लिये कि जो शख़्स मेरी त़रह़ की मजलिस में बैठे और लोगों से इस जैसी अश्या क़बूल करे तो क़ियामत के दिन वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस ह़ाल में मिलेगा कि उस का कोई ह़िस्सा न होगा। **(قوت القلوب،باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا۔الخ،۱/۲۴۹)**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(10) तुम सब में बेहतरीन वोह हैं जो पाकीज़ा दिल सच्ची ज़बान वाले हैं

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : लोगों में बेहतरीन वोह हैं जो क़ल्बे मह़मूम और सच्ची ज़बान के मालिक हैं, जब क़ल्बे मह़मूम के बारे में पूछा गया तो सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस से मुराद वोह दिल है जो सरकशी, ह़सद और दीगर गुनाहों से पाक हो,

अ़र्ज़ की गई : ऐसा दिल किस का हो सकता है ? रह़मते कौनैन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स दुन्या से नफ़रत और आख़िरत से मह़ब्बत करे, फिर अ़र्ज़ की गई : ऐसा शख़्स कौन हो सकता है ? फ़रमाया : वोह मोमिन जो हुस्ने अख़्लाक़ का मालिक हो ।

(شعب الایمان ،باب فی حفظ اللسان،٤/ ٢٠٥ ، حدیث: ٤٨٠٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा हुस्ने अख़्लाक़ बहुत सारी सआ़दतों की चाबी है जैसा कि इस ह़दीसे पाक में बयान किया गया कि हुस्ने अख़्लाक़ जहां बहुत सारे कबीरा गुनाहों से पाकीज़ा रहने का सबब है वहां हुस्ने अख़्लाक़ दुन्या से नफ़रत और आख़िरत की मह़ब्बत का भी ज़रीआ़ है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें सच्ची ज़बान और क़ल्बे मह़मूम जैसी ने'मत अ़ता फ़रमा कर अपने बेहतरीन बन्दों में शामिल फ़रमाए ।

नापाक दिल कुर्बे इलाही के क़ाबिल नहीं

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : हर चीज़ का कूड़ा कचरा मुख़्तलिफ़ होता है । दिल का कूड़ा येह चीज़ें हैं जिन से दिल मैला होता है, फिर जैसे नापाक बदन उस मस्जिद में आने के क़ाबिल नहीं ऐसे ही नापाक दिल मस्जिदे कुर्बे इलाही के क़ाबिल नहीं,

रब तआ़ला फ़रमाता है :

اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿۸۹﴾

(پ١٩،الشعراء:٨٩)

*(तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मगर वोह जो **अल्लाह** के हुज़ूर ह़ाज़िर हुवा सलामत दिल ले कर)*

(मिरआतुल मनाजीह, 7/50)

क़बूलिय्यते दुआ का राज़

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ह़लाल कमाई से इ़बादात में लज़्ज़त, दिल में बेदारी, आंखों में तरी, दुआ़ में क़बूलिय्यत पैदा होती है। जो बन्दा मक्बूलुद्दुआ़ बनना चाहे वोह अक्ले ह़लाल और सिद्क़े मक़ाल या'नी ग़िज़ा ह़लाल और सच्ची ज़बान रखे, ह़लाल कमाई वोह जो ह़लाल ज़रीओ़ं से आए। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/95)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(11) बेहतरीन शख़्स वोह है जिस का अख़्लाक़ अच्छा है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाया करते थे : اِنَّ مِنْ خِيَارِكُمْ اَحْسَنَكُمْ اَخْلَاقًا तुम में से बेहतरीन शख़्स वोह है जिस का अख़्लाक़ अच्छा है।

(بخاری، کتاب المنا قب،باب صفة النبی،٢/٤٨٩حدیث:٣٥٥٩)

बेहतरीन अख़्लाक़ वाला कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم बयान करते हैं कि साह़िबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें दुन्या व आख़िरत के सब से बेहतरीन अख़्लाक़ वाले के बारे में न बताऊं ? जो तुम से तअ़ल्लुक़ तोड़े तुम उस से तअ़ल्लुक़ जोड़ो और जो तुम्हें मह़रूम करे उस को अ़त़ा करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे उसे मुआ़फ़ कर दो। (المعجم الاوسط للطبرانی،٤/١٦٠حدیث:٥٥٦٧)

उम्रें दराज़ और अख़्लाक़ अच्छे होना बेहतरी की निशानी है

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम में से बेहतरीन की ख़बर न दूं ? सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ! फ़रमाया : तुम में बेहतर वोह हैं जिन की उ़म्रें दराज़ और अख़्लाक़ अच्छे हों । (مسند احمد،۳/۳٦۸،حدیث:۲۹٤٦)

हिकायत : 18 लम्बी उ़म्र और जन्नत

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान फ़रमाते हैं : कहीं दूर दराज़ से दो शख़्स हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवे और दोनों एक साथ ईमान लाए उन में एक तो निहायत इ़बादत गुज़ार बहुत मेह़नत करने वाला था दूसरा उस से कम, पहला शख़्स एक जिहाद में शहीद हो गया दूसरा शख़्स उस के एक साल बा'द तक ज़िन्दा रहा । ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि बा'द में फ़ौत होने वाला शख़्स जन्नत में पहले दाख़िल कर दिया गया, मुझे इस पर बड़ा तअ़ज्जुब हुवा । सुब्ह़ हुई तो येह बात सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या वोह शहीद के बा'द एक साल तक ज़िन्दा नहीं रहा ? क्या उस ने शहीद के बा'द रमज़ान के रोज़े नहीं रखे ? साल में इतने इतने सजदे अदा नहीं किये ? सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : क्यूं नहीं ? रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : फिर उन दोनों के दरमियान ज़मीनो आस्मान की दूरी क्यूं न हो ।

(ابن ماجہ،کتاب تعبیر الرؤیا،باب تعبیر الرؤیا،٤/۳۱۳حدیث:۳۹۲۵)

लम्बी उ़म्र और रिज़्क़ में कुशादगी पाने का मदनी नुस्ख़ा

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अपने रिज़्क़ में कुशादगी और उ़म्र में इज़ाफ़ा पसन्द करता है उसे चाहिये कि वोह अपने रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ जोड़े रखे। (مسلم،کتاب البر والصلة،با ب صلة،ص ١٣٨٤ حديث:٢٥٥٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें नेकियों भरी ज़िन्दगी अ़ता फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰلهٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(12) इस्लाम में बेहतरीन कौन ?

सरकारे मदीनए मुनव्वरा, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : خِيَارُكُمْ فِى الْجَاهِلِيَّةِ خِيَارُكُمْ فِى الْاِسْلَامِ اِذَا فَقُهُوْا या'नी तुम में से जो जाहिलिय्यत में बेहतर थे वोह इस्लाम में भी बेहतरीन हैं जब कि आ़लिम हो जाएं। (بخاری،کتاب التفسير،٣/٢٤٩ حديث:٤٦٨٩)

अफ़्ज़लिय्यत की चार सूरतें

अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِى इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : यहां बेहतरी की चार सूरतें हैं, (1) जो शख़्स दौरे जाहिलिय्यत में भी अच्छी सिफ़ात मसलन : उस की त़बीअ़त

में नर्मी थी और इस्लाम लाने के बा'द भी शरई अह़कामात बजा ला कर अख़्लाक़िय्यात को बर क़रार रखा और इस के साथ साथ उस ने दीन का इ़ल्म भी ह़ासिल किया तो ऐसा शख़्स (2) उस आदमी के मुक़ाबले में अच्छा और बेहतर है जो इस्लाम लाने से पहले भी अच्छे अख़्लाक़ वाला हो और इस्लाम लाने के बा'द भी मगर इ़ल्मे दीन से मह़रूम हो । (3) वोह शख़्स के जो इस्लाम लाने से पहले अच्छे अख़्लाक़ से मुज़य्यन न था मगर इस्लाम ने उसे अच्छे अख़्लाक़ और इ़ल्मे दीन से मुज़य्यन किया ऐसा शख़्स (4) उस शख़्स के मुक़ाबले में अफ़्ज़ल और बेहतर है जो इस्लाम लाने से पहले अच्छे अख़्लाक़ वाला न हो मगर इस्लाम लाने के बा'द इस दौलत से आरास्ता हो जाए मगर इ़ल्मे दीन से मह़रूम रहे, क्यूंकि दीन का त़ालिबे इ़ल्म उस शरीफ़ आदमी से कहीं ज़ियादा दरजा रखता है जो ग़ैरे आ़लिम हो ।

(فتح الباری، کتاب احادیث الانبیاء،باب ام کنتم شھداء ۔الخ،۷/۳۳۹تحت الحدیث:۳۳۷٤ بتصرف)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(13) मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग उ़लमा हैं

हु़ज़ूरे पाक, साहि़बे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने खुश गवार है : मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग उ़लमा हैं और इन उ़लमा में से बेहतरीन वोह उ़लमा हैं जो नर्म त़बीअ़त वाले हैं, ख़बरदार ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अनपढ़ का एक गुनाह मुआ़फ़ करने से पहले आ़लिम के चालीस गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमाता है, ख़बरदार ! नर्म त़बीअ़त वाला आ़लिम इस शान से क़ियामत में आएगा कि उस का नूर उस के

लिये इतनी रौशनी कर देगा कि वोह मशरिक़ो मग़रिब के माबैन चलने पर क़ादिर होगा। (حلیۃ الاولیاء، ۸/ ۲۰۲، حدیث: ۱۱۸۷۷)

उ़लमा सितारों की मिस्ल हैं

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : "बेशक उ़लमा की मिसाल ज़मीन पर ऐसी ही है जैसे आस्मान पर सितारे जिन से ख़ुश्की और तरी में रहनुमाई होती है, पस जब सितारे मिट जाएं तो क़रीब है कि राह चलने वाले भटक जाएं।" (مُسنَدِ امام احمد، ٤/ ٣١٤، حدیث: ١٢٦٠٠)

हिकायत : 19 इ़ल्म का शो'बा इख़्तियार किया

जलीलुल क़द्र ताबेई ह़ज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबी जा'द عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَحَد फ़रमाते हैं : मुझे मेरे मालिक ने तीन सौ दिरहम में ख़रीद कर आज़ाद कर दिया, मैं ने सोचा : कौन सा काम करूं ? बिल आख़िर इ़ल्म के शो'बे को इख़्तियार किया, एक साल भी न गुज़रा था कि शहर का ह़ाकिम मेरी मुलाक़ात को आया लेकिन मैं ने उसे इजाज़त न दी। (اِتحافُ السّادَۃ للزّبیدی، ١/ ١٤٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इ़ल्मे दीन के फ़ज़ाइल की क्या बात है ! सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : इ़ल्म ऐसी चीज़ नहीं जिस की फ़ज़ीलत और ख़ूबियों के बयान करने की ह़ाजत हो सारी दुन्या जानती है कि इ़ल्म बहुत बेहतर चीज़ है इस का ह़ासिल करना तुग़राए इम्तियाज़ (या'नी बुलन्दी की अ़लामत) है। येही वोह चीज़ है कि इस से इन्सानी ज़िन्दगी कामयाब और ख़ुशगवार

होती है और इसी से दुन्या व आख़िरत सुधरती है। (इस से) वोह इल्म मुराद है जो कुरआनो ह़दीस से ह़ासिल हो कि येही इल्म वोह है जिस से दुन्या व आख़िरत दोनों संवरती हैं और येही इल्म ज़रीअ़ए नजात है और इसी की कुरआनो ह़दीस में ता'रीफ़ें आई हैं और इसी की ता'लीम की त़रफ़ तवज्जोह दिलाई गई है। कुरआने मजीद में बहुत से मवाक़ेअ़ पर इस की ख़ूबियां सराह़तन या इशारतन बयान फ़रमाई गईं।

(बहारे शरीअ़त, 3/618)

जाहिल भी आ़लिम कहे जाने पर ख़ुश होता है

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم इरशाद फ़रमाते हैं : इल्म की शराफ़त व बुज़ुर्गी के लिये येह बात काफ़ी है कि जो शख़्स अच्छी त़रह़ इल्म नहीं जानता वोह भी इस का दा'वा करता और अपनी त़रफ़ इल्म की निस्बत किये जाने पर ख़ुश होता है जब कि जहालत की मज़म्मत के लिये इतना काफ़ी है कि जो शख़्स जहालत में मुब्तला हो वोह भी इस से बराअत ज़ाहिर करता है।

(المجموع شرح المهذب،١/١٩)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(14) बेहतर वोह शख़्स है जो अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ बुलाए

सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : خِيَارُ أُمَّتِيْ مَنْ دَعَا إِلَى اللّٰهِ تَعَالٰى وَحَبَّبَ عِبَادَهُ إِلَيْهِ या'नी मेरी उम्मत में बेहतर वोह शख़्स है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाए और लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महबूब बनाए।

(الجامع الصغير،ص٢٤٣، حديث : ٣٩٧٩)

हज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाने से मुराद तौह़ीद, फ़रमां बरदारी और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी के ह़ुसूल की त़रफ़ दा'वत देना है, और लोगों को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब बनाने से मुराद येह है कि वोह लोगों को तक़्वा, दुन्या से बे रग़बती और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त सिखाए उस नेक बन्दे की निशानी येह है कि उन तमाम नेकियों को मह़ज़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये बजा लाए और शोहरत को अपने पास भी न आने दे।

(فيض القدير، ٣/٦١٧، تحت الحديث : ٣٩٧٩)

नेकी की दा'वत और सायए अ़र्श

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं कि : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तौरात शरीफ़ में हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की त़रफ़ वह़्य फ़रमाई : ऐ मूसा ! जिस ने नेकी का हुक्म दिया, बुराई से मन्अ़ किया और लोगों को मेरी इत़ाअ़त की त़रफ़ बुलाया तो वोह दुन्या और क़ब्र में मेरा मुक़र्रब होगा और क़ियामत के दिन उसे मेरे अ़र्श का साया नसीब होगा।

(حلية الاولياء، كعب الاحبار، ٦/ ٣٦، رقم : ٧٧١٦)

हिकायत : 20 नेकी की ख़ामोश दा'वत

हज़रते सय्यिदुना इमाम ह़सन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه एक शादी में मदऊ़ थे। वहां आप رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه को चांदी के बरतन में ह़ल्वा पेश किया

गया, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने वोह बरतन लिया और ह़ल्वा एक रोटी पर पलट लिया और खाने लगे। येह देख कर एक शख़्स बोला : येह नेकी की ख़ामोश दा'वत है। (منهاج القاصدين ، ص ١٣٠، مطبوعة : دار البيان دمشق)

मस्अला : सोने चांदी के बरतन में खाना पीना और इन की प्यालियों से तेल लगाना या इन के इत्रदान से इत्र लगाना या इन की अंगेठी से बख़ूर करना (या'नी धूनी लेना) मन्अ़ है और येह मुमानअ़त मर्द व औ़रत दोनों के लिये है। (बहारे शरीअ़त, 3/395)

नेकी की दा'वत और रह़मते ख़ुदावन्दी

रह़मते कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : नेकी की त़रफ़ राहनुमाई करने वाला भी नेकी करने वाले की त़रह़ है।

(ترمذی ، کتاب العلم ، باب ما جاء الدال ...الخ ، ٤/٣٠٥ ، حدیث : ٢٦٧٩)

हिकायत : 21 इस्लाह़ का मह़ब्बत भरा मिसाली अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन ज़करिय्या ग़लाबी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی फ़रमाते हैं : मैं एक रात ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने आ़इशा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास ह़ाज़िर हुवा वोह नमाज़े मग़रिब की अदाएगी के बा'द मस्जिद से निकल कर अपने घर जाने का इरादा रखते थे, अचानक नशे में मदहोश एक क़ुरैशी नौजवान आप के रास्ते में आया जो एक औ़रत को हाथ से पकड़ कर अपनी त़रफ़ खींच रहा था, औ़रत ने मदद के लिये पुकारा तो लोग उस नौजवान को मारने के लिये जम्अ़ हो गए। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने आ़इशा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस नौजवान को देख कर

पहचान लिया और लोगों से कहा : मेरे भतीजे को छोड़ दो ! फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : ऐ मेरे भतीजे ! मेरे पास आओ ! तो वोह नौजवान शर्मिन्दा होने लगा, तब आप ने आगे बढ़ कर उसे सीने से लगाया फिर उस से फ़रमाया : मेरे साथ चलो ! चुनान्चे, वोह आप के साथ चलने लगा ह़त्ता कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के घर पहुंच गया। आप ने अपने एक ग़ुलाम से फ़रमाया : आज रात इसे अपने पास सुलाओ ! जब इस का नशा दूर हो तो जो कुछ इस ने किया है वोह इसे बता देना और इसे मेरे पास लाने से पहले जाने मत देना। चुनान्चे, जब उस का नशा दूर हुवा तो ख़ादिम ने उसे सारा माजरा बयान किया जिस की वज्ह से वोह बहुत शर्मिन्दा हुवा और रोने लगा और वापस जाने का इरादा किया तो ग़ुलाम ने कहा : ह़ज़रत का हुक्म है कि तुम उन से मिल लो। चुनान्चे, वोह उस नौजवान को आप के पास ले आया, आप ने उस नौजवान की इस्लाह़ करते हुवे फ़रमाया : क्या तुम्हें अपने आप से शर्म नहीं आई ? अपनी शराफ़त से ह़या न आई ? क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा वालिद कौन है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरो ! और जिन कामों में लगे हुवे हो उन्हें छोड़ दो। वोह नौजवान अपना सर झुका कर रोने लगा फिर उस ने अपना सर उठा कर कहा : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अ़ह्द करता हूं जिस के बारे में क़ियामत के दिन मुझ से सुवाल होगा कि आइन्दा कभी मैं नशा नहीं पियूंगा और न ही किसी औ़रत पर दस्त दराज़ी करूंगा और मैं रब तआ़ला की बारगाह में तौबा करता हूं। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : मेरे क़रीब आओ। फिर आप ने उस के सर पर बोसा दे कर फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! तू ने तौबा कर के बहुत अच्छा

किया। इस के बा'द वोह नौजवान आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की मजलिसों में शरीक होने लगा और आप से ह़दीस शरीफ़ लिखने लगा। येह आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की नर्मी की बरकत थी। फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : लोग नेकी का हुक्म देते और बुराई से मन्अ़ करते हैं हालांकि उन का मा'रूफ़ मुन्कर बन जाता है लिहाज़ा तुम अपने तमाम उमूर में नर्मी को इख़्तियार करो कि इस से तुम अपने मक़ासिद को पा लोगे।

(احیاء علوم الدین، کتاب الأمر بالمعروف والنهی عن المنکر، بیان آداب المحتسب، ۲/۴۱۱)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(15) तुम में से बेहतर वोह है जो नमाज़ में नर्म कन्धे वाला हो

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : خِيَارُكُمْ اَلْيَنُكُمْ مَنَاكِبَ فِی الصَّلٰوةِ या'नी : तुम में से बेहतर वोह है जो नमाज़ में नर्म कन्धे वाला हो।

(ابوداؤد، کتاب الصلوة، باب تسوية الصفوف، ۱/۲۶۷ حدیث: ۶۷۲)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : अगर कोई शख़्स ज़रूरतन एक नमाज़ी को आगे पीछे हटाए तो बे तअम्मुल हट जाए या अगर कोई उसे नमाज़ में सीधा करे तो सीधा हो जाए या अगर कोई सफ़ की कुशादगी बन्द करने के लिये दरमियान में आ कर खड़ा होना चाहे तो येह खड़ा हो जाने दे, बा'ज़ शारेह़ीन ने फ़रमाया कि नर्म कन्धे से इज़्ज़ो इन्किसार, ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ मुराद है मगर पहले मआ़नी ज़ियादा क़वी हैं। (मिरआतुल मनाजीह, 2/187)

अपनी सफ़ें सीधी रखो

शफ़ीउ़ल मुज़्निबीन, अनीसुल ग़रीबीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अपनी सफ़ें सीधी करो कि सफ़ें सीधी करना नमाज़ क़ाइम करने से है।

(بخاری،کتاب الاذان،باب اثم من لم یتم الصفوف،۱/۲۵۷حدیث:۷۲۳)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : रब तआ़ला ने जो फ़रमाया : يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ (پ۱،البقرۃ:۳) ﴾**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नमाज़ क़ाइम रखें।﴿ या फ़रमाया : اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ (پ۱،البقرۃ:۴۳) ﴾**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** नमाज़ क़ाइम रखो।﴿ इस से मुराद है नमाज़ सह़ीह़ पढ़ना और नमाज़ सह़ीह़ पढ़ने में सफ़ का सीधा करना भी दाख़िल है कि इस के बिग़ैर नमाज़ नाक़िस होती है। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/183)

शैत़ान सफ़ों में घुस जाता है

नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपनी सफ़ें सीधी करो, इन में नज़दीकी करो, अपनी गर्दनें मुक़ाबिल रखो, उस की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है कि मैं शैत़ान को सफ़ों की कुशादगी में बकरी के बच्चे की त़रह़ घुसता देखता हूं।

(ابوداؤد،کتاب الصلاۃ،باب تسویۃ الصفوف،۱/۲۶۶حدیث:۶۶۷)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : मा'ना येह हुवे कि नमाज़ की सफ़ें सीधी भी रखो और उन में मिल कर खड़े हो कि एक दूसरे के आपस में कन्धे मिले हों।

मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से **''इन में नज़दीकी करो''** के तह़्त फ़रमाते हैं : सफ़ें क़रीब क़रीब रखो इस त़रह़ कि दो सफ़ों के दरमियान और सफ़ न बन सके या'नी सिर्फ़ सजदे का फ़ासिला रखो, नमाज़े जनाज़ा में चूंकि सजदा नहीं होता इस लिये वहां सफ़ों में इस से भी कम फ़ासिला चाहिये।

मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से **''अपनी गर्दनें मुक़ाबिल रखो''** के तह़्त फ़रमाते हैं : इस त़रह़ कि ऊंचे नीचे मक़ाम पर न खड़े हो, हमवार जगह खड़े हो ताकि गर्दनें बराबर रहें, लिहाज़ा येह जुम्ला मुकर्रर नहीं आगे पीछे न होना ''رَصُّوْا'' में बयान हो चुका था। ख़याल रहे कि गर्दनों का क़ुदरती त़ौर पर ऊंचा नीचा होना मुआ़फ़ है कि बा'ज़ लम्बे और बा'ज़ पस्ता क़द होते हैं।

मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से **''शैत़ान को सफ़ों की कुशादगी में बकरी के बच्चे की त़रह़ घुसता देखता हूं''** के तह़्त फ़रमाते हैं : ख़न्ज़ब शैत़ान जो नमाज़ में वस्वसा डालता है वोह सफ़ की कुशादगी में बकरी के बच्चे की शक्ल में दाख़िल हो कर नमाज़ियों को वस्वसा डालता है। इस से दो मस्अले मा'लूम हुवे : एक येह कि शैत़ान मुख़्तलिफ़ शक्लें इख़्तियार कर सकता है, देखो इस शैत़ान की शक्ल अपनी तो कुछ और है मगर उस

वक़्त बकरी की शक्ल में बन जाता है। दूसरे येह कि रब तआ़ला ने हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को वोह ता़क़त बख़्शी है कि ख़ा़लिक़ (عَزَّوَجَلَّ) की त़रफ़ मुतवज्जेह होते हुवे भी हर मख़्लूक़ पर नज़र रखते हैं। तीसरे येह कि जब शैता़न जैसी ग़ैबी मख़्लूक़ आप की निगाह से ग़ाइब नहीं तो इन्सान आप से कैसे छुप सकते हैं ! (मिरआतुल मनाजीह़, 2/185)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(16) बेहतर वोह हैं जिन को देर से ग़ुस्सा आए और जल्द चला जाए

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

اَلَا وَاِنَّ مِنْھُمْ الْبَطِیْءَ الْغَضَبِ سَرِیْعَ الْفَیْءِ وَمِنْھُمْ سَرِیْعَ الْغَضَبِ سَرِیْعَ الْفَیْءِ فَتِلْكَ بِتِلْكَ اَلَا وَاِنَّ مِنْھُمْ سَرِیْعَ الْغَضَبِ بَطِیْءَ الْفَیْءِ اَلَا وَخَیْرُھُمْ بَطِیْءُ الْغَضَبِ سَرِیْعُ الْفَیْءِ اَلَا وَشَرُّھُمْ سَرِیْعُ الْغَضَبِ بَطِیْءُ الْفَیْءِ

या'नी और आगाह रहो कि (लोगों में) बा'ज़ वोह हैं जिन को देर से ग़ुस्सा आता है जल्दी ख़त्म हो जाता है और बा'ज़ को जल्दी ग़ुस्सा आता है जल्दी ख़त्म हो जाता है तो येह उस का बदला है, सुन लो ! इन में से बा'ज़ को जल्दी ग़ुस्सा आता है देर से उतरता है, सुन लो ! इन में से बेहतर वोह है जिन को देर से ग़ुस्सा आए और जल्दी ख़त्म हो जाए और बुरे वोह हैं जिन को जल्दी ग़ुस्सा आए देर से ज़ाइल हो।

(ترمذی، کتاب الفتن، باب ما اخبر النبی اصحابہ۔۔۔الخ، ۴/۸۱، حدیث:۲۱۹۸)

दिल को ईमान से भर देगा

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे पाक है मोमिन के गुस्सा पी लेने से बढ़ कर कोई घूंट मेरे नज़दीक ज़ियादा पसन्दीदा नहीं और जो **अल्लाह** की रिज़ा के लिये गुस्सा पी ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल को ईमान से भर देगा।

(مسند احمد، ۱/۷۰۰، حدیث:۳۰۱۷)

गुस्सा पीने का सवाब

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : किसी बन्दे ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक कोई घूंट उस गुस्से के घूंट से बेहतर न पिया जिसे बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ाजूई के लिये पी ले।

(ابن ماجه، ابواب الزهد، باب الحلم، ٤/٤٦٣ حدیث:٤١٨٩)

गुस्से का घूंट कड़वा ज़रूर है मगर इस का फल बहुत मीठा है

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : जो शख़्स मजबूरी की वज्ह से नहीं बल्कि **अल्लाह** तआला की रिज़ाजूई के लिये अपना गुस्सा पी ले और क़ादिर होने के बा वुजूद गुस्सा जारी न करे वोह **अल्लाह** के नज़दीक बड़े दरजे वाला है। गुस्सा पीना है तो कड़वा मगर इस का फल बहुत मीठा है। गुस्से को घूंट फ़रमाया क्यूंकि जैसे कड़वी चीज़ ब मुश्किल तमाम घूंट घूंट कर के पी जाती है ऐसे ही गुस्सा पीना मुश्किल है। (मिरआतुल मनाजीह, 6/664)

हिकायत : 22 थप्पड़ मुआ़फ़ किया मगर कब ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'मर बिन राशिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَاحِد बयान करते हैं कि एक शख़्स ने ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन दिआ़मा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साहिब ज़ादे को ज़ोरदार थप्पड़ मारा। आप ने ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन अबी बुर्दा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से उस के ख़िलाफ़ मदद चाही, लेकिन उन्हों ने कोई तवज्जोह न दी। चुनान्चे, आप ने "क़सरी" से शिकायत की तो उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन अबी बुर्दा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को लिखा : आप ने अबू ख़त्ताब ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन दिआ़मा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ इन्साफ़ नहीं किया। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन अबी बुर्दा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने थप्पड़ मारने वाले को बुलाया और बसरा के सरदारों को भी बुलाया। वोह ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन दिआ़मा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से उस शख़्स की सिफ़ारिश करने लगे, लेकिन आप ने सिफ़ारिश क़बूल न की और बेटे से फ़रमाया : तुम भी उसी त़रह़ इसे थप्पड़ मारो जिस त़रह़ इस ने तुम्हें मारा था ! और फ़रमाया : बेटा ! आस्तीनें ऊपर कर लो ! और हाथ बुलन्द कर के ज़ोरदार थप्पड़ मारो। चुनान्चे, बेटे ने आस्तीनें ऊपर कीं और थप्पड़ मारने के लिये हाथ बुलन्द किया तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस का हाथ पकड़ लिया और फ़रमाया : हम ने रिज़ाए इलाही के लिये इसे मुआ़फ़ किया, क्यूंकि कहा जाता है कि मुआ़फ़ करना क़ुदरत के बा'द ही होता है।

(حلية الاولياء، قتادة بن دعامة، ٢/ ٣٨٦، رقم: ٢٦٦١)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 23 शैत़ान की गेंद

ह़ज़रते सय्यिदुना वह्ब बिन मुनब्बेह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक राहिब अपनी इ़बादत गाह में इ़बादत में मसरूफ़ रहता था। शैत़ान ने उसे गुमराह करने का इरादा किया लेकिन नाकाम रहा, फिर उस ने राहिब को इ़बादत गाह का दरवाज़ा खोलने के लिये कहा मगर फिर भी राहिब ख़ामोश रहा तो शैत़ान ने उस से कहा : अगर मैं चला गया तो तुझे बहुत अफ़्सोस होगा। राहिब फिर भी ख़ामोश रहा, यहां तक कि शैत़ान ने कहा : मैं मसीह़ (या'नी ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام) हूं। राहिब ने उसे जवाब दिया : अगर आप मसीह़ (عَلَیْہِ السَّلَام) हैं तो क्या आप ने हमें इ़बादत में कोशिश करने का हुक्म नहीं दिया ? और क्या आप ने हम से क़ियामत का वा'दा नहीं किया ? आज अगर आप हमारे पास कोई और चीज़ ले कर आए हैं तो हम आप की बात कैसे मान लें ? तो बिल आख़िर शैत़ान ने ख़ुद ही बता दिया : मैं शैत़ान हूं और तुझे गुमराह करने आया था मगर न कर सका। इस के बा'द शैत़ान ने राहिब से कहा : तुम मुझ से जिस चीज़ के बारे में चाहो सुवाल कर सकते हो। तो राहिब ने कहा : मैं तुझ से कुछ नहीं पूछना चाहता। जब शैत़ान मुंह फेर कर जाने लगा तो राहिब ने उस से कहा : क्या तू सुन रहा है ? उस ने कहा : हां ! क्यूं नहीं। तो राहिब ने उस से पूछा : मुझे बनी आदम की उन आ़दतों के बारे में बता जो उन के ख़िलाफ़ तेरी मददगार हैं ? शैत़ान बोला : "वोह ग़ुस्सा है, आदमी जब ग़ुस्से में होता है तो मैं उसे इस त़रह़ उलट पलट करता हूं जैसे बच्चे गेंद से खेलते हैं।"

(الزواجر،الباب الاول،۱/۱۰۷)

हिकायत : 24 गुस्से में गाड़ी तोड़ डाली

गुस्से में आ कर घर की छोटी मोटी चीज़ें तोड़ देने वाले लोगों के बारे में तो आप ने सुना ही होगा ताहम मुल्के चीन का एक शख़्स अपनी लाखों की गाड़ी में होने वाली बार बार की ख़राबी से इतना तंग आ गया कि उस ने ख़ुद ही अपनी क़ीमती गाड़ी तबाह करवा दी। येह शख़्स अपनी सात लाख डॉलर मालिय्यत की गाड़ी से उस वक़्त बेज़ार आ गया जब उस में होने वाली ख़राबी मिकेनिक की बार बार की कोशिशों के बा वुजूद भी दुरुस्त न हो सकी तो उस जज़्बाती शख़्स ने अपना गुस्सा निकालने का अनोखा त़रीक़ा अपनाया और नौजवानों के एक गिरौह को हथोड़े और डन्डे दे कर क़ीमती गाड़ी अपनी आंखों के सामने टुकडे टुकड़े करवा दी।

गुस्सा निकलने का क्लब

इस दुन्या में अह़मक़ों की कमी नहीं, इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि एक ख़बर के मुत़ाबिक़ न्यूयॉर्क (अमरीका) में एक ऐसे डिस्ट्रिक्शन क्लब का आग़ाज़ कर दिया गया है जिस के रुक्न बन कर आप महंगी और क़ीमती अश्या तोड़ सकते हैं और अपना गुस्सा शाहाना अन्दाज़ में निकाल सकते हैं। इस अनोखी सर्विस के तह़्त आप महंगी गाड़ियों, क़ीमती क्रोकरी और फ़र्नीचर से ले कर जदीद टेक्नॉलोजी की अश्या जैसे लेपटॉप और कम्प्यूटर पर भी अपना गुस्सा निकाल सकते हैं। सिर्फ़ येही नहीं बल्कि आप किस हथयार से उन्हें तोड़ना

चाहते हैं, इस का भी ख़ुसूसी इन्तिज़ाम है और यहां आप को कुल्हाडी से ले कर हथोडी तक फ़राहम की जा सकती है। बस आप को क्या तोड़ना है और किस से तोड़ना है ? इस के लिये मत़लूबा रक़म फ़राहम कीजिये और अपना ग़ुस्सा उन्हें तबाह कर के निकाल दें।

ग़ुस्से के वक़्त की दुआ

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को जब ग़ुस्सा आता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते : यूं कहो :

اَللّٰھُمَّ رَبَّ مُحَمَّدٍ اِغْفِرْلِی ذَنْبِی، وَاَذْھِبْ غَیْظَ قَلْبِی،وَاَجِرْنِی مِنْ مُضِلَّاتِ الْفِتَنِ

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! ऐ मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रब ! मेरे गुनाह बख़्श दे और मेरे दिल के ग़ुस्से को ख़त्म फ़रमा और मुझे गुमराह करने वाले ज़ाहिरी व बात़िनी फ़ितनों से मह़फ़ूज़ फ़रमा।

(عمل الیوم واللیلۃ لابن السنی،باب ما یقول اذا غضب،ص٤٠٤،حدیث٤٥٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़ुस्से की आ़दत निकालने के दो वज़ीफ़े

(1) चलते फिरते कभी कभी یَا اَللّٰہُ،یارَحْمٰنُ،یا رَحِیْمُ कह लिया करे।

(2) चलते फिरते یا اَرْحَمَ الرَّاحِمِین पढ़ता रहे।

*(ग़ुस्से के बारे में मज़ीद मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना के रिसाले "**ग़ुस्से का इलाज**" का मुत़ालआ़ बहुत मुफ़ीद है।)*

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(17) सब से बेहतरीन दोस्त

दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : خَيْرُ الْاَصْحَابِ عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرُهُمْ لِصَاحِبِهٖ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बेहतरीन रफ़ीक़ वोह है जो अपने दोस्तों के लिये ज़ियादा बेहतर हो।

(ترمذی، ابواب البر والصلة، ماجاء فی حق الجوار، ۳۷۹/۳ حدیث: ۱۹۵۱)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : लफ़्ज़ ''साह़िब'' का इत़्लाक़ छोटे, बड़े और बराबर तीनों उ़म्र वालों पर होता है, इसी त़रह़ सोह़बत चाहे दीनी हो या दुन्यावी, सफ़र में हो या ह़ालते इक़ामत में, इन तमाम साह़िबों, दोस्तों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक उस का सवाब और दरजा ज़ियादा है जो अपने दोस्त की ज़ियादा ख़ैर ख़्वाही करे, अगर्चे उस का दोस्त दीगर ख़स्लतों में उस से ज़ियादा मर्तबा रखता हो।

(فیض القدیر، ۶۲۴/۳ تحت الحدیث: ۳۹۹۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

खुशी दाख़िल करने का निराला अन्दाज़

ह़ज़रते सय्यिदुना मुवर्रिक़ इ़जली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى बड़े अह़सन अन्दाज़ में अपने दोस्तों के दिल में ख़ुशी दाख़िल किया करते थे, अपने

किसी दोस्त के पास माल की थैली रख कर उस से फ़रमाते : मेरे वापस आने तक इसे अपने पास रखो, फिर उसे पैग़ाम भेज देते कि येह तुम्हारे लिये ह़लाल है। (المستطرف، ١٠/٢٧٤)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दोस्ती किस से करनी चाहिये ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें ऐसों से दोस्ती करनी चाहिये जिन की दोस्ती हमें दुन्या और आख़िरत दोनों में फ़ाइदा दे, पारह 25 सूरतुज़्ज़ुख़रुफ़ की आयत नम्बर 67 में इरशाद होता है :

اَلْاَخِلَّآءُ یَوْمَىٕذٍۭ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِیْنَ ﴿۶۷﴾ (پ٢٥،الزخرف:٦٧)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़गार।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی इस आयत के तह़्त लिखते हैं : या'नी दीनी दोस्ती और वोह मह़ब्बत जो **अल्लाह** तआ़ला के लिये है बाक़ी रहेगी। ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से इस आयत की तफ़्सीर में मरवी है, आप ने फ़रमाया : दो दोस्त मोमिन और दो दोस्त काफ़िर, मोमिन दोस्तों में एक मर जाता है तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करता है या रब ! फ़ुलां मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमां बरदारी का और नेकी करने का हुक्म करता था और मुझे बुराई से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर होना है, या रब ! उस को मेरे

बा'द गुमराह न कर और उस को हिदायत दे जैसी मेरी हिदायत फ़रमाई और उस का इकराम कर जैसा मेरा इकराम फ़रमाया, जब उस का मोमिन दोस्त मर जाता है तो अल्लाह तआ़ला दोनों को जम्अ़ करता है और फ़रमाता है कि तुम में हर एक दूसरे की ता'रीफ़ करे तो हर एक कहता है कि येह अच्छा भाई है, अच्छा दोस्त है, अच्छा रफ़ीक़ है। और दो काफ़िर दोस्तों में से जब एक मर जाता है तो दुआ़ करता है, या रब ! फ़ुलां मुझे तेरी और तेरे रसूल की फ़रमां बरदारी से मन्अ़ करता था और बदी का हुक्म देता था, नेकी से रोकता था और ख़बर देता था कि मुझे तेरे हुज़ूर ह़ाज़िर होना नहीं, तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि तुम में से हर एक दूसरे की ता'रीफ़ करे तो उन में से एक दूसरे को कहता है : बुरा भाई, बुरा दोस्त, बुरा रफ़ीक़। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 909)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है

सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है, लिहाज़ा तुम में से हर एक को चाहिये कि वोह देखे किस से दोस्ती कर रहा है। **(ترمذی، کتاب الزهد، باب٤٥، ٤/١٦٧حديث:٢٣٨٥)**

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : दीन से मुराद

या तो मिल्लत व मज़हब है या सीरत व अख़्लाक़, दूसरे मा'ना ज़ियादा ज़ाहिर हैं या'नी उ़मूमन इन्सान अपने दोस्त की सीरत व अख़्लाक़ इख़्तियार कर लेता है कभी उस का मज़हब भी इख़्तियार कर लेता है लिहाज़ा अच्छों से दोस्ती रखो ताकि तुम भी अच्छे बन जाओ। सूफ़िया फ़रमाते हैं : لَاتُصَاحِبْ اِلَّامُطِيْعاً وَلَا تُخَالِلْ اِلَّا تَقِيّاً या'नी न साथ रहो मगर **अल्लाह** (व) रसूल की फ़रमां बरदारी करने वाले के न दोस्ती करो मगर मुत्तक़ी से।

मुफ़्ती साहिब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه मज़ीद फ़रमाते हैं : किसी से दोस्ताना करने से पहले उसे जांच लो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुत़ीअ़ है या नहीं ! रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۱۹﴾ (پ۱۱، التوبہ:۱۱۹) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और सच्चों के साथ हो ﴾ सूफ़िया फ़रमाते हैं कि इन्सानी त़बीअ़त में अख़्ज़ या'नी ले लेने की ख़ासिय्यत है, ह़रीस की सोह़बत से ह़िर्स, ज़ाहिद की सोह़बत से ज़ोह्दो तक़्वा मिलेगा। ख़याल रहे कि ख़ुल्लत दिली दोस्ती को कहते हैं जिस से मह़ब्बत दिल में दाख़िल हो जाए। येह ज़िक्र दोस्ती व मह़ब्बत का है किसी फ़ासिक़ो फ़ाजिर को अपने पास बिठा कर मुत्तक़ी बना देना तब्लीग़ है, हुज़ूरे अन्वर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने गुनहगारों को अपने पास बुला कर मुत्तक़ियों का सरदार बना दिया।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/599)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ासिक़ की सोह़बत से बचो

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बिन अह़मद कातिब رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه का फ़रमान है : फ़ासिक़ो फ़ाजिर लोगों की सोह़बत एक बीमारी है और इस की दवा उन से दूरी इख़्तियार करना है। (المستطرف، ١/٢٤٨)

हिकायत : 25 मेरे दोस्त को मुझ से मांगना पड़ा

एक शख़्स अपने दोस्त के घर गया और दरवाज़ा खटखटाया। दोस्त ने बाहर निकल कर ह़ाजत दरयाफ़्त की तो उस ने कहा कि मुझ पर इतना इतना क़र्ज़ है। दोस्त ने घर के अन्दर जा कर उसे उतनी रक़म ला दी जो उस पर क़र्ज़ थी और फिर घर के अन्दर जा कर रोने लगा। उस की ज़ौजा ने कहा कि अगर उस की ज़रूरत को पूरा करना आप पर गिरां था तो फिर कोई उ़ज़्र क्यूं नहीं कर दिया ? जवाब दिया : मैं इस लिये रो रहा हूं कि मैं ने अपने दोस्त की ख़बरगीरी नहीं की यहां तक कि उसे मेरे दरवाज़े पर आ कर मांगना पड़ा। (المستطرف، ١/٢٧٥)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा मह़बूब

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जब दो दोस्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये मह़ब्बत करते हैं तो उन में से जो अपने साथी से ज़ियादा मह़ब्बत करता है वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा मह़बूब होता है।

(مستدرك، كتاب البر والصلة، باب اذا احب احدكم۔الخ، ٥/٢٣٩ حديث:٧٤٠٣)

हज़रते अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : इन दोनों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक उस दोस्त की ज़ियादा क़द्रो मन्ज़िलत है जो किसी दुन्यवी मतलब के हुसूल के लिये नहीं बल्कि सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये अपने दोस्त से महब्बत करे और उन तमाम हुक़ूक़ को अदा कर के महब्बत को पुख़्ता करे जिस से दोस्ती मज़बूत होती है और इस का उसूल येह है कि अपने दोस्त के लिये वोही पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करता है अगर दोस्ती की येह हालत न हो तो फिर येह दोस्ती नहीं बल्कि मुनाफ़क़त और दुन्या व आख़िरत में वबाल है।

(فیض القدیر ،۵/۵۵۵تحت الحدیث:۷۸۶۷)

येही ईमान है

साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बेशक आदमी के ईमान में से येह भी है कि वोह किसी आदमी से सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करे, उस की महब्बत किसी माल के अतिय्या करने की वज्ह से न हो तो येही ईमान है। **(المعجم الاوسط،۵/۲۴۵حدیث:۷۲۱۴)**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(18) सब से बेहतरीन पड़ोसी

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : خَيْرُ الْجِيْرَانِ عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرُهُمْ لِجَارِهٖ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ

के नज़दीक सब से बेहतरीन पड़ोसी वोह है जो अपने पड़ोसियों के लिये ज़ियादा बेहतर हो।

(ترمذی،ابواب البروالصلة،ماجاء فی حق الجوار،۳/۳۷۹حدیث:۱۹۵۱)

हज़रते अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : हर वोह शख़्स जो अपने पड़ोसी का ज़ियादा ख़ैर ख़्वाह होगा वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से अफ़्ज़ल होगा, इस हदीसे पाक से येह भी मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से बुरा पड़ोसी वोह है जो अपने पड़ोसी के साथ बुरा हो। **(فیض القدیر،۳/۶۲۴تحت الحدیث:۳۹۹۸)**

इस्लाम में पड़ोसी का ख़याल

सरकारे अबद क़रार, शाफ़ेए रोज़े शुमार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस से महब्बत करता है उसे भी दुन्या अता करता है और जिस से महब्बत नहीं करता उसे भी देता है लेकिन दीन सिर्फ़ उसे देता है जिस से महब्बत करता है और जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दीन अता किया पस उस से महब्बत की और उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! कोई बन्दा उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उस का पड़ोसी उस के बवाइक़ से महफ़ूज़ न हो जाए। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! येह बवाइक़ क्या हैं ? तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस का धोका और ज़ुल्म।

(مسند احمد،۲/۳۳حدیث:۳۶۷۲)

पड़ोसी के हुक़ूक़

हज़रते सय्यिदुना मुआ़विय्या बिन हैदा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ इरशाद फ़रमाते हैं : मैं ने बारगाहे रिसालत मआब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझ पर पड़ोसी के क्या हुक़ूक़ हैं ? तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर वोह बीमार हो तो उस की इ़यादत करो, अगर फ़ौत हो जाए तो उस के जनाज़े में शिर्कत करो, अगर क़र्ज़ मांगे तो उसे क़र्ज़ दे दो और अगर वोह ऐ़बदार हो जाए तो उस की पर्दापोशी करो ।

(المعجم الكبير،١٩/ ٤١٩ حديث:١٠١٤)

जन्नती और जहन्नमी औ़रत

एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फुलां औ़रत का तज़किरा उस की नमाज़, सदक़ा और रोज़ों की कसरत की वज्ह से किया जाता है मगर वोह अपनी ज़बान से पड़ोसियों को तक्लीफ़ देती है । तो रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह जहन्नमी है । उस ने फिर अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फुलां औ़रत नमाज़ रोज़े की कमी और पनीर के टुकड़े सदक़ा करने के बाइ़स पहचानी जाती है और अपने पड़ोसियों को ईज़ा भी नहीं देती तो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह जन्नती है । (مسند احمد،٣/ ٤٤١، حديث:٩٦٨١)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 26 पड़ोसी की दीवार की मिट्टी

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने मक्तूब लिखा और उसे अपने पड़ोसी की दीवार से ख़ुश्क करना चाहा, लेकिन उस से बाज़ रहा, फिर दिल में कहा येह मिट्टी है और मिट्टी की क्या हैसिय्यत है ? चुनान्चे, उसे मिट्टी से ख़ुश्क कर लिया तो ग़ैब से आवाज़ आई : जो शख़्स दीवार से मिट्टी लेने को मा'मूली समझता है वोह कल क़ियामत के दिन इस की सज़ा देख लेगा।

(احیاء علوم الدین ،کتاب النیة والاخلاص والصدق،بیان تفصیل الأعمال المتعلقة بالنیة،۹۹/۵)

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और पड़ोसियों के हुक़ूक़

हज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीब नमाज़ رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने पड़ोसियों का बहुत ख़याल रखा करते, उन की ख़बरगीरी फ़रमाते, अगर किसी पड़ोसी का इन्तिक़ाल हो जाता तो उस के जनाज़े के साथ ज़रूर तशरीफ़ ले जाते, उस की तदफ़ीन के बा'द जब लोग वापस हो जाते तो आप तन्हा उस की क़ब्र के पास तशरीफ़ फ़रमा हो कर उस के हक़ में मग़फ़िरत व नजात की दुआ फ़रमाते नीज़ उस के अहले ख़ाना को सब्र की तल्क़ीन करते और उन्हें तसल्ली दिया करते।

(मुईनुल अरवाह, स. 188, बित्तग़य्युर)

पड़ोस के चालीस घरों पर ख़र्च किया करते

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अबी बक्र رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने पड़ोस के घरों में से दाएं बाएं और आगे पीछे के चालीस चालीस घरों

के लोगों पर ख़र्च किया करते थे, ईद के मौक़अ़ पर उन्हें क़ुरबानी का गोश्त और कपड़े भेजते और हर ईद पर सौ ग़ुलाम आज़ाद किया करते थे। (المستطرف، ۱/۲۷۶)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(19) बेहतरीन शख़्स वोह है जो क़र्ज़ अच्छी त़रह़ अदा करे

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اِنَّ خِيَارَ النَّاسِ اَحْسَنُهُمْ قَضَاءً बेहतरीन शख़्स वोह है जो क़र्ज़ अच्छी त़रह़ अदा करे।

(مسلم،كتاب الساقاة،باب من استسلف شيئا،ص۸٦٥حديث:۱٦۰۰)

ख़ुश दिली से क़र्ज़ अदा करें

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुवे एक येह कि अगर मक़रूज़ बिग़ैर शर्त़ लगाए क़र्ज़ से कुछ ज़ियादा दे दे ख़्वाह वस्फ़ (मसलन : खोटे की जगह खरा रूपिया वापस करना) की ज़ियादती हो या ता'दाद (मसलन : 30 रूपे के बदले 40 रूपे वापस करना) में वोह सूद नहीं। सूद वोह है जो क़ौलन या आ़दतन मशरूत़ हो। (मुफ़्ती साहि़ब मज़ीद लिखते हैं :) दूसरे येह कि (मक़रूज़) क़र्ज़ ख़्वाह को ख़ुश दिली से क़र्ज़ अदा करे।

(मिरआतुल मनाजीह़, 4/294)

क़र्ज़ अच्छी निय्यत से लीजिये

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो लोगों के माल क़र्ज़ ले जिस के अदा कर देने का

पुख़्ता इरादा रखे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से अदा करा ही देता है और जो उन के बरबाद करने का इरादा करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर बरबादी डालता है।

(بخاری،کتاب فی الاستقراض ـالخ،باب من اخذاموال الناس ـالخ،۲/۱۰۵حدیث:۲۳۸۷)

नेक आदमी का क़र्ज़ अदा हो ही जाता है

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जिस की निय्यत क़र्ज़ लेते वक़्त ही अदा करने की न हो, पहले ही से माल मारने का इरादा हो, ऐसा आदमी बे ज़रूरत भी क़र्ज़ ले लेता है और नाजाइज़ त़ौर पर भी। ग़रज़ कि येह ह़दीस बहुत सी हिदायतों पर मुश्तमिल है और तजरिबे से साबित है कि नेक आदमी का क़र्ज़ अदा हो ही जाता है ख़्वाह ज़िन्दगी में ख़ुद अदा करे या बा'दे मौत उस के वारिस अदा करें जैसा कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) की वफ़ात के बा'द हुज़ूर का क़र्ज़ अदा किया, ज़िर्ह छुड़ाई, अगर येह भी न हो तो बरोज़े क़ियामत रब तआ़ला ऐसे मक़रूज़ का क़र्ज़ उस के क़र्ज़ ख़्वाह से मुआ़फ़ करा देगा या क़र्ज़ ख़्वाह को क़र्ज़ के इ़वज़ जन्नत की ने'मतें बख़्श देगा, बहर ह़ाल ह़दीस वाज़ेह़ है। इस पर येह ए'तिराज़ नहीं कि हुज़ूरे अन्वर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) पर क़र्ज़ क्यूं रह गया था, वोह रब ने क्यूं अदा न कराया कि ह़ज़रते सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) का अदा करना रब तआ़ला ही की त़रफ़ से था।

(मिरआतुल मनाजीह़, 4/297)

हिकायत : 27 क़र्ज़ वापस करने की दिलचस्प हिकायत

मदीने के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बनी इस्राईल के एक शख़्स ने दूसरे शख़्स से एक हज़ार दीनार बतौरे क़र्ज़ मांगे। उस ने कहा : तुम किसी गवाह को ले कर आओ ताकि वोह इस क़र्ज़ पर गवाह बने। क़र्ज़ मांगने वाले ने कहा कि **अल्लाह** का गवाह होना काफ़ी है। दूसरे शख़्स ने कहा : फिर तुम किसी कफ़ील को ले कर आओ, उस ने जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कफ़ील होना बहुत है। इस पर दूसरे शख़्स ने कहा कि तुम सच कहते हो, फिर उस ने एक मुअ़य्यना मुद्दत के वा'दे पर उसे हज़ार दीनार बतौरे क़र्ज़ दे दिये। क़र्ज़ लेने वाला शख़्स अपने काम के सिलसिले में दरयाई सफ़र पर गया और अपना काम मुकम्मल किया। इस के बा'द उस ने कश्ती की तलाश शुरूअ़ की ताकि वा'दे के मुताबिक़ वक़्त पर क़र्ज़ अदा कर सके लेकिन कोई कश्ती न मिली। तब उस ने एक लकड़ी को खोखला किया और उस के अन्दर एक हज़ार दीनार और क़र्ज़ ख़्वाह के नाम एक पर्चा लिख कर रख दिया और फिर किसी चीज़ से लकड़ी का मुंह बन्द कर दिया। फिर वोह उस लकड़ी को ले कर दरया पर आया और येह दुआ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तुझे ख़ूब इल्म है कि मैं ने फ़ुलां शख़्स से एक हज़ार दीनार क़र्ज़ लिये थे। उस ने मुझ से कफ़ील का मुतालबा किया तो मैं ने कहा : **अल्लाह** का कफ़ील होना काफ़ी है, वोह तेरी कफ़ालत पर राज़ी हो गया और उस ने मुझ से गवाह लाने का मुतालबा किया तो मैं ने कहा : **अल्लाह** का गवाह होना

काफ़ी है तो वोह तेरी गवाही पर राज़ी हो गया। मैं ने कश्ती तलाश करने की पूरी कोशिश की ताकि मैं उस की त़रफ़ उस की रक़म भेज दूं लेकिन मैं इस पर क़ादिर नहीं हुवा और अब मैं येह रक़म वाली लकड़ी तेरी अमान में देता हूं। फिर उस शख़्स ने वोह लकड़ी दरया में डाल दी। वोह शख़्स वहां से वापस आ गया और इस अ़र्से में कश्ती तलाश करता रहा ताकि अपने शहर की त़रफ़ वापस जा सके। दूसरी त़रफ़ क़र्ज़ ख़्वाह भी दरया के पास आया कि शायद कोई कश्ती नज़र आए जो उस का माल ले कर आ रही हो। इतने में उसे दरया के किनारे वोह लकड़ी नज़र आई जिस में एक हज़ार दीनार मौजूद थे। उस ने ईंधन के त़ौर पर इस्ति'माल के लिये वोह लकड़ी उठा ली, जब उसे चीरा तो उस में एक हज़ार दीनार और पैग़ाम पर मुश्तमिल पर्चा मिला। चन्द दिन बा'द क़र्ज़ लेने वाला शख़्स दरया पार कर के आया और एक हज़ार दीनार ला कर कहने लगा : **अल्लाह** की क़सम ! मैं मुसलसल कश्ती तलाश करता रहा ताकि तुम्हारी रक़म वक़्त पर पहुंचा सकूं लेकिन इस से पहले मुझे कश्ती नहीं मिली। क़र्ज़ ख़्वाह ने उस से पूछा : क्या तुम ने मेरी त़रफ़ कोई चीज़ भेजी थी ? मक़रूज़ ने जवाब दिया : मैं जिस कश्ती पर आया हूं इस से पहले मुझे कोई कश्ती नहीं मिली जिस पर मैं तुम्हारे पास आता। क़र्ज़ ख़्वाह ने कहा : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी वोह रक़म मुझे पहुंचा दी है जो तुम ने लकड़ी में रख कर मेरे पास भेजी थी, चुनान्चे, वोह शख़्स एक हज़ार दीनार ले कर ख़ुशी से वापस चला गया।

(بخاری،کتاب الکفالة،باب الکفالة فی القرض۔۔الخ،۲/۷۳، حدیث:۲۲۹۱)

हिकायत : 28 तंगदस्त मक़रूज़ को मोहलत देने की फ़ज़ीलत

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक शख़्स लोगों को क़र्ज़ दिया करता था और अपने ख़ादिम को कह रखा था कि जब तू किसी तंगदस्त के पास तक़ाज़े को जाए तो उसे मुआ़फ़ कर दे, हो सकता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम को मुआ़फ़ कर दे, जब वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस को मुआ़फ़ फ़रमा दिया।

(بخاری،کتاب البیوع،باب من انظر معسرا،۲/۱۲ حدیث:۲۰۷۸)

हिकायत : 29 मकान की सीढ़ी टूट गई

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन सा'द बिन उ़बादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا बीमार हुवे तो उन के दोस्त व अह़बाब ने उन की इ़यादत में ताख़ीर की, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को बताया गया : चूंकि उन्हों ने आप का क़र्ज़ देना है इस लिये वोह ह़या के बाइ़स नहीं आए। आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस माल को ज़लीलो रुस्वा करे जो दोस्तों को मुलाक़ात से रोक देता है, फिर एक शख़्स को हुक्म दिया कि वोह ए'लान कर दे कि जिस आदमी पर क़ैस बिन सा'द का क़र्ज़ हो वोह इस से बरी है। रावी कहते हैं : येह सुन कर शाम तक मुलाक़ात व इ़यादत करने वालों की इतनी भीड़ लग गई कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के मकान की सीढ़ी टूट गई।

(احیاء علوم الدین،کتاب ذم البخل وذم حب المال،حکایات الأسخیاء۳/۳۰۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(20) दुन्या का बेहतरीन सामान नेक बीबी है

हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया خَيْرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا الْمَرْأَةُ الصَّالِحَةُ या'नी दुन्या का बेहतरीन सामान नेक बीबी है।

(مسلم،کتاب الرضاع،باب خیر متاع الدنیا المراۃ الصالحۃ، ص٧٧٤، حدیث:١٤٦٧)

नेक बीवी मर्द को नेक बना देती है

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : क्यूंकि नेक बीवी मर्द को नेक बना देती है वोह उख़रवी ने'मतों से है। ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) ने رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً की तफ़्सीर में फ़रमाया कि ख़ुदाया हम को दुन्या में नेक बीवी दे आख़िरत में आ'ला हूर अ़त़ा फ़रमा और आग या'नी ख़राब बीवी के अ़ज़ाब से बचा।

(مرقاۃ المفاتیح،کتاب النکاح،٦/٢٦٥تحت الحدیث: ٣٠٨٣)

जैसे अच्छी बीवी ख़ुदा की रह़मत है ऐसे ही बुरी बीवी ख़ुदा का अ़ज़ाब। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/4)

माल जम्अ़ करने से बेहतर है

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, मह़बूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से फ़रमाया कि क्या मैं तुम्हें वोह बेहतरीन चीज़ न बताऊं जो आदमी जम्अ़ करे, वोह अच्छी बीवी है कि जब उसे देखे तो पसन्द आए और जब उसे हुक्म दे तो वोह फ़रमां बरदारी करे और जब मर्द ग़ाइब हो तो उस की ह़िफ़ाज़त करे। (ابوداؤد،کتاب الزکوۃ،باب فی حقوق المال،٢/١٧٦، حدیث:١٦٦٤)

नेक बीवी तोह़्फ़ा है

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी ऐ उ़मर अगर्चे माल जम्अ़ करना जाइज़ है मगर तुम लोग इसे अपना अस्ल मक़्सूद न बना लो इस से भी बेहतर मुसलमान के लिये नेक बीवी है कि सूरत भी अच्छी हो और सीरत भी कि इस के नफ़्ए माल से ज़ियादा हैं क्यूंकि सोना–चांदी अपनी मिल्क से निकल कर नफ़्अ़ देते हैं और नेक बीवी अपने पास रह कर नाफ़ेअ़ है, सोना–चांदी एक बार नफ़्अ़ देते हैं और बीवी का नफ़्अ़ क़ियामत तक रहता है मसलन रब तआ़ला उस से कोई नेक बेटा बख़्शे जो ज़िन्दगी में बाप का वज़ीर बने और बा'दे मौत उस का ख़लीफ़ा । ह़दीस शरीफ़ में है कि निकाह़ से मर्द का दो तिहाई दीन मुकम्मल व मह़फ़ूज़ हो जाता है ।

(كنزالعمال،كتاب النكاح،١٦/١١٨،حديث:٤٤٤٤٧)

(मुफ़्ती साहि़ब मज़ीद लिखते हैं :) سُبْحٰنَ الله सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमान कितना जामेअ़ है औ़रत की सीरत दो कलिमों में बयान फ़रमा दी कि जब ख़ावन्द घर में मौजूद हो तो उस की हर जाइज़ बात माने और जब ग़ाइब हो या'नी सफ़र में हो या मर जाए तो उस के माल, इ़ज़्ज़त व असरार की ह़िफ़ाज़त करे या'नी آمِنــه اَمِيْنَه وَمَامُوْنَه हो । (मिरआतुल मनाजीह़, 3/16)

नेक औ़रत सोने से ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श है

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : नेक औ़रत सोने से ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श है क्यूंकि सोना ख़र्च होने के बा'द ही नफ़्अ़ देता है जब कि

बीवी जब तक तुम्हारे साथ है तुम उसे देख कर ख़ुश होते हो, उस से अपनी फ़ित्री ह़ाजत पूरी करते हो, ज़रूरत पड़ने पर उस से मश्वरा करते हो तो वोह तुम्हारे राज़ की ह़िफ़ाज़त करती है, अपने कामों में उस से मदद त़लब करते हो तो तुम्हारी इत़ाअ़त करती है नीज़ तुम्हारी ग़ैर मौजूदगी में तुम्हारे अहलो माल की ह़िफ़ाज़त करती है। अगर औ़रत में सिर्फ़ येह भलाई होती कि वोह तुम्हारे नुत़्फ़े की ह़िफ़ाज़त और तुम्हारी औलाद की परवरिश करती है तो उस की फ़ज़ीलत के लिये इतना ही काफ़ी था । (فیض القدیر،۱/۵۹۵تحت الحدیث:۹۱۸)

बे वुक़ूफ़ औ़रत शोहर को बरबाद कर देती है

ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِمَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की ह़िक्मत आमेज़ बातों में से एक येह भी है कि अ़क़्लमन्द औ़रत अपने शोहर के घर को आबाद करती है जब कि बे वुक़ूफ़ औ़रत इसे बरबाद कर के छोड़ती है। (المستطرف،۲/۳۹۹)

अच्छी और बुरी औ़रत की मिसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : बुरी औ़रत अपने शोहर के लिये ऐसी है जैसे बूढ़े शख़्स पर भारी वज़्न जब कि अच्छी औ़रत सोने से आरास्ता ताज की त़रह़ है कि जब भी शोहर उसे देखता है तो उस की आंखें ठन्डी होती हैं।

(المستطرف،۲/۴۰۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(21) बेहतरीन वोह है जो अपनी बीवियों के लिये बेहतरीन हो

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़्फ़िरत निशान है : خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِاَهْلِهٖ وَاَنَا خَيْرُكُمْ لِاَهْلِيْ या'नी तुम में बेहतरीन वोह है जो अपने घर वालों के लिये बेहतरीन हो और मैं अपने घर वालों के लिये तुम सब से अच्छा हूं।

(ترمذی،کتاب المناقب،باب فضل ازواج النبی،۵/۴۷۵حدیث:۳۹۲۱)

कोई मोमिन अपनी बीवी को दुश्मन न जाने

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, महबूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने महब्बत निशान है : कोई मोमिन किसी मोमिना बीवी को दुश्मन न जाने अगर उस की किसी आ़दत से नाराज़ हो तो दूसरी ख़स्लत से राज़ी होगा।

(مسلم،کتاب الرضاع،باب الوصیۃ بالنساء،ص۷۷۵حدیث:۱۴۶۹)

बे ऐ़ब बीवी मिलना ना मुमकिन है

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : سُبْحٰنَ اللّٰه कैसी नफ़ीस ता'लीम, मक़्सद येह है कि बे ऐ़ब बीवी मिलना ना मुमकिन है, लिहाज़ा अगर बीवी में दो एक बुराइयां भी हों तो उसे बरदाश्त करो कि कुछ ख़ूबियां भी पाओगे। यहां (साह़िबे) मिरक़ात ने फ़रमाया कि जो शख़्स बे ऐ़ब साथी की तलाश में रहेगा वोह दुन्या में अकेला ही रह जाएगा, हम खुद हज़ारहा बुराइयों का चश्मा हैं, हर दोस्त अ़ज़ीज़ की

बुराइयों से दर गुज़र करो अच्छाइयों पर नज़र रखो, हां इस्लाह़ की कोशिश करो, बे ऐ़ब तो रसूलुल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5/87)

इन्सान के चार बाप होते हैं

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان अपनी मश्हूरे ज़माना तस्नीफ़े लत़ीफ़ **"इस्लामी ज़िन्दगी"** में शोहरों को नसीह़त करते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : और ऐ शोहरो ! तुम याद रखो कि दुन्या में इन्सान के चार बाप होते हैं : एक तो नसबी बाप, दूसरे अपना सुसर, तीसरे अपना उस्ताद, चौथे अपना पीर। अगर तुम ने अपने सुसर को बुरा कहा तो समझ लो कि अपने बाप को बुरा कहा, हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया है : बहुत कामयाब शख़्स वोह है जिस के बीवी बच्चे उस से राज़ी हों। ख़याल रखो कि तुम्हारी बीवी ने सिर्फ़ तुम्हारी वज्ह से अपने सारे मैके को छोड़ा। बल्कि बा'ज़ सूरतों में देस छोड़ कर तुम्हारे साथ परदेसी बनी अगर तुम भी उस को आंखे दिखाओ तो वोह किस की हो कर रहे ? तुम्हारे ज़िम्मे मां-बाप, भाई-बहन, बीवी बच्चे सब के ह़क़ हैं किसी के ह़क़ में किसी के ह़क़ के अदा करने में ग़फ़्लत न करो और कोशिश करो कि दुन्या से बन्दों के ह़क़ का बोझ अपने पर न ले जाओ, ख़ुदा के तो हम सब गुनहगार हैं मगर मख़्लूक़ के गुनहगार न बनें। (इस्लामी ज़िन्दगी, स. 68)

हिकायत : 30 बीवी के साथ हुस्ने सुलूक

एक बुज़ुर्ग ने किसी औ़रत से निकाह़ किया, वोह हमेशा उस की ख़िदमत करते रहते ह़त्ता कि औ़रत ने शर्म मह़सूस की और इस बात

का तज़किरा अपने वालिद से किया कि मैं इस शख़्स पर हैरान हूं, कई साल से मैं इस के घर में हूं, मैं जब भी बैतुल ख़ला जाती हूं येह मुझ से पहले ही वहां पानी रख देता है।

(احیاء علوم الدین،کتاب کسر الشھوتین،بیان ماعلی المرید فی ترک التزویج وفعلہ،۱۲۷/۳)

हिकायत : 31 दो बीवियों में इन्साफ़ की उ़म्दा मिसाल

ह़ज़रते सय्यिदुना यह्या बिन सईद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمَجِیْد से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की दो बीवियां थीं। जिस दिन एक की बारी होती उस दिन दूसरी के घर में वुज़ू तक न फ़रमाते थे। जब मुल्के शाम में किसी मरज़ में मुब्तला हो कर दोनों इन्तिक़ाल कर गईं तो चूंकि उस वक़्त सब लोग अपने अपने मुआ़मलात में मसरूफ़ थे, इस लिये दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़्न कर दिया गया, और क़ब्र में उतारते वक़्त भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने क़ुरआ़ डाला कि पहले किस को क़ब्र में रखा जाए।

(صفة الصفوة ، معاذ بن جبل ، ذکر نبذه من ورعه ، ۲۵۵/۱)

हिकायत : 32 दुन्या वाली ज़ौजा जन्नत में भी ज़ौजा कैसे बने ?

ह़ज़रते सय्यिदुना लुक़्मान बिन आ़मिर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَادِر से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बारगाहे इलाही में यूं इल्तिजा की "या Allah عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दुन्या में मुझे निकाह़ का पैग़ाम भेजा और मुझ से शादी की, मैं तेरी बारगाह में अ़र्ज़ करती हूं कि मुझे जन्नत में भी उन की ज़ौजिय्यत में रखना।" ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन

से फ़रमाया : ''अगर तू इस बात को पसन्द करती है तो मैं भी येही चाहता हूं, लिहाज़ा मेरे बा'द किसी से शादी न करना।'' रावी बयान करते हैं कि ''ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا साहि़बे हुस्नो जमाल थीं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वफ़ात के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने उन्हें निकाह़ का पैग़ाम भिजवाया तो उन्हों ने जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं दुन्या में किसी से शादी नहीं करूंगी, अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा तो जन्नत में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजिय्यत में रहूंगी।

(صفة الصفوة ، ابو الدرداء عويمر بن زيد ، ذكر وفاة ابى الدرداء ، ١/ ٣٢٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(22) बेहतर वोह है जो अपने घर वालों के साथ अच्छा हो

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : خَیْرُکُمْ خَیْرُکُمْ لِاَھْلِہٖ या'नी तुम में से बेहतर वोह है जो अपने घर वालों के साथ अच्छा हो।

(ترمذی،کتاب المناقب،باب فضل ازواج النبی،۵/۴۷۵حدیث:۳۹۲۱)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : बड़ा ख़लीक़ (अच्छे अख़्लाक़ वाला) वोह है जो अपने बीवी बच्चों के साथ ख़लीक़ हो कि उन से हर वक़्त काम रहता है अजनबी लोगों से ख़लीक़ होना कमाल नहीं कि उन से मुलाक़ात कभी कभी होती है। (मिरआतुल मनाजीह़, 5/96)

(23) तुम सब में बेहतर वोह है जो अपने बीवी बच्चों के साथ अच्छा हो

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : خَيْرُكُمْ خَيْرُكُمْ لِنِسَائِهٖ وَلِبَنَاتِهٖ या'नी तुम सब में बेहतरीन वोह है जो अपनी औ़रतों और बच्चियों के साथ अच्छा हो ।

(شعب الایمان ،باب فی حقوق الأولاد والأهلین،٦/٤١٥ ، حدیث : ٨٧٢٠)

कामिल ईमान वाला है

सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : कामिल ईमान वालों में से वोह भी है जो उ़म्दा अख़्लाक़ वाला है और तुम में से बेहतर वोह है जो अपनी औ़रतों के साथ सब से ज़ियादा अच्छा हो ।

(ترمذی ، کتاب الرضاع ، باب ماجاء فی احق المرأة ...الخ ، ٢/٣٨٦ ، حدیث:١١٦٥)

जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : जिस के यहां **बेटी** पैदा हो और वोह उसे ईज़ा न दे और न ही बुरा जाने और न बेटे को **बेटी** पर फ़ज़ीलत दे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा ।

(المستدرك ،کتاب البر والصله،باب من کن له ثلاث بنات،٥/٢٤٨حدیث: ٧٤٢٨)

बेटी पर माहे रिसालत ﷺ की शफ़्क़त

ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا जब मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा शफ़्क़त में ह़ाज़िर होतीं तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खड़े हो कर उन की त़रफ़ मुतवज्जेह हो जाते, फिर अपने प्यारे प्यारे हाथ में उन का हाथ ले कर उसे बोसा देते फिर उन को अपने बैठने की जगह पर बिठाते। इसी त़रह़ जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां तशरीफ़ ले जाते तो वोह देख कर खड़ी हो जातीं, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक हाथ अपने हाथ में ले कर चूमतीं और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को अपनी जगह पर बिठातीं।

(ابوداؤد،کتاب الادب ،باب ماجاء فی القیام،٤/٤٥٤ حدیث: ٥٢١٧)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(24) बेहतरीन शख़्स वोह जो ह़ाकिम बनने से सख़्त मुतनफ़्फ़िर हो

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

تَجِدُوْنَ مِنْ خَیْرِ النَّاسِ اَشَدَّھُمْ کَرَاھِیَۃً لِھٰذَا الْاَمْرِ حَتّٰی یَقَعَ فِیْہِ या'नी तुम लोगों में बेहतरीन शख़्स उसे पाओगे जो इस ह़ुकूमत से सख़्त मुतनफ़्फ़िर हो ह़त्ता कि इस में मुब्तला हो जाए।

(بخاری،کتاب المناقب،باب علامات النبوة فی الاسلام،٢/٤٩٧ حدیث:٣٥٨٨)

फ़क़ीहे आ'ज़मे हिन्द, शारेहे बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ फ़रमाते हैं : या'नी जो शख़्स इमारत क़बूल करने को ना पसन्द करता हो उसे वाली (हुक्मरान) बना दिया जाए तो **अल्लाह** की मदद उस के शामिले ह़ाल होगी, क़बूल करने से पहले ना पसन्द करता था लेकिन अमीर बनाए जाने के बा'द जब **अल्लाह** की मदद शामिले ह़ाल होगी तो उस की कराहिय्यत (ना पसन्दीदगी) दूर हो जाएगी । (नुज़्हतुल क़ारी, 4/487)

हुकूमत न मांगो !

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने समुरह رضی اللہ تعالٰی عنہ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : हुकूमत न मांगो ! क्यूंकि अगर तुम त़लब से हुकूमत दिये गए तो तुम उस के ह़वाले कर दिये जाओगे और अगर तुम बिग़ैर त़लब दिये गए तो इस पर तुम्हारी मदद की जाएगी ।

(مسلم، کتاب الامارۃ، باب النھی عن طلب ...الخ، ص۱۰۱٤، حدیث: ۱٦۵۲)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान علیہ رحمۃ الحنّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : दुन्यावी इमारत व हुकूमत त़लब करना ममनूअ़ है, मगर दीनी इमारत त़लब करना इ़बादत है, रब तआ़ला फ़रमाता है कि हम से दुआ़ किया करो कि وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِیْنَ اِمَامًا (پ۱۹، الفرقان:۷٤) ख़ुदावन्दा हम को परहेज़गारों का इमाम बना । ख़याल रहे कि सल्त़नत, हुकूमत, नफ़्सानी ख़्वाहिश, दुन्यावी माल, इ़ज़्ज़त की लालच से त़लब करना ह़राम है कि ऐसे त़ालिबे जाह लोग ह़ाकिम बन कर ज़ुल्म करते हैं मगर जब ना अहल सुल्त़ान या

हाकिम बन कर मुल्क को बरबाद कर रहे हों या बरबाद करना चाहते हों तो दीन व मुल्क की ख़िदमत के लिये हुकूमत चाहना–हासिल करना ज़रूरी है। हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام ने बादशाहे मिस्र से फ़रमाया था : اِجْعَلْنِیْ عَلٰى خَزَآىٕنِ الْاَرْضِۚ-اِنِّیْ حَفِیْظٌ عَلِیْمٌ (پ۱۳، یوسف: ۵۵) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों पर कर दे, बेशक मैं हिफ़ाज़त वाला इल्म वाला हूं) लिहाज़ा येह हदीस इन मज़कूरा दोनों आयतों के ख़िलाफ़ नहीं कि इस हदीस से तम्ए दुन्यावी के लिये दुन्यावी इमारत चाहने की मुमानअत है। हज़रते सिद्दीक़े अक्बर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के पर्दा फ़रमाने के बा'द ब कोशिश मुल्क की बाग दौड़ संभाल ली थी और फिर अमीर बन कर दीन व मुल्क की ख़िदमत की जिस से दुन्या ख़बरदार है, आज तक इस्लाम व कुरआन की बक़ा हज़रते सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) की मरहूने मिन्नत है।

(मिरआतुल मनाजीह, 5/348)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

हिकायत : 33 गवर्नर बनने से इन्कार कर दिया

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक मरतबा अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मुझे बुलाया ताकि किसी अलाक़े का गवर्नर मुक़र्रर फ़रमाएं, लेकिन मैं ने गवर्नर बनने से इन्कार कर दिया तो अमीरुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : ''क्या आप गवर्नरी को ना पसन्द जानते हैं हालांकि आप से बेहतर शख़्स हज़रते यूसुफ़ (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) ने इस का मुतालबा

किया था।'' मैं ने अ़र्ज़ की : ''ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी के बेटे थे जब कि मैं अबू हुरैरा, उमय्या की औलाद हूं, मैं बिग़ैर इ़ल्म के कोई बात कहने और बिग़ैर अ़द्लो इन्साफ़ के फ़ैसला करने, पीठ पर कोड़े मारे जाने, माल छीने जाने और बे इ़ज़्ज़त किये जाने से डरता हूं।

(مصنف عبدالرزاق جامع معمر بن راشد ، باب الامام راع ١٠/ ٢٨٤ ، رقم : ٢٠٨٢٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(25) बेहतर वोह जिन को देख कर ख़ुदा याद आए

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : خِیَارُکُمْ مَنْ ذَکَّرَکُمُ بِاللّٰہِ رُؤْیَتُہٗ या'नी तुम सब में बेहतरीन वोह है जिस का दीदार तुम्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की याद दिलाए।

(جامع الصغیر،ص٢٤٤ حدیث:٣٩٩٥،جزء ٢)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : उन के चेहरों पर अन्वार व आसारे इ़बादत ऐसे हों कि उन्हें देखते ही रब याद आ जाए उन के चेहरे आईनए ख़ुदा नुमा हों। हुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने फ़रमाया कि ''अ़ली का चेहरा देखना इ़बादत है,'' **(المعجم الکبیر،١٠ /٧٦،حدیث:١٠٠٠٦)** आप को जो देखता था कहता था : **لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہ** ! कैसा करीम, बहादुर, ह़लीम, आ़लिम और जवान है ! ! !

(مرقاۃ المفاتیح،کتاب الادب،باب حفظ اللسان والغیبۃ والشتم،٨ /٦٠٨تحت الحدیث:٤٨٧١،٤٨٧٢)

(मुफ़्ती साहिब मजीद लिखते हैं :) हुज़ूर दाता साहिब (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) के मज़ारे मुक़द्दस पर पहुंच कर दिल की दुन्या बदल जाती है, मिस्री औ़रतों ने जमाले यूसुफ़ी देखते ही कहा था : حَاشَا لِلّٰه येह है अल्लाह की याद आ जाना। यहां ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه) ने फ़रमाया कि मैं एक बार मक्कए मुअ़ज़्ज़मा के बाज़ार में सर नीचा किये जा रहा था कि अचानक एक शख़्स पर नज़र पड़ी मेरे मुंह से फ़ौरन لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ जारी हो गया।

(اشعة اللمعات،كتاب الادب،باب حفظ اللسان والغيبة والشتم،٨٩/٤)

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/484)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(26) तुम सब में बेहतरीन वोह है जो दुन्या से बे रग़बती रखने वाला है

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अ़र्ज़ की : हम सब में बेहतर कौन है ? इरशाद फ़रमाया : اَزْهَدُكُمْ فِى الدُّنْيَا وَاَرْغَبُكُمْ فِى الْاٰخِرَةِ या'नी तुम में सब से बेहतरीन वोह है जो दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत में रग़बत रखने वाला हो।

(شعب الايمان،باب فى الزهد وقصر الامل،٣٤٣/٧،حديث:١٠٥٢١)

दुन्या से बे रग़बती किसे कहते हैं ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : दुन्या के फ़ना और ऐबदार होने की वज्ह से

बे रग़बती करे और आख़िरत की बुज़ुर्गी और हमेशा रहने की वज्ह से आख़िरत में रग़बत रखे, अ़क़्लमन्द वोह है जो दुन्या और दुन्या के मैल कुचैल से अपने आप को बचाए और दुन्या को अपना ख़ादिम बनाए, ज़रूरत के मुताबिक़ दुन्या जम्अ़ करे और इस के इ़लावा दुन्या से किनारा कशी इख़्तियार करे क्यूंकि जब कोई दुन्या से मुंह मोड़ता है तो दुन्या उस के पास ज़लील हो कर आती है, जो शख़्स दुन्या कमाने की ख़ातिर जितना दुन्या के पीछे भागता है दुन्या उस से उतनी ही भागती है, जैसे साया सूरज की त़रफ़ मुंह कर के चलने वाले के पीछे पीछे आता और सूरज से पीठ फेर कर चलने वाले के आगे आगे भागता है अगर येह शख़्स अपने आगे भागने वाले साए को पकड़ने की कोशिश करे भी तो नाकाम होगा। (فیض القدیر،۳/۶۶۶ تحت الحدیث:۴۱۱۴)

ह़लाल को ह़राम ठहरा लेना बे रग़बती नहीं है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ह़लाल को ह़राम ठहरा लेना और माल को ज़ाएअ़ कर देना दुन्या से बे रग़बती नहीं बल्कि दुन्या से बे रग़बती तो येह है कि तुम्हें अपने पास मौजूद माल से ज़ियादा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ज़ानों पर भरोसा हो और जब तुम्हें मुसीबत में मुब्तला किया जाए तो तुम इस के सवाब की वज्ह से इस मुसीबत के बाक़ी रहने में रग़बत करो।

(ترمذی،کتاب الزھد،باب ماجاء فی الزھادۃ فی الدنیا،۴/۱۵۲ حدیث:۲۳۴۷)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

दुन्या से बे रग़बती के फ़ज़ाइल

अमीरुल मोमिनीन मौला मुश्किल कुशा सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيْم से मरवी है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार की, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस को बिग़ैर ता'लीम ह़ासिल किये इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाता, बिग़ैर ज़ाहिरी अस्बाब के सह़ीह़ रास्ते पर चलाता और उस को साह़िबे बसीरत बना कर उस से जहालत को दूर फ़रमाता है। (الجامع الصغير، ص٥٢٨ حديث:٨٧٢٥)

दुन्या से बे रग़बती अपनाने के बारे में इनफ़िरादी कोशिश

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : एक शख़्स बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ करने लगा : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم किसी ऐसे काम के लिये मेरी राहनुमाई फ़रमाइये जिसे मैं करूं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझ से मह़ब्बत करे और लोग भी मह़ब्बत करें। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : दुन्या से बे रग़बत रहो, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम से मह़ब्बत करेगा और लोगों की चीज़ों से बे नियाज़ रहो, लोग तुम से मह़ब्बत करने लगेंगे।

(مشكاة المصابيح، كتاب الرقاق، ٢/٢٤٧ حديث:٥١٨٧)

दुन्या से बे रग़बती दिलो जान को राह़त बख़्शती है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने

फ़रमाया : اَلزُّهْدُ فِی الدُّنْیَا یُرِیْحُ الْقَلْبَ وَالْجَسَدَ या'नी दुन्या से बे रग़बती दिलो जान को राहत बख़्शती है।

(مجمع الزوائد،کتاب الزهد،باب ماجاء فی الزهد فی الدنیا،۱۰/ ۵۰۹، حدیث:۱۸۰۵۸)

बुराई और भलाई के घरों की चाबियां

हज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : तमाम बुराइयां एक ही घर में रख दी गई हैं और उस घर की चाबी दुन्या की महब्बत है जब कि तमाम भलाइयां भी एक ही घर में रख दी गई हैं और उस घर की चाबी दुन्या से बे रग़बती है।

(منهاج القاصدین،ربع المنجیات،کتاب الفقر والزهد،۳/۱۲۱۵)

दुन्या की पैदाइश का मक़्सद

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात़ عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : दुन्या इस लिये पैदा नहीं की गई कि इस के मुतअ़ल्लिक़ ग़ौरो ख़ौज़ किया जाए, बल्कि इस लिये पैदा की गई है ताकि इस के ज़रीए आख़िरत की फ़िक्र और उस की तय्यारी की जाए।

(منهاج القاصدین،ربع المنجیات،کتاب التفکر،۳/۱۳۹۳)

हिकायत : 34 काश ! येह प्याला मुझे न मिला होता

किसी बादशाद को फ़ीरोज़ा (एक क़ीमती पथ्थर) से बना हुवा प्याला पेश किया गया, जिस पर जवाहिर जड़े हुवे थे और वोह प्याला बड़ा शानदार था। बादशाह इस के मिलने पर बहुत ख़ुश हुवा और उस

ने अपने पास बैठे हुवे एक समझदार से पूछा : इस प्याले के बारे में आप की क्या राए है ? उस ने कहा : मैं तो इसे मुसीबत या फ़क्र समझता हूं। बादशाह ने पूछा : वोह क्यूं ? उस ने जवाब दिया : अगर येह टूट जाए तो ऐसा नुक़्सान होगा जिस की तलाफ़ी मुमकिन नहीं और अगर चोरी हो जाए तो आप इस के मोह़ताज हो जाएंगे और आप को इस जैसा नहीं मिलेगा, और जब तक येह आप के पास नहीं था आप मुसीबत और फ़क्र से अम्न में थे। इत्तिफ़ाक़ से एक रोज़ वोह प्याला टूट गया या चोरी हो गया तो बादशाह बहुत ग़मगीन हुवा और उस ने कहा : उस शख़्स ने सच कहा था, काश ! येह प्याला मुझे न मिला होता। (احیاء علوم الدین، کتاب ذم البخل وذم المال، بیان علاج البخل، ۳/۳۲٤)

हिकायत : 35 निगरान का नाम ह़ाजत मन्दों की फ़ेहरिस्त में

ह़ज़रते सय्यिदुना शह़र बिन ह़ौशब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه "ह़िम्स" (मुल्के शाम के एक शहर) के दौरे पर तशरीफ़ लाए तो लोगों को हुक्म दिया कि अपने फ़ुक़रा के नाम लिख दें, जब आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने लिस्ट मुलाह़ज़ा की तो उस में एक नाम सईद बिन आ़मिर था, पूछा : कौन सईद बिन आ़मिर ? कहा : हमारे अमीर (या'नी निगरान), आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को येह सुन कर बहुत तअ़ज्जुब हुवा और फ़रमाने लगे : तुम्हारा अमीर फ़क़ीर कैसे है ? उस का मालो दौलत कहां है ? अ़र्ज़ की : वोह अपने लिये कुछ नहीं बचाते, येह सुन कर आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه रोने लगे और एक हज़ार दीनार उन के लिये भेजे, जब क़ासिद वोह दीनार ले कर ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन

आमिर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास पहुंचा तो आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने दीनार देखते ही اِنَّا لِلّٰہِ وَاِنَّا اِلَیْہِ رَاجِعُوْنَ पढ़ना शुरूअ़ कर दिया, ज़ौजा ने अ़र्ज़ की : क्या हुवा ? क्या अमीरुल मोमिनीन इन्तिक़ाल फ़रमा गए ? फ़रमाया : इस से भी बड़ी बात हो गई है, दुन्या मेरे पास आ गई, फ़ितना मेरे पास आ गया, फिर आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने सारी रात नमाज़ पढ़ते हुवे गुज़ार दी। सुब्ह़ आप मुसलमानों के एक लश्कर के पास गए और वहां येह माल तक़्सीम फ़रमा दिया : ज़ौजा ने अ़र्ज़ की : अगर आप कुछ बचा लेते तो हमारी मदद हो जाती, फ़रमाया : मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना है : अगर कोई जन्नती औ़रत (हूर) ज़मीन पर झांक ही ले तो सारी ज़मीन मुश्क की ख़ुश्बू से भर जाए, लिहाज़ा मैं किसी और चीज़ को इन पर तरजीह़ नहीं दे सकता।

(اسد الغابة، ٢/ ٤٦٢ مختصرا)

हिकायत : 36 मरने के बा'द मेरी क़मीस सदक़ा कर देना

ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی से उन के मरज़े वफ़ात में अ़र्ज़ की गई कि कोई वसिय्यत फ़रमाइये। इरशाद फ़रमाया : जब मैं मर जाऊं तो मेरी येह क़मीस सदक़ा कर देना। मैं चाहता हूं कि जिस त़रह़ बिग़ैर लिबास के दुन्या में आया था उसी त़रह़ दुन्या से रुख़्सत हो जाऊं। (المستطرف، ١/ ٢٤٩)

हिकायत : 37 एक चादर के हि़साब का डर !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू शु'बा رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से मरवी है कि एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास ह़ाज़िर

हुवा और कुछ माल पेश किया। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मेरे पास दूध के लिये बकरी, सुवारी के लिये गधा और ख़िदमत के लिये बीवी है, एक चादर ज़रूरत से ज़ाइद है और मैं इस की वज्ह से ख़ौफ़ज़दा हूं कि कहीं मुझ से इस का हिसाब न ले लिया जाए !

(المعجم الکبیر، ۲/ ۱۵۰، رقم : ۱۶۳۱)

बुढ़ापे में ज़ियादा हिर्स का सबब

एक दाना शख़्स से पूछा गया : क्या वज्ह है कि बूढ़ा शख़्स जवान से ज़ियादा दुन्या का हरीस होता है ? जवाब दिया : इस लिये कि बूढ़े शख़्स ने दुन्या का ऐसा ज़ाइक़ा चखा है जो जवान ने नहीं चखा।

(المستطرف، ۱/ ۱۲۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(27) बेहतरीन आदमी वोह है जिस के शर से लोग महफ़ूज़ रहें

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, महबूबे रब्बे क़दीर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : خِیَارُکُمْ مَنْ یُّؤْمَنُ شَرُّہٗ وَیُرْجٰی خَیْرُہٗ या'नी तुम सब में बेहतरीन आदमी वोह है जिस के शर से महफ़ूज़ रहा जाए और उस से भलाई की उम्मीद रखी जाए।

(شعب الایمان، باب آن یحب المسلم لاخیہ۔الخ، ۷/۵۳۹ حدیث:۱۱۲۶۷)

हज़रते अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस हदीसे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : जो शख़्स भलाई के काम करता हो यहां तक कि लोगों में इसी हवाले से जाना जाता हो उसी शख़्स से भलाई

की उम्मीद रखी जाती है, जिस की भलाइयां ज़ियादा हों तो दिल उस के शर से मह़फ़ूज़ होते हैं, जब आदमी के दिल में ईमान मज़बूत़ होता है तो उस से भलाई की उम्मीद रखी जाती है और लोग उस की बुराई से मह़फ़ूज़ होते हैं, जब ईमान कमज़ोर होता है तो भलाई कम हो जाती और बुराई ग़ालिब हो जाती है। (فیض القدیر،۳/۶۶۶تحت الحدیث:۴۱۱۳)

जिस के शर से लोग मह़फ़ूज़ रहें वोह जन्नत में दाख़िल होगा

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने पाकीज़ा खाना खाया और सुन्नत के मुत़ाबिक़ अ़मल किया और लोग उस के शर से मह़फ़ूज़ रहे वोह जन्नत में दाख़िल होगा । एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आज आप की उम्मत में ऐसे लोग बहुत हैं । तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अ़न क़रीब मेरे चन्द सदियां बा'द भी होंगे ।

(ترمذی،ابواب صفة القیامة،باب۱۲۵،۴/۲۳۳حدیث:۲۵۲۸)

नाकाम शख़्स

ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : वोह शख़्स फ़लाह़ न पाएगा जिस की इ़ज़्ज़त लोग सिर्फ़ उस के शर के ख़ौफ़ से करें । (مسند اسحاق بن راھویه،۲/۸۸)

मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुसलमान अपने मुसलमान भाई का ख़ैर ख़्वाह होता है । कामिल मुसलमान वोही है जिस की ज़बान व हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें । अगर कभी शैतान के बहकावे में आ कर ग़लती हो जाए और किसी इस्लामी भाई को हम से कोई तक्लीफ़ पहुंच जाए तो फ़ौरन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डर जाना चाहिये और अपने इस्लामी भाई से सच्चे दिल से मुआ़फ़ी मांग लेनी चाहिये । इस काम में हरगिज़ हरगिज़ सुस्ती व शर्म नहीं करनी चाहिये कहीं ऐसा न हो कि कल बरोज़े क़ियामत ऐसी शर्मिन्दगी का सामना करना पड़े जिस का हम अभी तसव्वुर भी नहीं कर सकते लिहाज़ा आ़जिज़ बन कर फ़ौरन मुआ़फ़ी मांग लेने ही में दीनो दुन्या की भलाई है । आज के इस पुर फ़ितन दौर में दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा माहोल हमें येह मदनी सोच देता है कि अपने मुसलमान भाइयों का हस्बे मरातिब अदबो एहतिराम करना चाहिये । दा'वते इस्लामी ने हमें येह मदनी मक़्सद दिया है कि **मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है** । बतौ़रे तरग़ीब व तह़रीस एक नौजवान की ज़िन्दगी में मदनी इन्क़िलाब बरपा होने की मदनी बहार मुलाह़ज़ा कीजिये चुनान्चे,

मैं शराब पिया करता था

एक इस्लामी भाई (उ़म्र तक़रीबन 24 साल) के बयान का लुब्बे लुबाब है कि मैं एक दुन्यादार क़िस्म का नौजवान था जो दीनी मा'लूमात से कोसों दूर था । नमाज़ों की पाबन्दी न रोज़ों का ख़याल !

कुछ भी तो न था। बुरे दोस्तों के साथ आवारा गर्दी करना, फ़िल्में ड्रामे देखना मेरा मा'मूल था। बुरी सोहबत की नुहूसत की वज्ह से शराब भी पीने लगा था। मुझ जैसे भटके हुवे इन्सान को नेकियों की शाह राह पर गामज़न करने का सेहरा दा'वते इस्लामी के एक मुबल्लिग़ के सर है जिन्हों ने मुझ पर इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत दी और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने उस इजतिमाअ़ में शिर्कत की। मुझ पर थोड़ा बहुत असर ज़रूर हुवा मगर गुनाहों में क़ैद होने की वज्ह से मैं दा'वते इस्लामी की ज़ियादा बरकतें समेटने से महरूम रहा। फिर कुछ अ़र्से बा'द उन्ही इस्लामी भाई ने मुझे आ़शिक़ाने रसूल के साथ तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में सफ़र की दा'वत दी जिस पर लब्बैक कहते हुवे मैं ने राहे ख़ुदा में सफ़र इख़्तियार किया। दौराने मदनी क़ाफ़िला एक मुबल्लिग़ ने 63 दिन का कोर्स करने का ज़ेहन दिया और मुझे येह कोर्स करने की भी सआ़दत नसीब हो गई। इसी कोर्स के दौरान फ़ैज़ाने मदीना में होने वाले तीन दिन के इजतिमाअ़ में शिर्कत का मौक़अ़ भी मिला जहां मैं ने बयान **"क़ब्र की पहली रात"** सुना तो मेरे दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो गया और मैं ने अपने पिछले गुनाहों से तौबा करते हुवे मदनी हुल्या सजाने की पुख़्ता निय्यत कर ली। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ इस वक़्त मैं एक मस्जिद में इमामत की सआ़दत पाता हूं और अ़लाक़ाई मुशावरत के ख़ादिम की हैसिय्यत से दा'वते इस्लामी का मदनी काम करने के लिये कोशां हूं। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में इस्तिक़ामत नसीब फ़रमाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तब्लीग़ सुन्नतों की करता रहूं हमेशा
मरना भी सुन्नतों में हो सुन्नतों में जीना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(28) बेहतरीन नौजवान कौन ?

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है :

اِذَا رَأَيْتُمْ شَابًّا يَأْخُذُ بِزِيِّ الْمُسْلِمِ بِتَقْصِيْرِهٖ وَتَشْمِيْرِهٖ فَذَاكَ مِنْ خِيَارِكُمْ

या 'नी : जब तुम किसी ऐसे नौजवान को देखो जो तंगी व ख़ुश हाली हर हाल में इस्लाम के तौर तरीक़े को अपनाए रहे तो वोह तुम्हारे बेहतरीन लोगों में से है।

(كنز العمال، كتاب الايمان والاسلام، جزء ١، ١/ ١٢١، حديث : ١٠٨٦)

बीस सालह आजिज़ी पसन्द नौजवान

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ **''जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल''** जिल्द अव्वल सफ़्हा 235 पर है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बीस सालह नौजवान को पसन्द फ़रमाता है जो (कमज़ोरी और तवाज़ोअ़ में) 80 सालह बूढ़े जैसा हो और उस 60 सालह बूढ़े को पसन्द नहीं फ़रमाता जो (चाल ढाल में) 20 सालह नौजवान जैसा हो।

(جامع الاحاديث للسيوطى، ٢/ ٣٠٢ حديث: ٥٥٦٠)

बुज़ुर्गों के अन्दाज़ अपनाने की फ़ज़ीलत

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : خَيْرُ شَبَابِكُمْ مَنْ تَشَبَّهَ بِشُيُوْخِكُمْ या'नी तुम्हारे नौजवानों में बेहतरीन नौजवान वोह हैं जो अपने बुज़ुर्गों से मुशाबहत इख़्तियार करें। **(شعب الایمان، باب الحیاء، ٦/١٦٨، حدیث : ٧٨٠٦)**

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : या'नी सीरत में मुशाबहत इख़्तियार करें न कि सूरत में ताकि नौजवानों पर इ़ल्म का वक़ार, बुर्दबारी वाला इत़्मीनान और घटया कामों से बचने के बाइ़स ह़ासिल होने वाली पाकीज़गी ग़ालिब रहे और वोह अपनी जल्दबाज़ी, बद अख़्लाक़ी, खेल कूद और बच्चों वाली ह़रकतें करने के बाइ़स उठाने वाले नुक़्सान को रोक सके ताकि दुन्या में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़िफ़ाज़त और क़ियामत में अ़र्श का साया नसीब हो। मज़ीद फ़रमाते हैं कि नौजवानी भी जुनून की एक क़िस्म है, इस ह़दीसे पाक में नौजवानों के लिये बुर्दबारी और इत़्मीनान की तरग़ीब है। **(فیض القدیر، ٣/٦٤٩، تحت الحدیث : ٤٠٧١)**

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा इस्माईल ह़क़्क़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه इस ह़दीस के तह़त लिखते हैं : येह मुशाबहत तमाम चीज़ों "अक़्वाल" अह़वाल, अफ़्आ़ल, खड़े होने, बैठने, लिबास वग़ैरा" हर चीज़ को शामिल है कि सूफ़ी भी बुज़ुर्ग होता है क्यूंकि सूफ़ी बनने का मक़्सद भी अपने ज़ाहिरो बात़िन से गुनाहों भरी आ़दतें ख़त्म करने से तअ़ल्लुक़ रखता है लिहाज़ा सूफ़ी को चाहिये कि लिबास भी बुज़ुर्गों जैसा पहने अगर्चे जवान हो। **(روح البیان، ٥/٥٦، تحت الآیۃ : منکم من یرد الی ارذل العمر)**

इबादत में जवानी गुज़ारने वाले पर अ़र्श का साया

सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सात शख़्स वोह हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस दिन अपने (अ़र्श या रह़मत के) साये में रखेगा जब उस के सिवा कोई साया न होगा : (1) आ़दिल बादशाह (2) वोह जवान जो **अल्लाह** की इ़बादत में जवानी गुज़ारे (3) वोह शख़्स जिस का दिल मस्जिद में लगा रहे (4) वोह दो शख़्स जो **अल्लाह** के लिये मह़ब्बत करें जम्अ़ हों तो इसी मह़ब्बत पर और जुदा हो तो इसी पर (5) और वोह शख़्स जिसे ख़ानदानी ह़सीन औ़रत बुलाए वोह कहे : मैं **अल्लाह** से डरता हूं (6) और वोह शख़्स जो छुप कर ख़ैरात करे ह़त्ता कि उस का बायां हाथ न जाने के दाहिना हाथ क्या दे रहा है ? (7) और वोह शख़्स जो तन्हाई में **अल्लाह** को याद करे तो उस की आंखें बहने लगें।

(مسلم، کتاب الزکاۃ، باب فضل اخفاء الصدقۃ، ص٥١٤، حدیث:١٠٣١)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी अपनी रह़मत के साये में या अ़र्शे आ'ज़म के साये में (रखेगा) ताकि क़ियामत की धूप से मह़फ़ूज़ रहे। (''वोह जवान जो **अल्लाह** की इ़बादत में जवानी गुज़ारे'' के तह़्त मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं) या'नी जवानी में गुनाहों से बचे और रब को याद रखे, चूंकि जवानी में आ'ज़ा क़वी (या'नी मज़बूत़) और नफ़्स गुनाहों की त़रफ़ माइल होता है, इस लिये इस ज़माने की इ़बादत बुढ़ापे की इ़बादत से अफ़्ज़ल है।

دَرْ جَوانِی تَوْبَہ کَرْدَنْ سُنَّتِ پَیْغَمْبَرِیْ اَسْت

وَقْتِ پِیْرِیْ گُرْگِ ظَالِمْ مِیْشَوَدْ پَرْہِیْزْگَار

(या'नी जवानी में अल्लाह की बारगाह में रुजूअ़ करना पैग़म्बरों का त़रीक़ा है और बुढ़ापे के वक़्त तो ज़ालिम भेड़िया भी परहेज़गार बन जाता है ।) (मिरआतुल मनाजीह़, 1/435)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(29) तुम्हारे बेहतरीन लोग वोह हैं जो वा'दा पूरा करते हैं

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : خِیَارُکُمُ الْمُوْفُوْنَ الْمُطَیَّبُوْنَ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْخَفِیَّ التَّقِیَّ या'नी तुम्हारे बेहतरीन लोग वोह हैं जो वा'दा पूरा करने वाले और नेक त़बीअ़त के मालिक हैं, बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ गुमनाम और परहेज़गार बन्दे को पसन्द फ़रमाता है ।

(مسند ابی یعلی، مسند ابی سعید الخدری، ۱/ ٤٥١، حدیث: ۱۰٤۷)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه फ़रमाते हैं : "اَلْمُوْفُوْن" से मुराद वोह लोग हैं जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये अपने वा'दों की पासदारी करें और "مُطَیَّبُوْنَ" से मुराद वोह क़ौम है जिस ने अपने हाथों को इ़त्र में डुबो कर क़सम खाई थी, वाक़िआ़ कुछ यूं है कि एक मरतबा बनू हाशिम, बनू ज़हरा और बनू तमीम ज़मानए जाहिलिय्यत में "दारे इब्ने जदआ़न" में जम्अ़ हुवे और अपने हाथों को इ़त्र (के एक प्याले) में डुबो कर येह वा'दा किया कि मजबूर व बे सहारा लोगों की मदद और मज़लूमों की फ़रयाद रसी करेंगे, जब

कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जो उस वक़्त कम सिन थे येह भी उन के साथ मौजूद थे, चूंकि उन क़बीलों ने अपना वा'दा वफ़ा किया लिहाज़ा रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह ख़बर दे कर कि मख़्लूक़ में बेहतरीन वोह लोग हैं जो अपना वा'दा पूरा करते हैं उन लोगों की ता'रीफ़ बयान की । बज़ाहिर ऐसा लगता है कि उन लोगों ने ज़मानए नबवी पा लिया होगा और मुसलमान हो गए होंगे, यहां येह भी मुमकिन है कि "مُطَيَّبُوْنَ" से मुराद वोह लोग हों जो उन क़बीलों के नक़्शे क़दम पर चलते हुवे वा'दा वफ़ा करने के मुआ़मले में अमानत दार हों ।

(فيض القدير، ۲/۵٦٩، تحت الحديث : ۲۲٦۹)

अपने वा'दे पूरे करो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने क़ुरआने मजीद में फ़रमाया :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ (پ٦، المائدة : ١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *ऐ ईमान वालो अपने क़ौल पूरे करो ।*

तफ़्सीरे "क़ुरतुबी" में मन्क़ूल है : इस से वोह अ़क़्द मुराद है जो इन्सान ख़ुद पर लाज़िम कर लेता है, जैसे ख़रीदो फ़रोख़्त, इजारा, किराए पर कुछ देना, निकाह़ व त़लाक़ का मुआ़मला, खेती बाड़ी के लिये ज़मीन देना, बाहम सुल्ह़ का मुआ़मला, किसी को मालिक बनाना, इख़्तियारात देना, ग़ुलाम आज़ाद करना और मुदब्बर(1) बनाना वग़ैरा वोह उमूर जो शरीअ़त से ख़ारिज न हों ।

(الجامع لاحكام القرآن، جزء ٦، سورة المائدة، ٣/ ٤، تحت الآية : ١)

مدينه

(1)......जिस ग़ुलाम को उस के आक़ा ने कह दिया हो कि मेरे मरने के बा'द तुम आज़ाद हो (बहारे शरीअ़त, 2/290)

दूसरी आयत में यूं इरशाद फ़रमाया :

اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْـُٔوْلًا ﴿۳۴﴾ (پ۱۵، بنی اسرائیل :۳٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक अ़ह्द से सुवाल होना है।

तफ़्सीरे ''त़बरी'' में मन्कूल है : बिलाशुबा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अ़ह्द तोड़ने वाले से पुरसिश फ़रमाएगा, इस लिये ऐ लोगो ! तुम्हारे और जिस के साथ अ़ह्द तै पाया है उसे न तोड़ो ! कि कहीं वा'दा ख़िलाफ़ी कर के ग़द्दारी करो। (تفسیر الطبری، سورۃ الاسراء، ۸/ ۷۸، تحت الآیۃ : ۳٤)

फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि : जो मुसलमान अ़ह्द शिकनी और वा'दा ख़िलाफ़ी करे उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्तों और तमाम इन्सानों की ला'नत है और उस का न कोई फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल।

(بخاری،کتاب الجزیۃ والموادعۃ،باب اثم من عاھدثم غدر،۲/ ۳۷۰حدیث:۳۱۷۹)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : जो मुसलमान दूसरे मुसलमान के ज़िम्मे या उस की दी हुई अमान तोड़े या उस के किये हुवे वा'दों के ख़िलाफ़ करे उस पर ला'नत है।

(मिरआतुल मनाजीह़, 4/209)

हिकायत : 38

ऐ नौजवान ! तुम ने तो मुझे मशक़्क़त में डाल दिया

वा'दे की पाबन्दी अख़्लाक़ की एक बहुत ही अहम और निहायत ही हरी भरी शाख़ है। इस ख़ुसूसिय्यत में भी रसूले अ़रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ुल्क़ अ़ज़ीम तरीन है। ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल ह़म्सा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه कहते हैं कि ए'लाने नबुव्वत से पहले मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कुछ सामान ख़रीदा, इसी सिलसिले में आप की कुछ रक़म मेरे ज़िम्मे बाक़ी रह गई, मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कहा : आप यहीं ठहरिये मैं अभी अभी घर से रक़म ला कर इसी जगह पर आप को देता हूं। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उसी जगह ठहरे रहने का वा'दा फ़रमा लिया मगर मैं घर आ कर अपना वा'दा भूल गया फिर तीन दिन के बा'द मुझे जब ख़याल आया तो रक़म ले कर उस जगह पर पहुंचा तो क्या देखता हूं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसी जगह ठहरे हुवे मेरा इन्तिज़ार फ़रमा रहे हैं। मुझे देख कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पेशानी पर बल नहीं आया और इस के सिवा आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने और कुछ नहीं फ़रमाया कि ऐ नौजवान ! तुम ने तो मुझे मशक़्क़त में डाल दिया क्यूंकि मैं अपने वा'दे के मुत़ाबिक़ तीन दिन से यहां तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहा हूं।

(الشفاء،الباب الثانی، فصل واما خلقه...الخ ،ص۱۲۶،جزء ۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हिकायत : 39 वा'दे के सच्चे पैग़म्बर

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल बिन अ़क़ील رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : एक मरतबा ह़ज़रते इस्माईल عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने किसी शख़्स से एक जगह मिलने का वा'दा किया, तै़ शुदा वक़्त पर आप عَلَیْہِ السَّلَام वहां तशरीफ़ ले गए, लेकिन वोह शख़्स भूल गया, आप عَلَیْہِ السَّلَام वहीं ठहरे रहे, ह़त्ता कि शाम हो गई और फिर रात भी आप عَلَیْہِ السَّلَام ने वहीं बसर की, अगले दिन वोह शख़्स आया और आप से पूछने लगा कि आप कल से यहां हैं ? गए नहीं ? आप عَلَیْہِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : नहीं, मैं कल से यहीं हूं। येह सुन कर उस शख़्स ने मा'ज़ेरत की, कि मैं कल आना भूल गया था, येह सुन कर आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : जब तक तुम नहीं आ जाते तब तक मैं यहीं ठहरा रहता। **(تفسیر طبری،۸/۳۰۱)**

हिकायत : 40 दस हज़ार देने का वा'दा पूरा किया

ह़ज़रते सय्यिदुना मुन्कदिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : ऐ उम्मुल मोमिनीन ! मैं फ़ाक़ाकशी का शिकार हूं। उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने इरशाद फ़रमाया : मेरे पास कोई चीज़ मौजूद नहीं है, अगर मेरे पास दस हज़ार दिरहम भी होते तो मैं वोह तुम्हारे पास भेज देती। ह़ज़रते सय्यिदुना मुन्कदिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब वापस चले गए तो उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के पास ह़ज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन उसैद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की त़रफ़ से दस हज़ार दिरहम आए जो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने उन की त़रफ़ भेज दिये। ह़ज़रते सय्यिदुना

मुन्किदिर رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ वोह रक़म ले कर बाज़ार गए और एक हज़ार दिरहम के इ़वज़ एक कनीज़ ख़रीदी जिस से आप के तीन बेटे पैदा हुवे और उन का शुमार मदीनए मुनव्वरा के बड़े इ़बादत गुज़ारों में हुवा, उन तीनों के नाम मुह़म्मद, अबू बक्र और उ़मर थे (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰی)

(المستطرف،١/٢٧٥)

वा'दा ख़िलाफ़ी क्या है ?

ह़दीसे पाक में है : वा'दा ख़िलाफ़ी येह नहीं कि एक शख़्स वा'दा करे और उसे पूरा करने की निय्यत भी रखता हो फिर पूरा न कर सके, बल्कि वा'दा ख़िलाफ़ी तो येह है कि वा'दा तो करे मगर पूरा करने की निय्यत न हो फिर पूरा न करे।

(شرح اصول اعتقاد اهل السنة...الخ،سياق ماروى عن النبى ان سباب المسلم...الخ،٢/٨٦٨، حديث:١٨٨١)

एक और ह़दीसे पाक में है कि जब कोई शख़्स अपने भाई से वा'दा करे और उस की निय्यत पूरा करने की हो फिर पूरा न कर सके, वा'दे पर न आ सके तो उस पर गुनाह नहीं।

(ابوداؤد،كتاب الادب،باب فى العدة، ٤ / ٣٨٨ حديث ٤٩٩٥)

वा'दा पूरा करने की निय्यत न हो मगर इत्तिफ़ाक़न पूरा हो जाए तो

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : ह़दीस का मत़लब येह है कि अगर वा'दा करने वाला पूरा करने का इरादा रखता हो मगर किसी उ़ज़्र या मजबूरी की वज्ह से पूरा न कर सके तो वोह गुनाहगार नहीं, यूं ही अगर किसी की निय्यत वा'दा ख़िलाफ़ी की हो मगर इत्तिफ़ाक़न पूरा

कर दे तो गुनहगार है उस बद निय्यती की वज्ह से । हर वा'दे में निय्यत का बड़ा दख़्ल है । (मिरआतुल मनाजीह़, 6/492)

वा'दे के बारे में दो मदनी फूल

(1) **आ'ला ह़ज़रत**, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن एक सुवाल के जवाब में फ़रमाते हैं : जो शख़्स किसी से एक अम्र का वा'दा करे और उस वक़्त उस की निय्यत में फ़रेब न हो, बा'द को उस में कोई ह़रज ज़ाहिर हो, और इस वज्ह से उस अम्र को तर्क करे तो उस पर भी ख़िलाफ़े वा'दा का इल्ज़ाम नहीं ।

(फ़तावा रज़विय्या, 24/351)

(2) सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی लिखते हैं : वा'दा किया मगर उस को पूरा करने में कोई शरई क़बाह़त थी इस वज्ह से पूरा नहीं किया तो इस को वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं कहा जाएगा और वा'दा ख़िलाफ़ करने का जो गुनाह है इस सूरत में नहीं होगा अगर्चे वा'दा करने के वक़्त इस ने इस्तिसना न किया हो कि यहां शरीअ़त की जानिब से इस्तिसना मौजूद है इस को ज़बान से कहने की ज़रूरत नहीं मसलन वा'दा किया था कि "मैं फ़ुलां जगह पर आऊंगा और वहां बैठ कर तुम्हारा इन्तिज़ार करूंगा ।" मगर जब वहां गया तो देखता है कि नाच रंग और शराब ख़ोरी वग़ैरा में लोग मश्ग़ूल हैं, वहां से येह चला आया तो येह वा'दा ख़िलाफ़ी नहीं है, या उस का इन्तिज़ार करने का वा'दा किया और इन्तिज़ार कर रहा था कि नमाज़ का वक़्त आ गया, येह चला आया (तो येह) वा'दे के ख़िलाफ़ नहीं हुवा ।

(बहारे शरीअ़त, 3/652)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(30) बेहतरीन लोगों की निशानियां

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है :

خِیَارُ اُمَّتِی فِیمَا اَنْبَاَنِی الْمَلَاُ الْاَعْلٰی لَقَوْمٌ یَضْحَکُونَ جَھْرًا فِی سَعَةِ رَحْمَةِ رَبِّھِمْ وَیَبْکُونَ سِرًّا مِنْ خَوْفِ شِدَّةِ عَذَابِ رَبِّھِمْ وَیَذْکُرُونَ رَبَّھُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِیِّ

या'नी फ़िरिश्तों ने जो मुझे बताया उस के मुत़ाबिक़ मेरी उम्मत में बेहतरीन लोग वोह हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत की वुस्अ़त देख कर लोगों के सामने ख़ूब ख़ुश होते, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की शिद्दत की बिना पर छुप कर रोते और सुब्ह़ो शाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते हैं । (شعب الایمان، باب فی الخوف، ۱/۴۷۸، حدیث:۷۶۵)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ख़ौफ़ और उम्मीद कैसी होनी चाहिये ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरुल मोमिनीन अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने शहज़ादे से फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस त़रह़ **ख़ौफ़** खाओ कि तुम्हारे ख़याल में अगर तुम तमाम ज़मीन वालों की नेकियां भी उस के पास लाओ तो वोह तुम से उन को क़बूल न करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से **उम्मीद** इस त़रह़ रखो कि तुम समझो कि अगर तमाम अहले ज़मीन की बुराइयां भी उस के पास लाओ तो वोह तुम्हें बख़्श देगा ।

(احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، ۴/ ۲۰۲)

फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की उम्मीद और ख़ौफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरुल मोमिनीन उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि अगर आवाज़ दी जाए कि एक आदमी के इ़लावा सब

लोग जहन्नम में चले जाएं तो मुझे **उम्मीद** है कि वोह (या'नी जहन्नम से बच जाने वाला) आदमी मैं होऊंगा और अगर आवाज़ दी जाए कि एक आदमी के सिवा सब लोग जन्नत में चले जाएं तो मुझे **डर** है कि कहीं वोह (या'नी जन्नत में न जाने वाला) एक शख़्स मैं न होउं।

(احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، ٤/ ٢٠٢)

बारगाहे इलाही तक रसाई की दो ख़स्लतें

ह़ज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मुत़रफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : हम अक्सर ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन सोह़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के पास जाते, वोह कहा करते थे : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दो ! (एक दूसरे की) तकरीम करो और अच्छे सुलूक से पेश आओ क्यूंकि बारगाहे इलाही तक रसाई का ज़रीआ़ दो ख़स्लतें या'नी **ख़ौफ़** और **उम्मीद** हैं।

(حلیة الاولیاء، مطرف بن عبد الله ٢/ ٢٣٣، رقم: ٢٠٤٧)

मख्खी के सर बराबर आंसू की अहम्मिय्यत

सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़फ़िरत निशान है : जिस मोमिन की आंखों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से आंसू निकलते हैं अगर्चे मख्खी के सर के बराबर हों, फिर वोह आंसू उस के चेहरे के ज़ाहिरी ह़िस्से को पहुंचें तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम पर ह़राम कर देता है।

(شعب الایمان، باب فی الخوف من الله تعالی، ١/ ٤٩٠ حدیث: ٨٠٢)

ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब बीमार दिखाई देते

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام को लोग बीमार ख़याल करते हुवे उन की इ़यादत करने के लिये आया करते थे ह़ालांकि उन की येह ह़ालत सिर्फ़ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से हुवा करती थी। (منهاج القاصدين،ربع المنجيات،كتاب الرجاء و الخوف،١١٧٩/٣)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(31) बेहतरीन उम्मतियों की ता'दाद

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : हर दौर में मेरे बेहतरीन उम्मतियों की ता'दाद पांच सौ है और अब्दाल चालीस हैं, पांच सौ से कोई कम होता है और न ही चालीस में, जब चालीस अब्दाल में से किसी का इन्तिक़ाल होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पांच सौ में से एक को उस फ़ौत होने वाले अब्दाल की जगह पर मुक़र्रर फ़रमाता और यूं 40 की कमी पूरी फ़रमा देता है, अ़र्ज़ की गई : हमें उन के आ'माल के बारे में इरशाद फ़रमाइये। फ़रमाया : ज़ुल्म करने वाले को मुआ़फ़ करते, बुराई करने वाले के साथ भलाई से पेश आते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो कुछ उन्हें अ़ता फ़रमाया उस से लोगों की ग़म ख़्वारी करते हैं। (حلية الاولياء،١/ ٣٩،حديث:١٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला उमूर बड़े ही अहम्मिय्यत के ह़ामिल हैं, हमें भी चाहिये कि अगर कोई ज़ुल्म करे तो मुआ़फ़ कर दें, कोई बुराई करे तो बदला लेने के बजाए उस के साथ भलाई से पेश आएं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो माल अ़ता फ़रमाया है

उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में ख़र्च करने का ज़ेह्न बनाएं तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ हम भी नेक बन्दों की बरकतों से मह़रूम नहीं रहेंगे।

अब्दालों के चार औसाफ़

ह़ज़रते सय्यिदुना सहल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं : चार ख़स्लतों के बिग़ैर अब्दाल का मर्तबा ह़ासिल नहीं होता : (1) पेट को भूका रखना (2) बेदारी (3) ख़ामोशी (4) लोगों से दूर रहना।

(احیاء علوم الدین، کتاب ریاضة النفس...الخ، بیان شروط الإرادة ومقدمات المجاهدة...الخ، ۹٤/۳)

अब्दाल किस वज्ह से जन्नत में दाख़िल होंगे ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है कि नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मेरी उम्मत के अब्दाल जन्नत में (मह़ज़) अपने आ'माल की बिना पर दाख़िल न होंगे बल्कि वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत, नफ़्स की सख़ावत, दिल की पाकीज़गी और तमाम मुसलमानों पर रह़ीम होने की वज्ह से जन्नत में दाख़िल होंगे। (شعب الایمان، باب فی الجود والسخاء، ٤۳۹/۷، حدیث : ۱۰۸۹۳)

अब्दाल कहां रहते हैं ?

चालीस अब्दाल हमेशा शाम के शहर दिमश्क़ में रहेंगे इस लिये वहां फ़िरिश्ते ह़िफ़ाज़त के लिये मुक़र्रर हैं। मा'लूम हुवा कि अल्लाह वालों की बरकत से मुल्क में ह़िफ़्ज़ो अमान रहती है। ख़याल रहे कि इस से येह लाज़िम नहीं कि शाम में कभी किसी को कोई

तक्लीफ़ नहीं होगी हां दूसरे मक़ामात से कम या वहां कुफ़्रो गुनाह कम होंगे जैसे हर इन्सान के साथ हिफ़ाज़ती फ़िरिश्ते रहते हैं मगर फिर भी इन्सान को तक्लीफ़ पहुंच जाती है कि येह तक्लीफ़ रब तआ़ला के हुक्म से आती है उस वक़्त फ़िरिश्ते हिफ़ाज़त नहीं करते। (मिरआतुल मनाजीह़, 8/580)

हिकायत : 41 राहिबों का क़बूले इस्लाम

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मदयन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ साहिबे करामात व तसर्रुफ़ात बुज़ुर्ग थे। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ उन्दुलुस की जामेअ़ मस्जिद ख़िज्र में नमाज़े फ़ज्र के बा'द बयान फ़रमाया करते थे। दस बड़े राहिब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को आज़माने के लिये भेस बदल कर मुसलमानों के लिबास में लोगों के साथ मस्जिद में बैठ गए और किसी को ख़बर तक न हुई। जब आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बयान शुरूअ़ करने लगे तो थोड़ी देर के लिये ख़ामोश हो गए, फिर एक दरज़ी ह़ाज़िर हुवा। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : इतनी देर क्यूं लगा दी ? उस ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! आप के हुक्म पर रात को टोपियां बनाते हुवे देर हो गई। आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने उस से टोपियां लीं और खड़े हो कर सब राहिबों को पहना दीं। लोगों को इस से बड़ा तअ़ज्जुब हुवा लेकिन मुआ़मला अभी तक वाज़ेह़ न हुवा था। फिर आप رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने बयान शुरूअ़ कर दिया, जिस में येह जुम्ला भी फ़रमाया : ऐ फ़ुक़रा ! जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से तौफ़ीक़ की हवाएं सआ़दत मन्द दिलों पर चलती हैं तो वोह हर रौशनी को बुझा देती हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, ऐ फ़ुक़रा ! जब इ़नायत के अन्वार मुर्दा दिलों पर रौशनी करते हैं तो वोह राह़त व सुकून से ज़िन्दगी बसर करते हैं और हर

ज़ुल्मत उन के लिये रौशन हो जाती है, फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने आयते सजदा की तफ़्सीर बयान करते हुवे जब सजदा किया और लोगों ने भी सजदा किया तो राहिब भी रुस्वाई के ख़ौफ़ से लोगों के साथ सजदे में गिर गए। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सजदे में यूं दुआ़ की : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू अपनी मख़्लूक़ की तदबीर और अपने बन्दों की मस्लिहत बेहतर जानता है, येह राहिब मुसलमानों के लिबास में मुसलमानों के साथ तेरी बारगाह में सजदा किये हुवे हैं, मैं ने इन के ज़ाहिर को तब्दील कर दिया, इन के बातिन को तब्दील करने पर तेरे सिवा कोई क़ादिर नहीं, मैं ने इन्हें तेरे ख़्वाने करम पर बिठा दिया है तू इन को कुफ़्र की तारीकी से निकाल कर नूरे ईमान में दाख़िल फ़रमा दे। राहिबों ने अभी सर सजदे से न उठाए थे कि उन से कुफ़्रो शिर्क की नापाकी दूर हो गई और वोह दाइरए इस्लाम में दाख़िल हो गए। **(الروض الفائق، المجلس الثلاثون،ص١٦٣)**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(32) तुम सब में बेहतरीन मेरे सहा़बा हैं

सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रिफ़्अ़त निशान है : اَلَاوَاِنَّ اَصْحَابِیْ خِیَارُکُمْ فَاَکْرِمُوْهُمْ या'नी ख़बरदार ! मेरे सहा़बा तुम सब में बेहतरीन हैं उन की इ़ज़्ज़त करो।

(المعجم الأوسط،٥/٦،حديث:٦٤٠٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तमाम सहा़बए किराम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم अहले ख़ैरो सलाह़ हैं और आ़दिल, उन का जब ज़िक्र

किया जाए तो ख़ैर ही के साथ होना फ़र्ज़ है। किसी सहाबी के साथ सूए अ़क़ीदत बद मज़हबी व गुमराही व इस्तिह़क़ाक़े जहन्नम है कि वोह हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ बुग़्ज़ है। तमाम सहाबए किराम आ'ला व अदना (और इन में अदना कोई नहीं) सब जन्नती हैं वोह जहन्नम की भिनक (हल्की सी आवाज़ भी) न सुनेंगे और हमेशा अपनी मन मानती मुरादों में रहेंगे। (बहारे शरीअ़त, 1/254) उन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या की फ़ज़ीलत व मद्ह, उन के हुस्ने अ़मल, हुस्ने अख़्लाक़ और हुस्ने ईमान के तज़किरे से किताबें मालामाल हैं और उन्हें दुन्या ही में मग़फ़िरत, इन्आ़माते उख़रवी और बारी तआ़ला की रिज़ा व ख़ुशनूदी का मुज़्दा सुनाया गया। चुनान्चे, **क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने ह़मीद** में इरशादे बारी तआ़ला है :

رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ

(پ۱۱،التوبہ:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह उन से राज़ी और वोह अल्लाह से राज़ी हैं।

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का निहायत अदब कीजिये

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : मुसलमान को चाहिये कि सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का निहायत अदब रखे और दिल में इन की अ़क़ीदत व मह़ब्बत को जगह दे। इन की मह़ब्बत हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मह़ब्बत है और जो बद नसीब सहाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की शान में बे अदबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने ख़ुदा व रसूल है। मुसलमान ऐसे शख़्स के पास न बैठे। (सवानह़े करबला, स. 31)

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه फ़रमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्ह़ाबे हुज़ूर

नज्म हैं और नाव है इ़तरत रसूलुल्लाह की

(या'नी अहले सुन्नत का बेड़ा पार है क्यूंकि सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان उन के लिये सितारों की मानिन्द और अहले बैते अत़्हार عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان कश्ती की त़रह़ हैं ।)

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को ईज़ा देने वाले की सज़ा

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस ने मेरे सह़ाबा को ईज़ा दी उस ने मुझे ईज़ा दी और जिस ने मुझे ईज़ा दी उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी और जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को ईज़ा दी तो क़रीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे पकड़े ।

(ترمذی،کتاب المناقب،باب فی من سب أصحاب النبی صلی اللہ علیہ وسلم، ٥/٤٦٣، حدیث:٣٨٨٨)

हिकायत : 42 गुस्ताख़ का अन्जाम

मन्क़ूल है कि हुज्जाज का एक क़ाफ़िला मदीनए मुनव्वरा पहुंचा । तमाम अहले क़ाफ़िला अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के मज़ारे मुबारक पर ज़ियारत करने और फ़ातिह़ा ख़्वानी के लिये गए लेकिन एक शख़्स जो आप से बुग़्ज़ो इ़नाद रखता था तौहीन व इहानत के त़ौर पर आप के मज़ार की ज़ियारत के लिये नहीं गया और लोगों से कहने लगा कि बहुत दूर है इस लिये मैं नहीं जाऊंगा । जब येह क़ाफ़िला अपने वत़न को वापस आने लगा तो क़ाफ़िले के तमाम अफ़राद ख़ैरो आ़फ़िय्यत और सलामती के साथ अपने अपने वत़न पहुंच गए लेकिन वोह शख़्स जो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की

क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत के लिये नहीं गया था उस का येह अन्जाम हुवा कि दरमियाने राह में बीच क़ाफ़िले के अन्दर एक दरिन्दा ग़ुर्राता हुवा आया और उस शख़्स को अपने दांतों से दबोच कर और पंजों से फाड़ कर टुकड़े टुकड़े कर डाला। येह मन्ज़र देख कर तमाम अहले क़ाफ़िला ने यक ज़बान हो कर कहा येह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की बे अदबी व बे हुरमती का अन्जाम है। **(شواھدالنبوۃ،ص۲۱۰)**

सह़ाबए किराम के गुस्ताख़ों के साथ बरताव

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : मेरे सह़ाबा को गाली मत दो, क्यूंकि आख़िर ज़माने में एक क़ौम आएगी, जो मेरे सह़ाबा को गाली देगी, पस अगर वोह (गालियां देने वाले) बीमार हो जाएं तो उन की इ़यादत न करना, अगर मर जाएं तो उन की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ना, उन से एक दूसरे का निकाह़ न करना, न उन्हें विरासत में से ह़िस्सा देना, न उन्हें सलाम करना और न ही उन के लिये रह़मत की दुआ़ करना।

(تاریخ بغداد،۸/۱۳۸رقم:۴۲۴۰)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर मुसलमान को **अल्लाह** वालों की बे अदबी व गुस्ताख़ी की ला'नत से मह़फ़ूज़ रखे और अपने मह़बूबों की ता'ज़ीमो तौक़ीर और उन के अदबो एह़तिराम की तौफ़ीक़ बख़्शे।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

(33) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का सब से बेहतरीन बन्दा

ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इरशाद फ़रमाते हैं कि हम दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक जनाज़े में शरीक थे कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सब से बेहतरीन बन्दे के बारे में न बताऊं ? वोह कमज़ोर और ज़ईफ़ समझा जाने वाला बोसीदा लिबास पहनने वाला शख़्स है जिसे कोई अहम्मिय्यत नहीं दी जाती लेकिन अगर वोह किसी बात पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम उठा ले तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमाए।

(مسند احمد، ۹/۱۲۰ حدیث:۲۳۵۱۷)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने आ़ली के दो मत़लब हो सकते हैं : एक येह कि वोह बन्दा अगर अल्लाह तआ़ला को क़सम दे कर कोई चीज़ मांगे कि ख़ुदाया तुझे क़सम है अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की ! येह कर दे तो रब तआ़ला ज़रूर कर दे, येह है बन्दे की ज़िद अपने रब पर। दूसरे येह कि अगर वोह बन्दा ख़ुदा के काम पर क़सम खा कर लोगों को ख़बर दे दे तो ख़ुदा उस की क़सम पूरी कर दे मसलन वोह कह दे कि ख़ुदा की क़सम ! तेरे बेटा होगा या रब की क़सम ! आज बारिश होगी तो रब तआ़ला उन की ज़बान सच्ची करने के लिये येह कर दे, बा'ज़ लोग बुज़ुर्गों की ज़बान से कुछ कहलवाते हैं : हुज़ूर ! कह दो कि तेरे बेटा होगा, कह दो कि तू मुक़द्दमे में कामयाब होगा, इस अ़मल का माख़ज़ येह ह़दीस है। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/58)

हिकायत : 43 गुदड़ी में ला'ल

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ القَوِی बयान करते हैं कि एक मरतबा बसरा में कुछ झोंपड़ियां आग से जल गईं लेकिन उन के दरमियान एक झोंपड़ी सलामत रही। उन दिनों हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ बसरा के अमीर थे। आप رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ को जब इस का पता चला तो उस झोंपड़ी के मालिक को बुलावा भेजा। चुनान्चे, एक बूढ़े शख़्स को लाया गया तो आप ने उस से फ़रमाया : शैख़ ! क्या वज्ह है कि तुम्हारी झोंपड़ी को आग नहीं लगी ? उस ने जवाब दिया : मैं ने अपने रब عَزَّوَجَلَّ को क़सम दी थी कि इस को न जलाए। येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया कि बेशक मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को येह फ़रमाते हुवे सुना है : मेरी उम्मत में ऐसे लोग होंगे जिन के बाल परागन्दा और कपड़े मैले होंगे अगर वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खाएं तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन की क़सम को ज़रूर पूरा करेगा।

(موسوعة الامام ابن ابی الدنیا، ۲/۳۹۸، حدیث: ۴۲)

हिकायत : 44 आग को क़सम दी तो बुझ गई

मन्क़ूल है कि एक बार बसरा में कहीं आग लग गई तो हज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा ख़व्वास عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الوَھَّاب तशरीफ़ लाए और आग पर चलने लगे। बसरा के अमीर ने उन से कहा : देखिये ! कहीं आप आग में जल न जाएं। आप رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : बेशक मैं ने

अपने रब عَزَّوَجَلَّ को क़सम दी है कि वोह मुझे आग से न जलाए। इस पर अमीर ने अ़र्ज़ की : फिर आप आग को क़सम दें कि बुझ जाए। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने आग को क़सम दी तो वोह बुझ गई।

(احیاء علوم الدین ، کتاب المحبة والشوق والأنس والرضا،بیان معنی الانبساط والادلال۔الخ،٥/ ٦٠)

हिकायत : 45 गधे की वापसी

एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स नैशापूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُاللهِ الْقَوِی कहीं जा रहे थे कि सामने से एक देहाती आया जिस के होशो ह़वास सलामत नहीं थे। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : तुम्हें क्या मुसीबत पहुंची है ? उस ने कहा : मेरा गधा गुम हो गया है और उस के इ़लावा मेरे पास कोई गधा नहीं। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ठहर गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ गुज़ार हुवे कि तेरी इ़ज़्ज़त और जलाल की क़सम ! मैं उस वक़्त तक एक क़दम भी नहीं उठाऊंगा जब तक तू इस का गधा लौटा न दे। उसी वक़्त उस का गधा नज़र आ गया और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़फ़्स رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه वहां से चल पड़े।

(احیاء علوم الدین ،کتاب المحبة والشوق والأنس والرضا،بیان معنی الانبساط والادلال۔الخ، ٥/ ٦٠)

हिकायत : 46 मुस्तजाबुल क़सम सह़ाबी

ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुशरिकीन के ख़िलाफ़ एक लड़ाई में शरीक हुवे। उस जंग में मुशरिकीन ने मुसलमानों को बहुत ज़ियादा नुक़्सान पहुंचाया तो मुसलमानों ने ह़ज़रते सय्यिदुना

बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से कहा : ''ऐ बरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया है कि ''अगर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खाओ तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ज़रूर तुम्हारी क़सम को पूरा फ़रमाएगा पस आप (मुशरिकीन के ख़िलाफ़) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खा लीजिये ! ह़ज़रते सय्यिदुना बरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझे क़सम देता हूं कि हमें मुशरिकीन पर ग़लबा अ़ता फ़रमा। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह दुआ क़बूल हुई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुसलमानों को मुशरिकीन पर ग़लबा अ़ता फ़रमा दिया। फिर एक मरतबा ''सोस'' के पुल पर मुसलमानों का कुफ़्फ़ार से आमना सामना हुवा तो कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों को सख़्त नुक़्सान पहुंचाया, मुसलमानों ने कहा : ''ऐ बरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ! अपने रब عَزَّوَجَلَّ पर क़सम खाइये ! उन्हों ने अ़र्ज़ की : ''या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझे क़सम देता हूं कि हमें कुफ़्फ़ार पर ग़लबा अ़ता फ़रमा ! और मुझे अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ मिला दे (या'नी शहादत अ़ता फ़रमा दे)। ह़ज़रते सय्यिदुना बरा बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की येह दुआ भी क़बूल हुई और मुसलमानों को फ़त्ह़ नसीब हुई जब कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ शहीद हो गए।''

(المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، باب ذكر شهادة البراء بن مالك، ٤/ ٣٤٠، حديث: ٥٣٢٥)

बादशाह के सामने ह़क़ गोई

एक दफ़्आ़ बादशाह ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह क़त्तान رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के क़त्ल के दरपे हो गया तो सिपाही

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को गिरिफ़्तार कर के वज़ीर के पास ले गए। वज़ीर ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को अपने सामने बिठाया तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस से मुख़ातब हो कर फ़रमाया : "ऐ ज़ालिम इन्सान ! ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और अपने नफ़्स के दुश्मन ! मुझे क्यूं तक्लीफ़ पहुंचा रहा है ?" वज़ीर बोला : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जो ज़िन्दगी तुम्हें दी है इस के बा'द अब तुम कभी ज़िन्दा नहीं रह सकते ।" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने उस से इरशाद फ़रमाया : "तू मौत को क़रीब नहीं ला सकता और तक़दीर का लिखा टाल नहीं सकता बल्कि येह सब कुछ जो तू कह रहा है नहीं होगा, अलबत्ता ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तुम्हारे जनाज़े में ज़रूर शरीक होऊंगा ।" वज़ीर ने अपने मुहाफ़िज़ों को हुक्म दिया : "इसे क़ैद कर दो यहां तक कि मैं इस के क़त्ल के बारे में बादशाह से मश्वरा कर लूं ।" पस उस रात आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को क़ैद कर दिया गया और आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه क़ैदख़ाने की तरफ़ जाते हुवे फ़रमा रहे थे : "मोमिन का क़ैदख़ाने में मुसलसल रहना इन्तिहाई तअज्जुब की बात है बल्कि येह भी क़ैदख़ाने (या'नी दुन्या) के बा'ज़ घरों में से एक घर है ।" दूसरे दिन जब बादशाह तख़्त पर बैठा तो वज़ीर ने शैख़ (رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه) का सारा माजरा कह सुनाया । बादशाह ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه को दरबार में बुला लिया, उस ने ऐसी वज़्अ़ क़त्अ़ के एक इन्सान को देखा जिस की तरफ़ कोई तवज्जोह न करे और न ही अहले दुन्या में से कोई उस की भलाई चाहता हो । येह सब कुछ उन की हक़ीक़त बयानी और लोगों के उ़यूब को ज़ाहिर कर देने के सबब था और वोह लोग आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَیْه पर ज़ुल्मो जब्र की क़ुदरत न रखते थे ।

बहर ह़ाल बादशाह ने आप से नामो नसब पूछने के बा'द कहा : "क्या आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह़दत का इक़रार करते हैं ?" तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने मुख़्तलिफ़ जगहों से क़ुरआने करीम की तिलावत फ़रमाई जिस से बादशाह को बहुत तअ़ज्जुब हुवा और वोह आप से बे तकल्लुफ़ हो कर अपनी सल्त़नत और उस की वुस्अ़त के बारे में पूछने लगा कि "आप मेरी सल्त़नत के बारे में क्या फ़रमाते हैं ?" तो आप मुस्कुराने लगे। बादशाह ने कहा : "आप किस बात पर मुस्कुरा रहे हैं ?" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने जवाब दिया : "जिस यावह गोई का तू शिकार है उसे तू बादशाही व सल्त़नत का नाम देता है जब कि तू ख़ुद को बादशाह व सुल्त़ान कह रहा है ह़ालांकि तुम्हारी ह़ैसिय्यत उस बादशाह की सी है जिस के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह इरशाद फ़रमाया :

وَكَانَ وَرَآءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ غَصْبًا ﴿۷۹﴾ (پ ۱۶، الکھف : ۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन के पीछे एक बादशाह था कि हर साबित कश्ती ज़बरदस्ती छीन लेता।*

वोह बादशाह तो आज आग की मशक़्क़त झेल रहा होगा या उसे आग से जज़ा दी जा रही होगी और तू ऐसा शख़्स है जिस के लिये रोटी पकाई गई है और कहा जाता है : "इसे खाइये।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने बादशाह पर अपनी गुफ़्तगू को मज़ीद सख़्त करते हुवे हर वोह बात कह डाली जो उसे ना पसन्द हो और ग़ज़ब में मुब्तला कर दे। दरबार में वुज़रा और फ़ुक़हाए किराम की एक कसीर ता'दाद मौजूद थी, बादशाह चुप हो गया और शर्मिन्दा व नादिम हो कर कहने लगा : "येह शख़्स हिदायत याफ़्ता है।" फिर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه से

अ़र्ज़ की : "ऐ अ़ब्दुल्लाह ! आप हमारी मजलिस में आते रहा करें।" आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : "येह नहीं हो सकता क्यूंकि तेरी मजलिस ज़बरदस्ती की है और जिस महल में तू रहता है येह भी तुम ने नाहक़ छीना हुवा है, अगर मैं मजबूर न होता तो कभी भी यहां न आता, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे, तुम्हें और तुम जैसों को अलग अलग रखे।" अभी ज़ियादा अ़र्सा न गुज़रा था कि वोही वज़ीर फ़ौत हो गया और आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ते हुवे इरशाद फ़रमाया : "मैं अपनी क़सम से बरी हो गया।" **(الحديقة الندية، ١/ ٢١)**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी के सादा लिबास वग़ैरा को देख कर उसे ह़क़ीर और कमज़ोर जानना बड़ी भूल है। क्या मा'लूम हम जिसे ह़क़ीर तसव्वुर कर रहे हैं वोह कोई गुदड़ी का ला'ल या'नी मक़्बूल हस्ती हो।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(34) बेहतरीन लोग वोह हैं जो पाकदामन रहते हैं

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : خِيَارُ اُمَّتِيَ الَّذِيْنَ يَعِفُّوْنَ اِذَا اَتَاهُمُ اللهُ مِنَ الْبَلَاءِ شَيْئًا या'नी मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग वोह हैं जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन को आज़माइश में मुब्तला फ़रमाता है तो वोह पाक दामन रहते हैं, ह़ाज़िरीन ने अ़र्ज़ की : وَاَيُّ الْبَلَاءِ؟ वोह कौन सी आज़माइश है ? रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : هُوَ الْعِشْقُ वोह आज़माइश इ़श्क़ है। **(جامع الاحاديث، ٤/ ٣١٤، حديث: ١١٨٤٦)**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेक बनने पाक दामनी इख़्तियार करने के लिये अच्छी सोहबत इख़्तियार करना बहुत ज़रूरी है, निगाहों की हिफ़ाज़त, ख़यालात की पाकीज़गी हमें बुरे कामों से बचाए रखती हैं। हमें अपना वक़्त और सलाहिय्यतें ता'मीरी मक़ासिद के लिये इस्ति'माल करनी चाहियें, इसी में हमारी भलाई है, अगर हम करने के कामों में लग जाएंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ न करने के कामों से बचें रहेंगे, हज़रते अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى नक़्ल फ़रमाते हैं कि **''इश्क़ की बीमारी फ़राग़त से लगती है।''**

(فیض القدیر، ۶/ ۳۷۵، تحت الحدیث: ۹۲۸۰)

हिकायत : 47

बा हया नौजवान

अल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने उयूनुल हिकायात में एक सबक़ आमोज़ हिकायत नक़्ल की है कि कूफ़ा में एक इबादत गुज़ार, ख़ूब सूरत व नेक सीरत नौजवान रहता था। वोह अपना ज़ियादा तर वक़्त मस्जिद में गुज़ारता और यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मश्ग़ूल रहता। एक मरतबा एक हसीनो जमील और अक़्लमन्द औरत ने उसे देख लिया और उस की महब्बत में मुब्तला हो गई। एक दिन वोह रास्ते में आ खड़ी हुई और नौजवान से कुछ कहना चाहा मगर शर्मो हया के पैकर उस नौजवान ने उस की तरफ़ कोई तवज्जोह न दी और तेज़ी से मस्जिद की तरफ़ बढ़ गया। वापसी पर फिर वोही औरत मिली और तेज़ी से कहने लगी : ''मेरी बात तो सुन लो ! मैं तुम से कुछ कहना चाहती हूं।'' लेकिन नौजवान ने जवाब दिया कि येह तोहमत की जगह है मैं

नहीं चाहता कि लोग मुझ पर तोहमत धरें। औ़रत ने कहा : ''मैं जानती हूं कि तुझ जैसे नेक ख़स्लत और पाकीज़ा लोग आईने की मिस्ल होते हैं कि अदना सी ग़लती भी उन को ऐबदार बना देती है।'' फिर चन्द जुम्लों में उस से अपनी कैफ़िय्यत बयान कर दी। नौजवान उस की बात सुन कर कुछ कहे बिग़ैर अपने घर की जानिब चला गया। घर जा कर उस ने नमाज़ पढ़ना चाही लेकिन उसे ख़ुशूअ़ व ख़ुज़ूअ़ हासिल न हो सका, बिल आख़िर उस ने एक नसीहत भरा मक्तूब लिखा और बाहर जा कर उस औ़रत के सामने डाल कर चला आया, औ़रत ने मक्तूब खोला तो लिखा था :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

ऐ औ़रत ! येह बात अच्छी त़रह़ ज़ेह्न नशीन कर ले कि बन्दा जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है तो वोह उस से दर गुज़र फ़रमाता है। जब दोबारा गुनाह करता है तो उस की पर्दा पोशी फ़रमाता है लेकिन जब बन्दा इतना ना फ़रमान हो जाता है कि गुनाहों को अपना ओढ़ना बिछौना बना लेता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से सख़्त नाराज़ होता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी को ज़मीनो आस्मान, पहाड़, जानवर, शजरो ह़जर कोई भी चीज़ बरदाश्त नहीं कर सकती फिर किस में हिम्मत है कि वोह उस की नाराज़ी का सामना करे ! ऐ औ़रत ! अगर तू अपने बयान में झूटी है तो मैं तुझे वोह दिन याद दिलाता हूं कि जिस दिन आस्मान पिघल जाएगा और पहाड़ रूई की त़रह़ हो जाएंगे, और तमाम मख़्लूक़ **अल्लाह** जब्बारो क़ह्हार के सामने घुटने टेक देगी। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! मैं तो अपनी इस्लाह़ में कमज़ोर हूं फिर

भला मैं दूसरों की इस्लाह़ कैसे कर सकता हूं ? और अगर तू अपनी बातों में सच्ची है और वाक़ेई तेरी कैफ़िय्यत वोही है जो तू ने बयान की, तो मैं तुझे एक ऐसे त़बीब का पता बताता हूं जो इन दिलों का बेहतरीन इलाज जानता है, जो मरज़े इश्क़ की वज्ह से ज़ख़्मी हो गए हों और उन ज़ख़्मों का इलाज करना भी ख़ूब जानता है जो रन्जो अलम की बीमारी में मुब्तला कर देते हैं । जान ले ! वोह त़बीबे ह़क़ीक़ी, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है, तू सच्ची त़लब के साथ उस की बारगाह में ह़ाज़िर हो जा । बेशक मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आ़लीशान की वज्ह से तुझ से तअ़ल्लुक़ नहीं रख सकता :

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ﴿۱۸﴾ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ ﴿۱۹﴾

(پ٢٤،المؤمن:١٨-١٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और उन्हें डराओ उस नज़्दीक आने वाली आफ़त के दिन से जब दिल गलों के पास आ जाएंगे ग़म में भरे और ज़ालिमों का न कोई दोस्त न कोई सिफ़ारिशी जिस का कहा माना जाए* **अल्लाह** *जानता है चोरी छुपे की निगाह और जो कुछ सीनों में छुपा है ।*

ऐ औ़रत ! जब येह मुआ़मला है तो ख़ुद सोच ले कि भागने की जगह कहां है और राहे फ़िरार क्यूं कर मुमकिन है ?

औ़रत ने मक्तूब पढ़ कर अपने पास रख लिया । कुछ दिनों बा'द फिर उसी रास्ते पर खड़ी हो गई । जब नौजवान की नज़र उस पर पड़ी तो वोह वापस अपने घर की त़रफ़ जाने लगा । औ़रत ने पुकार कर

कहा : ''ऐ नौजवान ! वापस न जा, इस मुलाक़ात के बा'द फिर कभी हमारी मुलाक़ात न होगी, सिवाए इस के कि बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हमारी मुलाक़ात हो । फिर रोते हुवे कहने लगी : ''जिस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के दस्ते क़ुदरत में तेरे दिल के इख़्तियारात हैं, मैं उसी से सुवाल करती हूं कि तेरे बारे में मुझ पर जो मुआ़मला मुश्किल हो गया है वोह इसे आसान फ़रमा दे ।'' फिर उस ने नौजवान से आख़िरी नसीह़त की दरख़्वास्त की, बा ह़या नौजवान ने नफ़्स की ख़्वाहिशात से बचने का मश्वरा दिया और कहा : मैं तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान याद दिलाता हूं :

وَهُوَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّیْلِ وَ یَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ

(پ۷،الانعام:٦٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है और जानता है जो कुछ दिन में कमाओ ।*

येह आयते करीमा सुन कर औ़रत सर झुका कर रोने लगी कुछ देर बा'द जब सर उठा कर देखा तो नौजवान जा चुका था । वोह अपने घर चली आई और फिर इ़बादतो रियाज़त को अपना मश्ग़ला बना लिया । वोह दिन में यादे इलाही عَزَّوَجَلَّ में मसरूफ़ रहती, जब रात हो जाती तो नवाफ़िल में मश्ग़ूल हो जाती और बिल आख़िर इसी त़रह़ इ़बादतो रियाज़त करते करते इस दारे फ़ानी से रुख़्सत हो गई ।''

(عیون الحکایات ،الحکایة الرابعة والثلاثون بعد المائتین حکایة شاب عفیف،ص ۲۲۷،ملتقطاً)

हिकायत : 48 ख़ौफ़े ख़ुदा का इन्आ़म

अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के ज़मानए मुबारका में एक नौजवान बहुत मुत्तक़ी व परहेज़गार व इ़बादत गुज़ार था। यहां तक कि ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ भी उस की इ़बादत पर तअ़ज्जुब किया करते थे। वोह नौजवान नमाज़े इ़शा के बा'द अपने बूढ़े बाप की ख़िदमत करने के लिये जाया करता था। रास्ते में एक ख़ूब रू औ़रत उसे अपनी त़रफ़ बुलाती, लेकिन येह नौजवान उस पर तवज्जोह किये बिग़ैर गुज़र जाया करता था। आख़िरे कार एक दिन इस नौजवान पर शैत़ान ने ग़लबा ह़ासिल कर लिया और येह औ़रत की दा'वत पर बुराई के इरादे से उस की जानिब बढ़ा लेकिन जब दरवाज़े पर पहुंचा, तो इसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की येह आयत याद आ गई :

اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓىِٕفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَا هُمْ مُّبْصِرُوْنَ ﴿۲۰۱﴾ (پ۹،الاعراف:۲۰۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैत़ानी ख़याल की ठेस लगती है होशयार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की आंखें खुल जाती हैं।

येह आयत याद आते ही उस के दिल पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ इस क़दर ग़ालिब हुवा कि बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर गया। औ़रत घबरा कर अन्दर चली गई। जब नौजवान बहुत देर तक घर न पहुंचा तो बूढ़ा बाप तलाश करता हुवा वहां आ पहुंचा और लोगों की मदद से उठवा कर घर ले आया। होश आने पर बाप ने मुआ़मला

दरयाफ़्त किया, तो नौजवान ने पूरा वाक़िआ़ बयान कर दिया। लेकिन मज़्कूरा आयत का ज़िक्र किया तो एक मरतबा फिर उस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शदीद ख़ौफ़ ग़ालिब हुवा उस ने एक ज़ोरदार चीख़ मारी और इस के साथ ही उस का दम निकल गया। रातों रात ही उस के ग़ुस्ल व कफ़न व दफ़्न का इन्तिज़ाम कर दिया गया।

सुब्ह़ जब येह वाक़िआ़ ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में पेश किया गया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ उस के बाप के पास ता'ज़िय्यत के लिये तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : हमें रात को ही इत्तिलाअ़ क्यूं नहीं दी, हम भी जनाज़े में शरीक हो जाते ? उस ने अ़र्ज़ की : अमीरल मोमिनीन ! आप के आराम का ख़याल करते हुवे मुनासिब मा'लूम न हुवा। आप ने फ़रमाया : मुझे उस की क़ब्र पर ले चलो। वहां पहुंच कर आप ने येह आयते मुबारका पढ़ी وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿۴۶﴾ (پ۲۷، الرحمٰن:۴۶) (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने से डरे उस के लिये दो जन्नतें हैं) तो क़ब्र में से उस नौजवान ने बुलन्द आवाज़ से पुकार कर कहा : या अमीरल मोमिनीन ! बेशक मेरे रब ने मुझे दो जन्नतें अ़ता फ़रमाई हैं।

(تاریخ دمشق، ۴۵/ ۴۵۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ख़ौफ़े ख़ुदा की वज्ह से गुनाह से बाज़ रहने वाले नौजवान को कैसा शानदार इन्आ़म मिला ! और दूसरी त़रफ़ ऐसे नादान भी दुन्या में पाए जाते हैं जो ऐसी जगहों पर ख़ुद पहुंच जाते हैं जहां त़रह़ त़रह़ की बे ह़याइयों और दीगर गुनाहों के मवाक़ेअ़ मुयस्सर हों, फ़ी ज़माना इ़श्क़ के नाम पर

गुनाहों भरी मसरूफ़िय्यात और ख़ुराफ़ात में मुब्तला होने वालों की भी कमी नहीं, ऐसों को भी संभल जाना चाहिये कि अगर नफ़्स की शरारतों से दामन न बचाया और तौबा किये बिग़ैर दुन्या से रुख़्सत हो गए तो कौन उन्हें जहन्नम के हौलनाक अ़ज़ाब से बचाएगा !

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(35) औ़रतों में बेहतरीन कौन ?

रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : خَيْرُكُنَّ اَطْوَلُكُنَّ يَداً या'नी ऐ औ़रतो ! तुम सब में बेहतरीन वोह है जिस के हाथ सब से ज़ियादा त़वील (लम्बे) हों।

(مسند ابی یعلی ، حدیث ابی برزة الاسلمی ، ٦/ ٢٧٠ ، حدیث : ٧٣٩٣)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : ह़दीसे पाक में येह कलाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात से मुतअ़ल्लिक़ है और हाथों की लम्बाई से मुराद सदक़ा करना है या'नी तुम सब में बेहतरीन वोह है जो ज़ियादा सदक़ा करती है, उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا अज़्वाजे मुत़ह्हरात में सब से ज़ियादा सदक़ा किया करती थीं।

(التیسیر شرح جامع الصغیر، ١/٥٣٤)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : (उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ज़ैनब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) अपने हाथ से ख़ालें रंगती थीं इन्हें बेचती थीं और क़ीमत ख़ैरात कर देती थीं, अज़्वाजे मुत़ह्हरात का नान नफ़्क़ा हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द भी

हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ही के ज़िम्मे है क्यूंकि वोह हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के निकाह़ में हैं लिहाज़ा ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का येह मेह़नत करना अपने ख़र्च के लिये न था बल्कि राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़ैरात करने के लिये था, इन का ख़याल था कि अपनी मेह़नत का पैसा ख़ैरात करना ज़ियादा लाइक़े सवाब है। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/78)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

सब से पहले कौन मिलेगी ?

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी है : मेरे सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में बा'ज़ अज़वाज ने अ़र्ज़ की : हम सब में पहले आप से कौन मिलेगी ? फ़रमाया : तुम में लम्बे हाथ वाली, येह सुन कर उन्हों ने बांस ले कर हाथ नापना शुरूअ़ कर दिये तो सौदा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا) दराज़ हाथ निकलीं, बा'द में मा'लूम हुवा कि दराज़िये हाथ से मुराद सदक़ा-ख़ैरात थी, हम सब में पहले हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास ज़ैनब (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا) पहुंची, वोह सदक़ा-ख़ैरात करना बहुत पसन्द करती थीं। (بخاری ، کتاب الزکاۃ ،باب ای الصدقۃ افضل ، ۱/ ۴۷۹ ، حدیث : ۱۴۲۰)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त लिखते हैं : वोह बीबियां येह समझीं कि हाथ से येह जिस्म का हाथ मुराद है, जिस्म का हाथ तो ह़ज़रते सौदा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का दराज़ था, मगर सख़ावत का ह़ज़रते ज़ैनब बिन्ते जह़श رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का लम्बा था। (मिरआतुल मनाजीह़, 3/78)

सदक़ा मरीज़ों की दवा है

अल्लाह के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ज़कात के ज़रीए अपने अम्वाल की हिफ़ाज़त करो, सदक़े के ज़रीए अपने मरीज़ों की दवा करो और मुसीबत के लिये दुआ को तय्यार रखो।

(المعجم الکبیر، ۱۰/۱۲۸، حدیث: ۱۰۱۹۶)

हिकायत : 49 एक मश्क शहद अ़ता कर दिया

मन्क़ूल है कि एक औ़रत ने ह़ज़रते सय्यिदुना लैस बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَحَد से थोड़ा सा शहद मांगा तो आप ने एक मश्क शहद देने का हुक्म दिया। आप से कहा गया कि इस औ़रत का काम तो इस से कम में भी चल जाएगा। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया : इस ने अपनी ज़रूरत के मुत़ाबिक़ मांगा है और हम पर जिस क़दर ने'मते ख़ुदावन्दी है हम ने उसी के मुत़ाबिक़ इसे दिया है। आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का मा'मूल था जब तक तीन सौ साठ मिस्कीनों को सदक़ा न दे देते उस वक़्त तक गुफ़्तगू न फ़रमाते।

(احیاء علوم الدین ،کتاب ذم البخل وذم حب المال ،بیان فضیلة السخاء، ۳/ ۳۰۸)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

(36) बेहतर वोह औ़रत है जिस का महर बहुत आसानी से अदा किया जाए

रसूले नज़ीर, सिराजे मुनीर, महबूबे रब्बे क़दीर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने फ़ज़ीलत निशान है : خَيْرُهُنَّ اَيْسَرُهُنَّ صَدَاقًا या'नी औ़रतों में

सब से बेहतर वोह औ़रत है जिस का मह्र बहुत आसानी से अदा किया जाए । (المعجم الكبير للطبرانی،١١/ ٦٥،حديث :١١١٠٠)

मह्र का कम होना कामयाब निकाह़ की निशानी है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक में निकाह़ के ह़वाले से एक अहम तरीन मदनी फूल बयान किया गया है, निकाह़ और ईमान येह दो ऐसी इ़बादतें हैं जो ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام से शुरूअ़ हुईं और ता क़ियामत रहेंगी, निकाह़ बेहतरीन इ़बादत है कि इस से नस्ले इन्सानी की बक़ा है येह ही सालिह़ीन व ज़ाकिरीन व आ़बिदीन की पैदाइश का ज़रीआ़ है मगर सद करोड़ अफ़्सोस ! आज कल इस अहम इ़बादत को भी हम ने ख़ुद ही मुश्किल बना रखा है मसलन मह्र (Dower) में भारी रक़म का मुत़ालबा किया जाता है ह़ालांकि बेहतरी इस बात में पोशीदा है कि मह्र में इतनी कम रक़म रखी जाए जिसे निकाह़ करने वाला ब आसानी अदा कर सके, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْھَادِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : औ़रत के मह्र का कम होना औ़रत की बरकत और बेहतरी की निशानी है और येह कामयाब निकाह़ के लिये अच्छा शुगून है ।

(فيض القدير،٣/ ٦٦٧ ، تحت الحديث : ٤١١٧)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बड़ी बरक्त वाला निकाह़

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : बड़ी बरकत वाला निकाह़ वोह है जिस में बोझ कम हो।

(شعب الایمان ،باب الاقتصاد فی النفقة...الخ،٥/ ٢٥٤ ، حدیث : ٦٥٦٦)

मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الۡحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : जिस निकाह़ में फ़रीक़ैन का ख़र्च कम कराया जाए, मह्र भी मा'मूली हो, जहेज़ भारी न हो, कोई जानिब मक़रूज़ न हो जाए, किसी त़रफ़ से शर्ते सख़्त न हो **अल्लाह** के तवक्कुल पर लड़की दी जाए वोह निकाह़ बड़ा ही बा बरकत है ऐसी शादी ख़ाना आबादी है आज हम ह़राम रस्मों, बेहूदा रवाजों की वज्ह से शादी को ख़ाना बरबादी बल्कि ख़ानहाए बरबादी बना लेते हैं। **अल्लाह** तआ़ला इस ह़दीसे पाक पर अ़मल की तौफ़ीक़ दे।

(मिरआतुल मनाजीह, 5/11)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कम से कम मह्र कितना होना चाहिये ?

मह्र कम से कम दस 10 दिरम (दिरहम) (या'नी दो तोला साढ़े सात माशा (30.618 ग्राम) चांदी या इस की क़ीमत) है, इस से कम नहीं हो सकता, ख़्वाह सिक्का हो या वैसी ही चांदी या उस क़ीमत का कोई सामान। (बहारे शरीअ़त, 2/64)

अज़्वाजे पाक का महर कितना था ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सलमह رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं मैं ने उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم (की अज़्वाज) का महर कितना था ? फ़रमाया : आप का महर अपनी बीवियों के मुतअ़ल्लिक़ बारह ऊक़िया और नश था, फ़रमाया : क्या तुम जानते हो कि नश क्या है ? मैं ने कहा नहीं । फ़रमाया : आधा ऊक़िया, तो येह पांच सौ दिरहम हुवे ।

(مسلم، کتاب النکاح، ص۷٤٠، حدیث: ١٤٢٦)

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : येह सुवाल आ़म अज़्वाजे पाक के महर के मुतअ़ल्लिक़ था वरना बीबी उम्मे ह़बीबा (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) का महर चार हज़ार दिरहम था जो नजाशी शाहे ह़ब्शा ने अदा किया था । (मिरआतुल मनाजीह़, 5/67)

हिकायत : 50 औ़रत ने सह़ीह़ कहा

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्अ़ब رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि एक बार अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया :

لَا تَزِيْدُوْا فِيْ مُهُوْرِ النِّسَاءِ عَلٰى اَرْبَعِيْنَ اُوْقِيَّةً فَمَنْ زَادَ اَلْقَيْتُ الزِّيَادَةَ فِيْ بَيْتِ الْمَالِ

या'नी औ़रतों का ह़क़्क़े महर चालीस ऊक़िया से ज़ियादा न करो, जो ज़ियादा होगा मैं उसे बैतुल माल में डाल दूंगा । एक औ़रत

बोली : या अमीरल मोमिनीन ! येह आप क्या फ़रमा रहे हैं ह़ालांकि कुरआने पाक में तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ यूं इरशाद फ़रमाता है :

وَ اِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ؕ (پ٤،النساء:٢٠)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर तुम एक बीबी के बदले दूसरी बदलना चाहो और उसे ढेरों माल दे चुके हो तो उस में से कुछ वापस न लो ।*

येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : "اِمْرَاَةٌ اَصَابَتْ وَرَجُلٌ اَخْطَاَ" या'नी औरत ने सह़ीह़ कहा और मर्द ने ख़त़ा की ।

(كنز العمال،كتاب النكاح،٨/٢٢٦ حديث:٤٥٧٩٢،الجزء١٦)

(37) बेहतरीन आदमी वोह जो दूसरों को नफ़अ़ पहुंचाए

सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा, ताजदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुन्फ़अ़त निशान है : خَيْرُ النَّاسِ مَنْ يَّنْفَعُ النَّاسَ या'नी लोगों में से बेहतर वोह है जो लोगों को नफ़अ़ पहुंचाए ।

(كنز العمال، كتاب المواعظ والرقاق،٨/٥٣ حديث:٤٤١٤٧)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लोगों को नफ़अ़ पहुंचाने की बुन्यादी त़ौर पर दो क़िस्में हैं । (1) दीनी नफ़अ़ (2) दुन्यावी नफ़अ़ ।

(1) दीनी नफ़अ़ पहुंचाने की सूरतें

जैसे किसी को कलिमा पढ़ा कर दामने इस्लाम से वाबस्ता करना, किसी को शरई मसाइल सिखा देना, किसी को कुरआने करीम पढ़ना सिखा देना, किसी पर इनफ़िरादी कोशिश कर के उसे गुनाहों से

तौबा करवा देना वग़ैरा। नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जब हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه को यमन की तरफ़ भेजा तो इरशाद फ़रमाया : अगर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ज़रीए किसी एक शख़्स को हिदायत दे दे तो येह तुम्हारे लिये दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर है।

(الزهد لابن المبارك ،ص٤٨٤،حديث:١٣٧٥)

(2) दुन्यावी नफ़्अ़ पहुंचाने की सूरतें

दुन्यवी हवाले से नफ़्अ़ पहुंचाने की भी दो क़िस्में हैं : (1) इनफ़िरादी (2) इजतिमाई़।

इनफ़िरादी हवाले से भी नफ़्अ़ पहुंचाने के कई मवाक़ेअ़ हमारी ज़िन्दगी में आते हैं मसलन : रास्ता भूलने वाले को रास्ता बताना, रास्ते में पड़े किसी ज़ख़्मी को हस्पताल पहुंचाना, किसी मज़लूम की मदद करना, किसी सिन रसीदा (Old man) को सहारा दे कर उस की मन्ज़िल तक पहुंचा देना, नाबीना (blind) को सहारा देना, ज़रूरत मन्द की हाजत पूरी करना, ग़रीब लोगों के बच्चों को मुफ़्त पढ़ाना, अपना हुनर आगे किसी को सिखा कर नफ़्अ़ पहुंचाना, किसी की जाइज़ काम में सिफ़ारिश करना, अगर कोई मुसलमान परेशान हो उस की परेशानी दूर करना। इन सूरतों के इलावा और बहुत सूरतें हैं कि जिन में आदमी दूसरे को नफ़्अ़ पहुंचा कर अपने प्यारे प्यारे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को राज़ी कर सकता है।

जन्नत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ख़ुसूसी करम

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने बारगाहे रिसालत मआब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! जन्नत की वादियों में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के जवारे रह़मत में कौन होगा ? दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो मेरी सुन्नत को ज़िन्दा करे और मेरे परेशान उम्मती की तक्लीफ़ दूर करेगा । (تمہید الفرش فی الخصال الموجبۃ لظل العرش،ص٦١)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"रजब" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से जाइज़ सिफ़ारिश के तीन फ़ज़ाइल

(1) ज़बान का सदक़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सब से अफ़्ज़ल सदक़ा ज़बान का सदक़ा है । सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़बान का सदक़ा क्या है ? फ़रमाया : वोह सिफ़ारिश जिस से किसी क़ैदी को रिहाई दे दी जाए, किसी का ख़ून गिरने से बचा लिया जाए और कोई भलाई अपने भाई की त़रफ़ बढ़ा दी जाए और उस से कोई मुसीबत दूर कर दी जाए ।

(شعب الایمان،باب فی تعاون علی البر والتقوی،٦/١٢٤ حدیث:٧٦٨٢)

(2) सिफ़ारिश के ज़रीए नफ़्अ़

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि जब मदनी आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे अक़्दस में कोई साइल या ज़रूरत मन्द ह़ाज़िर होता तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते : (ह़ाजत रवाई में) इस की सिफ़ारिश करो अज्र पाओगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने रसूल की ज़बान पर जो चाहता है फ़ैसला करता है ।

(بخاری،کتاب الادب،باب۳۷،۴/۱۰۷حدیث:۶۰۲۷)

(3) सिफ़ारिश कर के अज्र पाओ

ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विय्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : सिफ़ारिश करो सवाब दिया जाएगा मैं किसी काम का इरादा करता हूं फिर इसे मुअख़्ख़र कर देता हूं ताकि तुम सिफ़ारिश कर के सवाब ह़ासिल करो क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : सिफ़ारिश करो अज्र दिये जाओगे । **(ابوداؤد،کتاب الادب،۴/۴۳۱حدیث:۵۱۳۲)**

इजतिमाई ह़वाले से नफ़्अ़ पहुंचाने की सूरतें

इजतिमाई ह़वाले से नफ़्अ़ पहुंचाना फ़र्दे वाह़िद को नफ़्अ़ पहुंचाने से ज़ियादा अहम है मसलन पानी का कुंवां खुदवाना, पानी की सबील लगाना, मुसाफ़िरों के लिये सराया (मुसाफ़िर ख़ाना) बनवाना, पुल बनवाना, रात के वक़्त गली में बल्ब रौशन रखना ताकि राहगीरों को सहूलत रहे, ग़रीबों के लिये लंगर का इन्तिज़ाम करना, रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ (मसलन कील, पथ्थर, हड्डी, लोहा) हटा देना येह

वोह काम हैं जिन को करने से कई मुसलमानों को फ़ाइदा पहुंचता है । जहां येह तमाम काम दीगर लोगों के लिये नफ़्अ़ बख़्श हैं वहीं नफ़्अ़ पहुंचाने वाला भी अच्छी अच्छी निय्यतें कर के सवाब कमा सकता है ।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रास्ते से तक्लीफ़देह चीज़ हटाने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मुझ पर मेरी उम्मत के आ'माल पेश किये गए तो मैं ने अच्छे आ'माल में रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ को हटाना पाया ।

(مسلم،کتاب المساجد،باب النهی عن البصاق فی المسجد،ص۲۷۹حدیث:۵۵۳)

हिकायत : 51 कांटेदार शाख़ मग़्फ़िरत का सबब बन गई

ख़ातमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक शख़्स जिस ने कभी कोई नेक अ़मल नहीं किया था रास्ते से कांटेदार शाख़ को हटा दिया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उस का येह अ़मल पसन्द आया और उस की मग़्फ़िरत फ़रमा दी ।

(ابوداؤد،کتاب الادب،باب فی اماطة الاذی عن الطریق،۴۶۲/۴)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें अपनी ज़ात से दूसरे मुसलमानों को नफ़्अ़ पहुंचाने की ज़ियादा से ज़ियादा तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ماخذ ومراجع

نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
ترجمۂ کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳٤۰ھ	مکتبۃ المدینہ
تفسیر طبری	امام ابوجعفر محمد بن جریر طبری، متوفی ۳۱۰ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱٤۲۰ھ
تفسیر کبیر	امام فخرالدین محمد بن عمر بن حسین رازی، متوفی ٦۰٦ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱٤۲۰ھ
الجامع لاحکام القرآن	ابوعبداللہ محمد بن احمد الانصاری قرطبی، متوفی ٦۷۱ھ	دارالفکر بیروت
روح البیان	علامہ شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت
تفسیر خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفی ۱۳٦۷ھ	مکتبۃ المدینہ
صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵٦ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱٤۱۹ھ
صحیح مسلم	امام ابوالحسین مسلم بن حجاج قشیری، متوفی ۲٦۱ھ	دارابن حزم، بیروت ۱٤۱۹ھ
سنن الترمذی	امام ابوعیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالفکر، بیروت ۱٤۱٤ھ
سنن ابی داؤد	امام ابوداؤد سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث، بیروت ۱٤۲۱ھ
سنن ابن ماجہ	امام ابوعبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دارالمعرفۃ، بیروت ۱٤۲۰ھ
کتاب الجامع فی آخر المصنف	امام حافظ معمر بن راشد ازدی، متوفّٰی ۱۵۳ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱٤۲۱ھ
المسند	امام احمد بن حنبل، متوفی ۲٤۱ھ	دارالفکر، بیروت ۱٤۱٤ھ
مصنف عبدالرزاق	امام ابوبکر عبدالرزاق بن ہمام بن نافع صنعانی، متوفی ۲۱۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱٤۲۱ھ
مصنف ابن ابی شیبۃ	حافظ عبداللہ بن محمد بن ابی شیبہ کوفی، متوفی ۲۳۵ھ	دارالفکر، بیروت ۱٤۱٤ھ
سنن الدارمی	امام حافظ عبداللہ بن عبدالرحمٰن دارمی، متوفی ۲۵۵ھ	دارالکتاب العربی بیروت ۱٤۰۷ھ
مسند البزار	امام ابوبکر احمد عمرو بن عبدالخالق بزار، متوفی ۲۹۲ھ	مکتبۃ العلوم والحکم، المدینۃ المنورۃ ۱٤۲٤ھ
المعجم الکبیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳٦۰ھ	داراحیاء التراث، بیروت ۱٤۲۲ھ
المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳٦۰ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱٤۲۰ھ
مستدرک	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ٤۰۵ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱٤۱۸ھ
شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بن علی بیہقی، متوفی ٤۵۸ھ	دارالکتب العلمیۃ، بیروت ۱٤۲۱ھ
عمل الیوم واللیلۃ	احمد بن محمد الدینوری المعروف بابن السنی، متوفی ۳٦٤ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت

الموسوعة لابن ابی الدنیا	حافظ امام ابوبکر عبداللہ بن محمد قُرشی، متوفی ۲۸۱ھ	مکتبۃ العصریہ، بیروت ۱۴۲۶ھ
مسند الفردوس	الحافظ شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ الدیلمی، متوفی ۵۰۹ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۸ھ
مسند اسحاق بن راھویہ	امام اسحاق بن راھویہ مروزی، متوفی ۲۳۸ھ	مکتبۃ الایمان، مدینۃ المنورۃ ۱۴۱۰ھ
الثقات لابن حبان	الحافظ محمد بن حبان، متوفی ۳۵۴ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
صفۃ الصفوۃ	امام ابوالفرج عبدالرحمٰن بن علی ابن جوزی، متوفی ۵۹۷	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۳ھ
تاریخ دمشق	علامہ علی بن حسن المعروف بابن عساکر، متوفی ۵۷۱	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۵ھ
مشکاۃ المصابیح	علامہ ولی الدین تبریزی، متوفی ۷۴۲ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۴ھ
مجمع الزوائد	حافظ نور الدین علی بن ابوبکر ہیثمی، متوفی ۸۰۷ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۲۰ھ
جامع الاحادیث	امام جلال الدین عبدالرحمٰن سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
مسند ابی یعلی	شیخ الاسلام ابویعلیٰ احمد بن علی بن مثنی موصلی، متوفی ۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
تمھید الفرش	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار عمار
الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۵ھ
کنز العمال	امام علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۱۹ھ
حلیۃ الاولیاء	امام ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی شافعی، متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۲ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۰ھ
نزہۃ القاری	علامہ مفتی محمد شریف الحق امجدی، متوفی ۱۴۲۰ھ	
مرقاۃ المفاتیح	علامہ ملا علی بن سلطان قاری، متوفی ۱۰۱۴ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ
التیسیر بشرح جامع الصغیر	علامہ محمد عبدالرءُوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	مکتبۃ الامام الشافعی، ریاض ۱۴۰۸ھ
فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرءُوف مناوی، متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ، بیروت ۱۴۲۲ھ
أشعۃ اللمعات	شیخ محقق عبدالحق محدث دہلوی، متوفی ۱۰۵۲ھ	۱۳۳۲ھ
مراۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	
السیرۃ النبویۃ لابن ہشام	ابومحمد عبدالملک بن ہشام، متوفی ۲۱۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲ھ
الشفا بتعریف حقوق المصطفیٰ	القاضی ابوالفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند ۱۴۲۳ھ
شواہد النبوۃ	مولانا عبدالرحمٰن جامی، متوفی ۸۹۸ھ	استنبول، ترکی

مکارم الاخلاق	الحافظ سلیمان بن احمد الطبر انی، متوفّٰی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ
الزواجر	احمد بن محمد بن علی بن حجر مکی ہیتمی، متوفی ۹۷۴ھ	دارالمعرفہ، بیروت ۱۴۱۹ھ
تاریخ بغداد	حافظ ابوبکر علی بن احمد خطیب بغدادی، متوفی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۷ھ
اسد الغابۃ	عزالدین ابوالحسن علی بن محمد الجزری، متوفی ۶۳۰ھ	داراحیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۱۷ھ
عیون الاخبار	ابومحمد عبداللہ بن مسلم بن قتیبۃ الدینوری، متوفی ۲۷۶ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۱۸ھ
شرح الصدور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی شافعی، متوفی ۹۱۱ھ	مرکز اہلسنت برکات رضا ہند
مکاشفۃ القلوب	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
منہاج القاصدین	ابوالفرج عبدالرحمٰن بن علی جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالتوفیق، دمشق ۱۴۳۱ھ
عیون الحکایات	ابوالفرج عبدالرحمٰن بن علی جوزی، متوفی ۵۹۷ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۴ھ
کتاب الزہد	امام عبداللہ بن مبارک مروزی، متوفی ۱۸۱ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
قوت القلوب	الشیخ محمد بن علی المعروف بابی طالب مکی، متوفی ۳۸۶ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۶ھ
احیاء العلوم	امام ابوحامد محمد بن محمد غزالی شافعی، متوفی ۵۰۵ھ	دارصادر بیروت
اتحاف السادۃ المتقین	سید محمد بن محمد حسینی زبیدی، متوفی ۱۲۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ، بیروت
الروض الفائق	شیخ شعیب حریفیش، متوفی ۸۱۰ھ	
المستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد ابی الفتح، متوفی ۸۵۰ھ	دارالفکر، بیروت ۱۴۱۹ھ
الحدیقۃ الندیۃ	سیدی عبدالغنی نابلسی حنفی، متوفی ۱۱۴۱ھ	
اعتقاد اہل السنۃ والجماعۃ	امام شیخ ابوالقاسم ہبۃ اللہ بن حسن طبری لالکائی، متوفی ۴۱۸ھ	دارالبصیرۃ، اسکندریہ
المجموع شرح المہذب	حافظ محی الدین ابوذکریا یحیی بن شرف نووی، متوفی ۶۷۶ھ	دارالفکر بیروت
فتاوی رضویہ (مخرجہ)	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن، ۱۴۱۸ھ
بہار شریعت	مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
معین الارواح	خادم حسن زبیری	
سوانح کربلا	صدر الافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
اسلامی زندگی	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	مکتبۃ المدینہ

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
फ़िरिश्तों की इमामत	1	ह़लाल और ह़राम कमाई का अन्जाम	15
सब से बेहतर वोह जो खाना खिलाए	2	तौबा कर लेने वाले बेहतर हैं	16
जन्नतियों का काम	2	गुनाह से तौबा करने वाले की फ़ज़ीलत	16
कभी गोश्त न चखा	3	मुआ़फ़ी मांगने का त़रीक़ा	17
हर रात 80 अफ़राद को खाना खिलाते	3	दिल गुनाह करना भूल जाए	17
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर खाना खिलाइये	4	कल नहीं आज बल्कि अभी तौबा कर लीजिये	18
जन्नती बालाख़ाना	4	लम्बी उम्मीदों की वज्ह	19
रोज़ाना हमारे हां नाश्ता करें	5	तौबा करने वाले सब से बेहतरीन लोग हैं	21
मग़फ़िरत का सबब	5	तौबा खुद तौबा की मोह़ताज है	21
खाना भी खिलाया, कपड़े भी पहनाए	6	सच्ची तौबा अल्लाह तआ़ला की ने'मत है	21
जहन्नम से दूर कर देगा	7	तेरी तौबा क़बूल कर लेंगे	22
फ़तवा भी देते हैं खाना भी खिलाते हैं	7	बेहतरीन शख़्स वोह है जो क़ुरआन सीखे और	
जन्नत की खुश ख़बरी	8	दूसरों को सिखाए	23
तीन अफ़राद की बख़्शिश का सामान	8	फ़ुज़ूल बातों के दिलदादह उठ गए	24
रोटी खिलाने का सवाब गुनाहों पर		क़ुरआने करीम सीखें और सिखाएं	25
ग़ालिब आ गया	8	क़ुरआन सीखने का शौक़ रखने वाले को	
कफ़न की वापसी	9	निगरान बना दिया	25
फ़क़ीर को खाना खिला दिया	10	जो सीख सकता हो वोह ज़रूर सीखे	26
सलाम भी एक तोह़फ़ा है	10	फ़िरिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं	26
जवाबे सलाम के मदनी फूल	11	मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग	26
तौह़ीदो रिसालत की गवाही देने वाले		क़ुरआन उठाने वालों से कौन मुराद हैं?	27
बेहतरीन लोग हैं	12	लोगों में सब से अच्छा कौन है?	27
कामिल मोमिन की एक निशानी	13	येह खुश्बूएं कैसी हैं?	28
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से बख़्शिश का सुवाल करो	13	शब बेदारी का फ़ाइदा	28
तुम्हारी आंख क्यूं सूजी हुई है?	13	अगर क़बूलिय्यते दुआ़ चाहते हो तो ईमान	
तुम में से बेहतर वोह है जो दूसरों		कामिल करो	28
पर बोझ न बने	14	जन्नती महल्लात	29
दुन्या और आख़िरत दोनों कमाइये	15	सब से अफ़ज़ल नमाज़	30

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
तुम सब में बेहतर वोह है जो लोगों से कुछ क़बूल न करे	31	अपनी सफ़ें सीधी रखो	46
अल्लाह तआ़ला का पसन्दीदा बन्दा	31	शैत़ान सफ़ों में घुस जाता है	46
जिस मुसलमान में तीन सिफ़तें हों वोह खुदा तआ़ला को बड़ा प्यारा है	32	बेहतर वोह हैं जिन को देर से गुस्सा आए और जल्द चला जाए	48
अल्लाह तआ़ला की मह़ब्बत कैसे ह़ासिल की जाए	33	दिल को ईमान से भर देगा	49
तोह़फ़ा क़बूल न किया	33	गुस्सा पीने का सवाब	49
ख़ुरासानी तह़ाइफ़ वापस कर दिये	34	गुस्से का घूंट कड़वा ज़रूर है मगर इस का फल बहुत मीठा है	49
तुम सब में बेहतरीन वोह हैं जो पाकीज़ा दिल सच्ची ज़बान वाले हैं	34	थप्पड़ मुआ़फ़ किया मगर कब ?	50
नापाक दिल कुर्बे इलाही के क़ाबिल नहीं	35	शैत़ान की गैंद	51
क़बूलिय्यते दुआ़ का राज़	36	गुस्से में गाड़ी तोड़ डाली	52
बेहतरीन शख़्स वोह है जिस का अख़्लाक़ अच्छा है	36	गुस्सा निकालने का क्लब	52
बेहतरीन अख़्लाक़ वाला कौन ?	36	गुस्से के वक़्त की दुआ़	53
उ़म्रें दराज़ और अख़्लाक़ अच्छे होना बेहतरी की निशानी है	37	गुस्से की आ़दत निकालने के दो वज़ीफ़े	53
लम्बी उ़म्र और जन्नत	37	सब से बेहतरीन दोस्त	54
लम्बी उ़म्र और रिज़्क़ में कुशादगी पाने का मदनी नुस्ख़ा	38	ख़ुशी दाख़िल करने का निराला अन्दाज़	54
इस्लाम में बेहतरीन कौन ?	38	दोस्ती किस से करनी चाहिये ?	55
अफ़्ज़लिय्यत की चार सूरतें	38	आदमी अपने दोस्त के दीन पर होता है	56
मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग उ़लमा हैं	39	फ़ासिक़ की सोह़बत से बचो	58
उ़लमा सितारों की मिस्ल हैं	40	मेरे दोस्त को मुझ से मांगना पड़ा	58
इ़ल्म का शो'बा इख़्तियार किया	40	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा मह़बूब	58
जाहिल भी आ़लिम कहे जाने पर खुश होता है	41	येही ईमान है	59
बेहतर वोह शख़्स है जो अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ बुलाए	41	सब से बेहतरीन पड़ोसी	59
नेकी की दा'वत और सायए अ़र्श	42	इस्लाम में पड़ोसी का ख़याल	60
नेकी की ख़ामोश दा'वत	42	पड़ोसी के हुक़ूक़	61
नेकी की दा'वत और रह़मते खुदावन्दी	43	जन्नती और जहन्नमी औ़रत	61
इस्लाह़ का मह़ब्बत भरा मिसाली अन्दाज़	43	पड़ोसी की दीवार की मिट्टी	62
बेहतर वोह है जो नमाज़ में नर्म कन्धे वाला हो	45	ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ और पड़ोसियों के हुक़ूक़	62
		पड़ोस के चालीस घरों पर ख़र्च किया करते	62

उनवान	सफ़हा	उनवान	सफ़हा
बेहतरीन शख़्स वोह है जो क़र्ज़ अच्छी त़रह़ अदा करे	63	हुकूमत न मांगो	77
खुश दिली से क़र्ज़ अदा करें	63	गवर्नर बनने से इन्कार कर दिया	78
क़र्ज़ अच्छी निय्यत से लीजिये	63	बेहतर वोह जिन को देख कर खुदा याद आए	79
नेक आदमी का क़र्ज़ अदा हो ही जाता है	64	तुम सब में बेहतरीन वोह है जो दुन्या से बे रग़बती रखने वाला है	80
क़र्ज़ वापस करने की दिलचस्प ह़िकायत	65	दुन्या से बे रग़बती किसे कहते हैं ?	80
तंगदस्त मक़्रूज़ को मोहलत देने की फ़ज़ीलत	67	ह़लाल को ह़राम ठहरा लेना बे रग़बती नहीं है	81
मकान की सीढ़ी टूट गई !	67	दुन्या से बे रग़बती के फ़ज़ाइल	82
दुन्या का बेहतरीन सामान नेक बीबी है	68	दुन्या से बे रग़बती अपनाने के बारे में इनफ़िरादी कोशिश	82
नेक बीवी मर्द को नेक बना देती है	68	दुन्या से बे रग़बती दिलो जान को राह़त बख़्शाती है	82
माल जम्अ़ करने से बेहतर है	68	बुराई और भलाई के घरों की चाबियां	83
नेक बीवी तोह़फ़ा है	69	दुन्या की पैदाइश का मक़्सद	83
नेक औ़रत सोने से ज़ियादा नफ़्अ़ बख़्श है	69	काश ! येह प्याला मुझे न मिला होता	83
बेवुकूफ़ औ़रत शोहर को बरबाद कर देती है	70	निगरान का नाम ह़ाजत मन्दों की फ़ेहरिस्त में	84
अच्छी और बुरी औ़रत की मिसाल	70	मरने के बा'द मेरी क़मीस सदक़ा कर देना	85
बेहतरीन वोह है जो अपनी बीवियों के लिये बेहतरीन हो	71	एक चादर के ह़िसाब का डर !	85
कोई मोमिन अपनी बीवी को दुश्मन न जाने	71	बुढ़ापे में ज़ियादा ह़िर्स का सबब	86
बे ऐ़ब बीवी मिलना ना मुमकिन है	71	बेहतरीन आदमी वोह है जिस के शर से लोग महफ़ूज़ रहें	86
इन्सान के चार बाप होते हैं	72	जिस के शर से लोग महफ़ूज़ रहें वोह जन्नत में दाख़िल होगा	87
बीवी के साथ ह़ुस्ने सुलूक	72	नाकाम शख़्स	87
दो बीवियों में इन्साफ़ की उ़म्दा मिसाल	73	मदनी फूल	88
दुन्या वाली ज़ौ़जा जन्नत में भी ज़ौ़जा कैसे बने	73	मैं शराब पिया करता था	88
बेहतर वोह है जो अपने घर वालों के साथ अच्छा हो	74	बेहतरीन नौजवान कौन ?	90
तुम सब में बेहतर वोह है जो अपने बीवी बच्चों के साथ अच्छा हो	75	बीस सालह आजिज़ी पसन्द नौजवान	90
कामिल ईमान वाला है	75	बुज़ुर्गों के अन्दाज़ अपनाने की फ़ज़ीलत	91
जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा	75	इ़बादत में जवानी गुज़ारने वाले पर अ़र्श का साया	92
बेटी पर माहे रिसालत ﷺ की शफ़्क़त	76	तुम्हारे बेहतरीन लोग वोह हैं जो वा'दा पूरा करते हैं	93
बेहतरीन शख़्स वोह जो ह़ाकिम बनने से सख़्त मुतनफ़्फ़िर हो	76		

उनवान	सफ़ह	उनवान	सफ़ह
अपने वा'दे पूरे करो	94	बादशाह के सामने हक़ गोई	112
फ़र्ज़ क़बूल होगा न नफ़्ल	95	बेहतरीन लोग वोह हैं जो पाक दामन रहते हैं	115
तुम ने तो मुझे मशक़्क़त में डाल दिया	96	बा हया नौजवान	116
वा'दे के सच्चे पैग़म्बर	97	ख़ौफ़े खुदा का इन्आ़म	120
दस हज़ार देने का वा'दा पूरा किया	97	औ़रतों में बेहतरीन कौन ?	122
वा'दा ख़िलाफ़ी क्या है ?	98	सब से पहले कौन मिलेगी ?	123
वा'दा पूरा करने की निय्यत न हो मगर		सदक़ा मरीज़ों की दवा है	124
इत्तिफ़ाक़न पूरा हो जाए तो	98	एक मशक शहद अ़ता कर दिया	124
वा'दे के बारे में दो मदनी फूल	99	बेहतरीन औ़रत	124
बेहतरीन लोगों की निशानियां	100	महर का कम होना कामयाब निकाह़ की	
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ख़ौफ़ और उम्मीद कैसी होनी चाहिये ?	100	निशानी है	125
फ़रूक़े आ'ज़म की उम्मीद और ख़ौफ़	100	बड़ी बरकत वाला निकाह़	126
बारगाहे इलाही तक रसाई की दो ख़स्लतें	101	कम से कम महर कितना होना चाहिये	126
मख्खी के सर बराबर आंसू की अहम्मिय्यत	101	अज़्वाजे पाक का महर कितना था ?	127
ख़ौफ़े खुदा के सबब बीमार दिखाई देते	102	औ़रत ने सहीह़ कहा	127
बेहतरीन उम्मतियों की ता'दाद	102	बेहतरीन आदमी वोह जो दूसरों को नफ़्अ़	
अब्दालों के चार औसाफ़	103	पहुंचाए	128
अब्दाल किस वज्ह से जन्नत में दाख़िल		दीनी नफ़्अ़ पहुंचाने की सूरतें	128
होंगे ?	103	दुन्यावी नफ़्अ़ पहुंचाने की सूरतें	129
अब्दाल कहां रहते हैं ?	103	जन्नत में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का खुसूसी करम	130
राहिबों का क़बूले इस्लाम	104	जाइज़ सिफ़ारिश के तीन फ़ज़ाइल	130
तुम सब में बेहतरीन मेरे सह़ाबा हैं	105	ज़बान का सदक़ा	130
सह़ाबए किराम का निहायत अदब कीजिये	106	सिफ़ारिश के ज़रीए नफ़्अ़	131
सह़ाबए किराम को ईज़ा देने वाले की सज़ा	107	सिफ़ारिश कर के अज्र पाओ	131
गुस्ताख़ का अन्जाम	107	इजतिमाई नफ़्अ़ पहुंचाने की सूरतें	132
सह़ाबए किराम के गुस्ताख़ों के साथ बरताव	108	रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ हटाने की	
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का सब से बेहतरीन बन्दा	109	फ़ज़ीलत	132
गुदड़ी में ला'ल	110	कांटेदार शाख़ मग़्फ़िरत का सबब बन गई	132
आग को क़सम दी तो बुझ गई	110	माख़ज़ो मराजेअ़	133
गधे की वापसी	111	फ़ेहरिस्त	136
मुस्तजाबुल क़सम सह़ाबी	111	याददाश्त	140

याद्दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।)

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

याद्दाश्त

(दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।)

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिए

हर जुमेरात बाद नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दावते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतेमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिए अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइए ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिए मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना जाइज़ा लेते हुवे नेक आमाल का रिसाला पुर कर के हर महीने की पेहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मामूल बना लीजिए।

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह़ के लिए "नेक आमाल" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिए "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل